

महालक्ष्मी विशेषांक

अक्टूबर : 97

Not for Sale
विक्री के लिए नहीं
पूल्य : 18/-

महालक्ष्मी विशेषांक

विज्ञान



ॐ

मध्यावधि चतुर्व ठाठो ता रङा हौ।



COLLECTION OF VARIOUS

- > HINDUISM SCRIPTURES
- > HINDU COMICS
- > AYURVEDA
- > MAGZINES

FIND ALL AT [HTTPS://DSC.GG/DHARMA](https://dsc.gg/dharma)

Made with
By

Avinash/Shashi

Icreator of
hinduism
server

आपनी भट्टा! अत्यधीय यज्ञ विषयक

मानव जीवन को भर्तीत्यनुयायी उभारि, प्रगति और पारसोंपर्यंगु विद्याओं से समर्पित मार्गिक पत्रिका।



द्वारा द्वारा द्वारा द्वारा द्वारा

वर्ष 12

अंक 10

अक्टूबर 1997

पृष्ठ 44



सद्गुरुदेव

गुरु: परम दैवतम् 3

दीक्षा

महालक्ष्मी दीक्षा 7
पराम्बा दीक्षा 36

स्तरम्

एक दृष्टि में 21
मैं समय हूँ 35
साधक साक्षी हैं 40
कालचक्र 47
पाठकों के पत्र 58
इस यास में विशेष 59
नक्षत्रों की वाणी 70
बरहाहिमिहर ने कहा 76

तथ्य

जिज्ञासु व्यक्तियों के लिए 16



साधना

घनदा यक्षिणी प्रयोग 13

क्ष्या आप साधना 20

गर्भ रक्षा प्रयोग 22

किसी भी साधना में 27

माने या न माने 42

बगलामुखी यंत्र 44

काल धैरच साधना 63

हेरम्ब साधना 66

साधना सफलता 68

पूजन

दीपावली पूजन 9



विशेष

लक्ष्मी सूक्त 49
मानस मंत्र 73
भुवनेश्वरी महालक्ष्मी यंत्र 77
हाँ! मध्यावधि चुनाव 81

विवेचना

काहे होत अधीर 18
सम्भव ही नहीं है 25

त्योतिष्ठ

ज्योतिष और रोग 60

रिपोर्ट

गुरु पूर्णिमा 30

कथ्य

हाँ! मैंने प्रेत देखा है 54

प्रश्न-समावेश

श्री चन्द्रकिशोर श्रीमाली

वार्षिकावधि अवगत

पत्र सम्पादक

श्री कैलाश चन्द्र श्रीमाली

सामग्रदाता, भण्डार

डॉ. प्रद्युम्न कुमार अनंती,

श्री गणेश वट्टणी, श्री गुरु सेवक

श्री वसन्त पाटिल, श्री अनिल जसी

श्री प्रसीद जोशी, श्री रोजम अम्ब

श्री एस. सी. कालरा,

श्री एस. आर. वाणश्व

प्रियोगी सलाहकार

श्री अरविंद श्रीमाली

प्रियोगी सलाहकार

श्रीमती बनक पाण्डेर्य,

श्री द्वारज कुमार लागोल,

मुश्शी विजय लक्ष्मी,

श्री जय शिंह, श्री मनोज कुमार

* * *

** सम्पर्क **

प्रियोगी

३५६ शोहार एन्डलेस,
पीलगुड़ी, दिल्ली-११००३४,
फोन: ०११-७१८२२४४,
फैक्स: ०११-७१९६७००

मंत्र-तंत्र, सम्पादक

३० श्रीमाली नगर,
हाईकोर्ट कॉलोनी,
जोधपुर-३४२००१ (राज.)
फोन: ०२९१-३२२००९,
फैक्स: ०२९१-३२०२०

मूल्य / भारत में

एक प्रति : १८/-
वार्षिक : १९५/-

प्रकाशक एवं स्वामित्व

श्री कैलाश चन्द्र श्रीमाली

द्वारा

विभा प्रिलिकेशन्स

प्रा. लिमिटेड

D-160 B, सेक्टर VII,

नोएडा से मुद्रित

तथा

मंत्र-तंत्र-यंत्र विज्ञान,

हाईकोर्ट कॉलोनी,

जोधपुर से प्रकाशित।

नियम

पत्रिका में प्रकाशित सभी चर्चाओं का अधिकार पत्रिका का है। इस 'भ्रम-नियंत्र-यत्र विज्ञान' पत्रिका में प्रकाशित लेखों से सम्प्रदान का महान दोनों अविवाय नहीं है। इक्षु-फूलक वरों वाले पत्रिका में प्रकाशित युगी सामग्री भी गलत रणनी है। किसी नाम, स्थान या घटना का किसी से कोई सम्बन्ध नहीं है, यांत्र दाता पट्टन याम या तथ्य मिल जाए तो उसे ऐसा समझ। पत्रिका के लेखक धुमकता का साथ-सेव होते हैं। अतः उनके पते के यांत्र में कृष्ण भी अस्त जानकारी देना सम्भव नहीं होगा। पत्रिका में प्रकाशित नियमों में लेखक या सामग्री के बारे में वाद-विवाद वा दार्क भावन नहीं लगता और वहाँ इसके लिए लेखक, प्रकाशक, मुद्रक या सम्प्रदान किसी विषयवासी को किसी भी प्रकार का पार्श्वश्रमिक नहीं दिया जाता। विसी भी प्रकार की वाद-विवाद ने जोधपुर नगरालय ही गम्भीर होगा। पत्रिका में प्रकाशित किसी भी सामग्री को संख्यक या प्रातिक कहीं से भी प्राप्त कर सकत है। पत्रिका कार्यालय से प्राप्तवाने गर उस प्रपती तरफ से प्राप्तिशील और यही सामग्री शब्दवाच यंत्र भजते हैं, पर किफ़ियत भी उसके बाद में। असली या नकली के बारे में अत्यक्त उभाव होने या न होने के बादें में तभी विशेषता नहीं होती। प्रातिक वापरे विज्ञान पर ही ऐसी सामग्री पत्रिका कार्यालय से मिलती है। सामग्री के मूल भागके या वाद-विवाद यांत्र नहीं होगा। पत्रिका का वार्तिक शुल्क वर्तमान में 195/- है, पर यदि विसी विशेष एवं अपरिहार्य कारणों से पत्रिका को वैनासिक या बंद करना पड़े, तो जिसी भी त्रैक आवश्यक प्राप्त हो चुके हैं, तभी में खालीक सदस्यता अनुच्छेदी तर्फ़ी तीन चर्च या अधिकारीय सदस्यता की गूण समझने, इसमें किसी भी प्रकार की वापरीय या अलोचना किसी भी रूप में स्वीकार नहीं होती। पत्रिका के प्रकाशन अवधि तक ही आवश्यक सदस्यता मान्य है, यदि विसी आरणवास पत्रिका का प्रकाशन बंद करना पड़े, तो अवौद्यन सदस्यता भी उसी दिन पूरी यांत्रों वाले गयी। पत्रिका ने प्रकाशित किसी भी साधना में सकालता-असकालता, रामि-लाभ को विशेषणों साथक की विवरण की होती तथा साथक कोई भी रेयरी उपस्थिति, जप या यांत्र प्रयोग वा करने, जो निकल, सामाजिक एवं कानूनी विषयों को विवरण हो। पत्रिका में प्रकाशित लेखों के लेखक जोगी या सन्यासी लेखकों के विचार, माज होते हैं, उन पर धारण का आवश्यक पत्रिका के कंपनियों की तरफ से होता है। गाड़ी की यांत्रों पर इस अंक में पत्रिका के प्रियों लेखकों का भी जोगी का रूप सम्बलेश किया जाता है, जिससे कि नवोन पाठक लाभ उठ सके। साथक या लेखक अपने प्राप्तिशील अनुभावों के वापर पर जो भाव, तंत्र या योग (भले ही वे शास्त्रीय व्याख्या के इतर ही) अतिरि हैं, वे ही दे देते हैं। अतः इस सम्बन्ध में आलोचना करना अवधि है। आलोचना पूछ पर या अन्वर जो भी प्रोटो प्रकाशित होती है, उस सम्बन्ध में सारी जिस्मेवारी फोटो ऐजेन्स जाले फोटोग्राफर अथवा आर्टिस्ट की होती। दोका प्राप्त करने का तात्पर्य यह नहीं है, कि साथक उपसे सम्बन्धित साथ तुरन्त यांत्र कर सकें, यह ही जोगी और सकल प्रविधि है। अतः पूरी श्रद्धा और विश्वास के साथ ही दोका प्राप्त करें। इस सम्बन्ध में किसी प्रकाश की जोई भी अपरिहार्य या अलोचना स्थीकार्य नहीं होगी। युलैन या पत्रिका पत्रिकार इस सम्बन्ध में किसी भी प्रकाश को विषयवासी बतन नहीं करें।

प्रार्थना

श्री बीजरूपमध्यरां जगदैक हेतु,
ऐश्वर्यभावभरित निखिल नमामि।
मं गणपति परिनमन सुमुखों कदन्त-
लाभं शुभं ननु करोतु च दीपमाल॥॥

'श्री' बीज पिण्डका मूल स्वरूप है, सप्तार की एक मात्र जलमी, मणवती लकड़ी को एवं अगलमूर्ति एक दण्ड 'मं' बीज युक्त गणपति को तथा समस्त ऐश्वर्य से पूर्ण भगवान निखिल को भावपूर्ण नमन करता है। ये शीबों महाशक्ति इस श्रीप माला को शुभ तथा लाभ से अविक करते।

चित्तं रवेत्य मेधावी

बौद्ध धर्म, जिसकी दृष्टि-पत्रिका केवल भगवत्पर्व में ही नहीं, एक काल में लगभग आधे विश्व पर फहराइ और जो आज भी जीन, जापन व दक्षिण यूके के देशों की जीवन शैली है, उसका यही केवल उसके दर्शन में ही नहीं, बरन् उन व्यक्तिलों की जीवन शैली में भी दिखाई जान्होने बौद्ध धर्म के प्रचार-प्रसार में आपने जीवन को उत्तर्ण कर दिया। ऐसे ही व्यक्तिलों में भगवान बुद्ध के शिष्य अनन्द का नाम आगा है।

एक अवसरा का दृश्य है, कि राज उमेन्द्रजित ने विहार (बौद्ध संघ) के लिए चांच सी रेशमी चादरें बैट की, जिन्हें अनन्द ने श्वीकार जा दिया। इसका ज्ञान होने पर भगवान बुद्ध ने अनन्द से कपाट जाना चाहा भगवान बुद्ध ने पूछा - "इन नहीं चादरों का क्या करने आनन्द ?"

"इन्हें भिजुओं को बांध दूना भन्ते !" अनन्द का उत्तर था।

"किन्तु पुरानी चादरों का ज्ञान करने आनन्द ?"

"उनसे भिजुओं के चौकर / पहनने के चर्च / बाताऊना भन्ते !"

"पुराने चौबरों का व्याप करने आनन्द ?"

"उनसे परदे बनाना दूना भन्ते !"

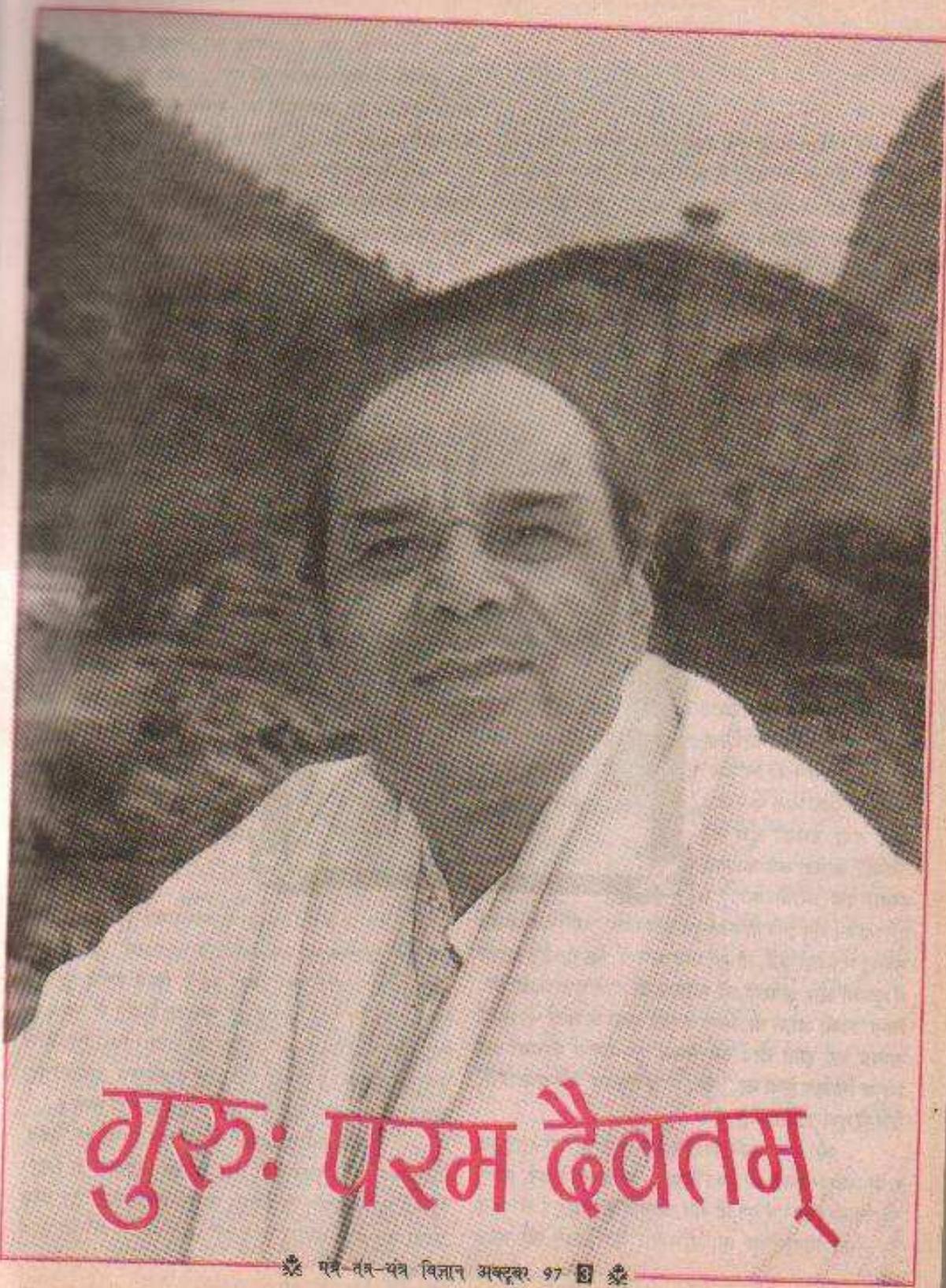
"किन्तु पुराने परदों का व्याप उण्योग होगा ?"

"उनसे जाइन बन जावेंगे भन्ते !"

"और पुराने जाइनों का व्याप उण्योग होगा ?"

"उन्हें मिट्टी के साथ कट-नीस कर दीवारों पर लेप में प्रयोग ले रहा भन्ते !"

इनी सूक्ष्म दृष्टि रखने वाले पुरुषों के करण ही बौद्ध धर्म ने इस देश से वर्णाश्रम व्यवस्था को समूल उखाड़ फेंका था और जन-जन के हृदय में अपना स्थान बना लिया था। भगवान बुद्ध ने जिस संघर्ष और शीलता का उद्देश दिया था, उसी के जीवित प्रतीक बगड़े की वेष्या की दी उनके शिष्यों ने। इसी कारणवश आज प्रायः तीन हजार चर्च व्यक्तित हो जाने अे बाद भी बौद्ध धर्म एक सुदृढ़ स्त्राय और धर्मि स्त्रिय है, जबकि इस अधिक में नहीं अभिन्न सम्प्रदाय बने और मिट गए। यही संघ निर्माण की मूल जैवन होती है। चादरों और उपरोक्त घटना तो एक दृष्टांत पर है....



गुरुः परम दैवतम्

३६८ प्रभ-तत्त्व-यत्न विज्ञान अस्कूल १७

Gरीत के उपर्युक्त श्लोक के अनुसार गुरु ही ब्रह्म है, गुरु ही विष्णु है और गुरु ही शिव है, इनसे भी बद्धकर गुरु ही साक्षात् परब्रह्म है। यदि हम अपने देश के प्राचीन इतिहास को देखें, तो हमें पता चलेगा, कि हमारा देश सारे संसार में 'सोने की चिंडिया' के नाम से जाना जाता था, इसी देश में दूध की नदियाँ भी बहती थीं। कहने का तात्पर्य यह, कि जमगत् देश धन-धान्य एवं सूख-समुद्र से परिपूर्ण था। किन्तु इसके विपरीत आज वही देश कराह रहा है, धृष्टदाचार और चोटालों का बोलावाला है, जिदेशी ऋण के भार तले हम दबते-पिसते चले जा रहे हैं। दूध तो छोड़िये, जनता विजली-पानी के लिए भी तरस रही है।

अखिल, आज के भास्त और प्राचीन भारत में इतना अन्तर कैसे? अखिल कहां गया बह देश, जो 'सोने की चिंडिया' के नाम से जाना जाता था? कैसे सूख गयीं उसकी दूध की नदियाँ? अखिल बता कराए हैं हमारी इस गरीबी का, इस दरिद्रता का और इतने विषमतापूर्ण जीवन का? यदि हम इसकी गहराई में प्रवेश करें, तो हमें पता चलेगा, कि प्राचीन भारत में गुरुओं और ऋषियों की प्रतिष्ठा थी, उन्हें पूजा जाता था, जिन उनकी आज्ञा के, जिनकी कृपा के कोई भी कार्य सम्पूर्ण नहीं होता था। उस समय गुरु-शिष्य परम्परा का स्वस्थ निर्वहन होता था, 'गुरु: परम दैवतम्' की समाज में, देश में पूर्ण अवधारणा थी।

और आज हमने, हमारे समाज ने, हमारे देश ने उपर्युक्त सभी अवधारणाओं को भुला दिया है। हमने अपने धर्म, अपनी पुरातन संस्कृति एवं गुरुओं और ऋषियों को विस्मृत कर दिया है। हमने मानसरोवर का परिवाण कर अपने को महज

कंकड़-पत्थरों के बीच ही सीमित कर लिया है, हमें गुरुओं और ऋषियों से कोई सरोकार नहीं रहा... और यही सर्व प्रमुख कारण है हमारे इस अध्ययन का, हमारी इस दर्शनीय स्थिति का। इसीलिए हमें बूंद-बूंद पानी के लिए तरसना पड़ रहा है।

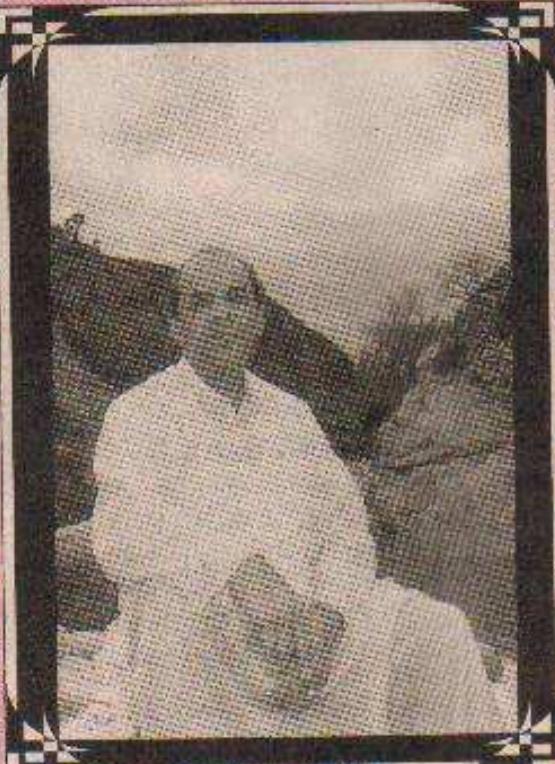
यदि वास्तव में हम इस विषम परिस्थिति से उबरना चाहते हैं, तो हमें गुरुओं और ऋषियों के चरणों को पकड़ना होगा, उनके चरणों में साष्टांग प्रणिपात होना होगा, क्योंकि गुरु की शरण के बिना कल्याण सम्भव नहीं है। हमें 'गुरु:

परम दैवतम्' भावना की पुनर्स्थापना करनी होगी, हमें 'सदगुरु' की शरण लेनी होगी। अर्थात् भावना में विश्व के सर्वश्रेष्ठ ज्योतिषी, आशुर्येदज्ज, योगी, दार्शनिक और प्राचीन भारतीय विद्याओं के मिल आचार्य पूज्य गुरुदेव डॉ० नारायण दत्त श्रीमाली जी ऐसे ही प्रकाश पुज्ज हैं, जो धार्णी मात्र का कल्याण करने के लिए, उसे उसके मूल रूप का बोध करने के लिए तथा इस आर्थिकता को ही नहीं, सम्पूर्ण विश्व को ज्ञान और चेतना से आप्लाईत करने के लिए इस धरा पर अवतरित हुए हैं...।'

(मन्त्र-तंत्र-यत्र विज्ञान
जनवरी 1997)

वास्तव में हम विनाश के उस कगार पर खड़े हैं, जहां जहां सी असावधानी हमें कहां ले जा पटके, पता नहीं। जगह-जगह बालटी सुंगे बिछी हुई है, सिर्फ पलीते में आग लगनी शेष है। ऐसी भीषण एवं भयावह स्थिति से बचने के लिए एक ही उपाय है - 'सदगुरु' की शरण। जिन गुरु-कृपा प्राप्त किये कुछ भी सम्भव नहीं। हमें आलोचना-प्रत्यालोचना छोड़नी होगी। कहीं चांद पर घूकने से चांद गंदा होता है?

गुरु अवतरित ही होते हैं रसातल में जा रहे विश्व, देश, समाज को उबारने के लिए, उसके कल्याण के लिए। शिष्यों का कल्याण ही उनका प्रमुख लक्ष्य होता है। जिस प्रकार वृक्ष स्वयं अपना फल नहीं खाते और न ही नदी स्वयं



अनन्त जल भीती है, उसी
उक्त नदियों भी संसार को
हमें कुछ न कुछ देते ही
जाते हैं, उससे कुछ भी लेते
नहीं। इसीलिए सदगुरु को
'गुरुः परम देवतम्' कहा
जाता है।

**कुरु कर्मणु नहि कल धीं,
नदीं न सर्वै नीर।**
परमार्थ के कारने,
सदगुर धरा शरीर॥

भैरा, सूर, तुलसी
एवं कबीर पढ़े-लिखे तो थे
नहीं, किन्तु उन्होंने ऐसे सशक्त
गुरु एवं साक्षात् परब्रह्म का हाथ
चकड़ा और उस मरी में, उस
खुमारी में उनके मुँह से जो कुछ
भी निकला, वह धर्म एवं
साहित्य की अनमोल धरोहर
बन गया। आज भी बड़े-बड़े

बिट्ठान् उनके ऊपर
शोध-कार्य कर रहे हैं और
कितने ही डीलिट० एवं
पी०एच०डी० को उपाधि
प्राप्त कर चुके हैं। यह सब
उन्होंने '**गुरुः परम देवतम्**'
की ही कृपा का सुफल है।

'सदगुर' को
पाने के लिए हमें
'एकलत्व' बनना होगा,

उसी की ही भाँति हमें पूर्ण श्रद्धा, आस्था, विश्वास के साथ
सदगुरु के चरणों में आत्म समर्पित होना होगा। एकलत्व की
निष्ठा, उसकी गुरु-भक्ति देखिए — गुरु से तिरस्कृत होने
पर भी गुरु-प्रतिमा बना कर, उसके सामने बैठ कर उसने
धनुर्विद्या सीखी, सीखी ही नहीं, उसमें महारत भी हासिल
की और फिर गुरु-दक्षिणा में अपने दाएं हाथ का अंगूदू
काट कर गुरु-चरणों में समर्पित कर दिया। इस प्रकार उसने
हमेशा-हमेशा के लिए गुरु-शिष्यों के बीच अपने को अमर
कर दिया। यही समर्पण, यही प्रेम, यही उत्सर्ग आज पूज्य



गुरु जीवन का सर्वस्व है, पूर्णत्व का आधार हैं,
श्रेष्ठता का प्रतिरूप हैं, आकाश से भी अनन्त
और पृथ्वी से भी विशाल उनकी मणिमा है और जिसके
जीवन में गुरु स्थापित हो जाते हैं, जिसके रक्त के
कण-कण में गुरु की प्रतिस्थापना हो जाती है,
उसका जीवन थन्य हो जाता है, उसे जीवन में पूर्णता
और सफलता प्राप्त हो जाती है और किसी प्रकार की
व्यूहता, तुल्छता नहीं रह पाती . . .

आपके सभी स्वरूपों को नतमस्तक होता हुआ प्रणाम करता
हूं, कि आप हमें जीवन का सौभाग्य, जीवन का आनन्द,
जीवन को पूर्णता दें।

(गुरु गीता, श्लोक 59)

'किली न किलीं जीवन में कभी न कामी दुम्हे
जलर वाचदा किया होगा, कि मैं तुम्हें अप्रत्यक्ष का यान
कराऊंगा . . . औं इली वायदे को निभाने के लिए मैं इस
धरती पर आया हूं . . . औं आवाज दे रहा हूं तुम्हें अपने
पास बुलाने के लिए, कि जिससे मेरे द्वाग किया गया

गुरुदेव अपने शिष्यों से
चीख-चीख कर मांग रहे हैं।
बन जाइए एकलत्व और
उत्सर्ग कर दीजिए अपने को
पूज्य गुरुदेव के चरणों में,
फिर देखिए इस 'गुरुः परम
देवतम्' के इन्द्रधनुषी एवं
वात्सस्त्यमयी स्वरूप को।

अज्ञान निमिर्णवस्य
ज्ञानान्वयन शत्रुरक्षया।
चक्रुरुभीलित येन
तमे श्री गुरुं नमः ॥

जिस प्रकार सूर्य का
कार्य सम्पूर्ण चराचर को
आलोकित करता है, उसी
प्रकार सदगुरु भी निश्चर
समाज के, शिष्य के अन्धकार
(अज्ञानता) का विनाश कर
अपने ज्ञान से उसे प्रकाशित
करते रहते हैं। सदगुर सदैव
अपने शिष्यों के उत्थान को
ही बात सोचते हैं। इसीलिए
गुरु ही साक्षात् परब्रह्म हैं
— 'सही अर्थों में आप पूर्ण
ब्रह्म स्वरूप हैं, . . . सही
अर्थों में आप शंकराचार्य
हैं, सही अर्थों में आप शिव
हैं, सही अर्थों में आप ब्रह्मा
और विष्णु हैं, सही अर्थों
में आप जगदगुरु हैं। मैं

वायदा पूरा हो
सके।

— शृंगर गुरुदेव

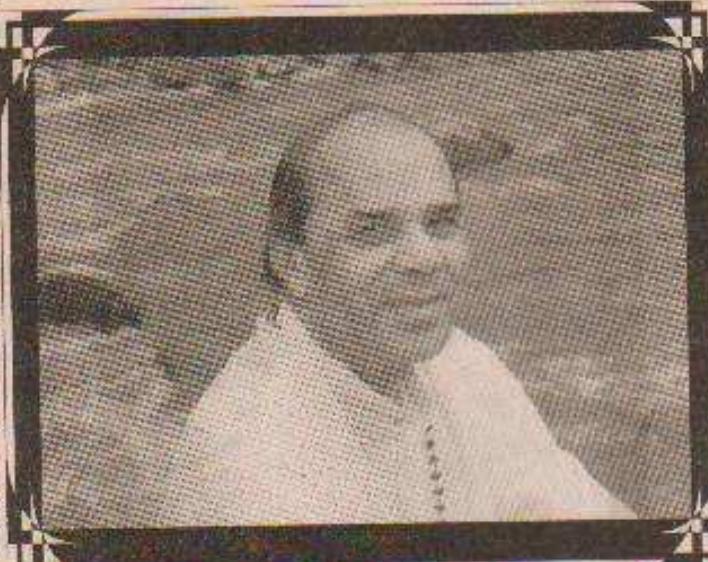
(मंत्र-तंत्र-यंत्र विज्ञान,
नवम्बर 1993)

ये शब्द
किसी और के नहीं,
अपितु मेरे प्रभु, मेरे
आराध्य, मेरे प्राण, मेरे
सर्वस्व पूज्य गुरुदेव
डॉ० नारायण दत्त
श्रीमाली जी के हैं,
जिनके विषय में कुछ
भी लिखना, कुछ भी
कहना सूख को दीपक
दिखलाने जैसा है। मेरे इन
तो क्या, सम्पूर्ण प्राणी भूमि
के लिए उनका शिष्य
ग्रहण करना गर्व की
है। आज की दुनिया में
सद्गुरु हैं, वे 'गुरुः प
तैत्रतम्' हैं।

बयों इन कंकड़-पत्थरों के बीच रहकर अपना सर कोड़ रहे हैं, वर्षों मानसरोवर के पास होकर भी उससे विमुख हैं, वर्षों मिथ्या अहं, भ्रष्टाचार भरे जीवन को जीने में मस्त हैं, वर्षों अपने स्वर्ण के समान जीवन को रांगा, धीतल बनाने में लगे हैं? छोड़ दीजिए छल-कपट, जागिये। प्रमाद छोड़िये, देखिये पूज्य गुरुदेव आपको बुला रहे हैं — ‘मैं तुम्हारे पंछों में गति दूंगा और निरधर आकाश में सुदूर कंचाई पर उड़ने की जानकारी दूंगा . . . तुम्हारे सारे दुःख, दर्द, दैन्य, अभाव, विषमता और कष्ट मिटा कर तुम्हें पूर्णता दूंगा !’

(भान्त्र-तंत्र-यंत्र विज्ञान, नवंबर 1993)

यह आङ्गन है पूज्य मुरदेव का, सदगुर का, 'गुरुः परम देवतम्' का, आपके भाग्य को हीरे की कलाम से तराशने के लिए, आपको आवागमन के चक्र से मुक्त करने के लिए, आपके अज्ञान को नष्ट करने के लिए। यदि इस पर भी आप नहीं जागते, प्रमाद नहीं त्यागते, तो फिर यह आपका दुर्भाग्य है, मैं तो कहूँगा, कि आपकी किस्मत ही फूटी है।



गुरु अवतारित हो सकते हैं रसातल में जा सके पिश्चित, केश, समाज को उन्नति को लिए, लक्षण कल्याण को लिए। हिंदूओं का कल्याण ही जगत् प्रभुज्ञ लक्ष्य होता है। जिस प्रकार गुरु रवदयं आपला प्रल नहीं लाते और वह ही वक्ती व्यवह आपला जल पीती है, उसी प्रकार रामदृश्मी संसार को होशा बुझन पायु देते ही रहते हैं, उनसे कुछ भी लेते नहीं। इसीलिए संघरण को गुरु परम धैर्यताम् कहा जाया है।

लं कापति
रावण जैसा ज्ञानी
दूसरा कोई नहीं था,
किन्तु अपने जीवन
के सांख्य काल में वह
भी चुद्धि-विभ्रम से
ग्रस्त हो गया था, तभी
तो मन्दोदरी उसके
सामने जब राम के
शौर्य का गुणान कर
रही थी, तो वह उसे
अपना शौर्य समझ
कर प्रसन्न हो रहा था।
तुलसी दास ने
'रामचरित मानस' में

लिखा है—
काल वप्पड गहि
काहु न मारा।
हरे धर्म, बल,
यज्ञि विदाय॥

काल कभी भी
सौधे प्रहर नहीं करता, वह
ल का हरण कर लेता है।
से, बुद्धि-धम से ही हुआ।
पी विनम्र निवेदन करूँगा,
रेत्याग कर दें। हमारे सदगुर
जहर को भी हंसते हुए पी
इससे क्या मिलेगा? आप
बुद्धि-विभ्रम के गोरी की
जाती है। जैसे सत्त्विपात का
कता है, उसी तरह आप भी
रह रहे हैं . . . लेकिन राष्ट्रण
परिचित हैं ही।

— शशिकान्त अग्रवाल

का परिचय पञ्जिका के संक्रिय
सदस्य एवं समर्पित शिष्य के रूप
में ही लाना लाता है। शिष्य हृदय
के भावों को प्रकट किया है

A small, square portrait of a man with dark hair, wearing a dark suit jacket, a white shirt, and a patterned tie. The image is grainy and appears to be from an old photograph.

इन्होंने इस लेख में।

महालक्ष्मी दीक्षा

धन-धार्य, भाव्य, भवन, यश,

प्रदिष्ठा सभी कुछ प्रदान करती है...

जी

वन में घटित होने वाली विविध घटनाओं को देखते हुए एक साधारण व्यक्ति यह समझ ही नहीं पाता है, कि वह किस रूप में अपना जीवन बदल कर। उसके जीवन का निर्माण उसके खुद के हाथों से निकल कर उन घटनाओं पर निर्भर हो जाता है, जो उसके जीवन में महत्वपूर्ण स्थान रखती हैं। और फिर वह अपने जीवन को एक निष्काम गति प्रदान करता हुआ सिर्फ जीवन व्यतीत करता रहता है। आज का मानव विवश दिखाई देता है, हाय हुआ, थका हुआ, निस्तेज दिखता है। उसमें जोश, हिम्मत, नाकत का अभाव दिखाई पड़ता है। वह किसी अन्य के लिए तो कुछ करने में असमर्थ होता ही है, खुद के लिए भी कोई ऐसा कार्य नहीं कर पाता, जिसमें उसे सन्तुष्टि का अनुभव हो। यदि उससे पूछा जाय, कि क्या उसे अपने जीवन की कोई भी ऐसी घटना याद है जिसमें उसे प्रसन्नता मिली हो, दो क्षण के लिए ही सही मुस्कराहट प्राप्त हुई हो ?

तो वह विचार मान हो जाएगा, क्योंकि ऐसी कोई घटना उसके जीवन में घटित हुई ही नहीं है। बाहर से अपनी प्रतिष्ठा, अपने सम्पादन को लेकर एक सम्बोध आवरण में तो वह सैकड़ों आर मुस्कराया होगा, प्रसन्न भी हुआ होगा, लेकिन वे एक आवरण मात्र थीं, जो माहोल या क्षण बदलते ही विस्मृत हो जाती है। इसके अलावा यदि उससे दुःख, तनाव या किसी समस्या के बारे में पूछा जाय, फिर जात होता है, कि उसका पूरा जीवन ही समस्याघरस्त है। उसमें कहीं प्रसन्नता है ही नहीं। फिर मानव अपने दुःख, तकलीफ को मिटाने के लिए गुरु की शरण लेता है।

देखा जाय तो संसार का प्रत्येक व्यक्ति ही गुरु का आश्रय पाने के लिए भटकता है, यह आवश्यक नहीं है, कि वह ढोल पीट-पीट कर कहे, कि मैंने गुरु बना लिया है, लेकिन गुरु के पास जाकर उसे दो क्षण की शांति का अनुभव होता ही है। उस व्यक्ति का यह कर्तव्य ही जाता है, कि वह सही मार्ग पर पहुंचे और सही मार्ग है साधना का।

आपको आरसी बारको, भजन गायक यान्मिक सन्तुष्टि धिल सकती है, लेकिन आपको जो मूलभूत आवश्यकताएं हैं वह पूर्ण ही नहीं सकती है। उनको पूरा करने के लिए आपको स्वयं साधना के मार्ग पर गतिशील होना पड़ेगा, उस मार्ग पर गतिशील होना पड़ेगा जहां आपको अपने प्रयास से अपनी आवश्यकताओं को पूरा करना पड़ेगा।

और इसके लिए आवश्यक है, कि आप जिस मार्ग पर गतिशील हों वह श्रेष्ठ हो, सरल हो, सहज हो तथा आठबार रहित हो, क्योंकि ऐसा ही मार्ग आपके लिए उपयुक्त होगा, आप किसी ऐसे मार्ग पर गतिशील नहीं हो पायेंगे, जिसमें आपको दो महीने जंगलों में बिताना पड़े, जहां हर क्षण जानवरों का भय हो, जरा सी चूक होने पर अनिष्ट की आशंका हो, आड़म्बर युक्त वेशभूषा हो, ऐसा मार्ग आपके लिए सम्भव नहीं है। आप जैसे गुहस्थ व्यक्तियों के लिए तो ऐसा मार्ग ही ठीक है, जिसमें आप स्वयं अग्रसर हो सकें और सरलतापूर्वक अपने लक्ष्य को प्राप्त कर सकें।

जब समस्याएं होती हैं, तनाव होता है तो वह सरल, सहज मार्ग भी आसानी से नहीं चार हो पाता है, क्योंकि प्रत्येक साधना के कुछ नियम होते हैं और साधक उन सम्पूर्ण नियमों का

यथोचित ढंग से पालन नहीं कर पाता है और किसी एक गलती से पूरी की पूरी साधना असफल हो जाती है फिर उसके चारों ओर एक निराशा घिर जाती है। यहाँ ऐसे माधव हैं, जो आते हैं और वन सम्बन्धी साधना सम्पन्न करते हैं, और उनमें से कुछ साधक सफलता प्राप्त करते हैं लेकिन कुछ असफल होकर पुनः वन लक्ष्मी की साधना करते हैं। लेकिन ऐसे साधक यह नहीं जानते, कि उन्हें अपने जीवन में सिर्फ दरिद्रता ही नहीं दूर करनी है बल्कि सुख, सौभाग्य-लक्ष्मी को भी प्राप्त करता है, वन लक्ष्मी को भी प्राप्त करना है, आरोग्य लक्ष्मी को भी प्राप्त करना है, और सबसे महत्वपूर्ण है भाग्य लक्ष्मी को प्राप्त करना। जब भाग्य ही आपका जाग्रत नहीं होता तो किस वन लक्ष्मी का आगमन होगा कैसे, आरोग्य का आपके द्वारा में किस प्रकार से स्थापित हो पायेगी।

इस सबकी एक साथ प्राप्ति के लिए जो विधान है वह 'महालक्ष्मी दीक्षा' है। महालक्ष्मी दीक्षा का अर्थ है, कि महालक्ष्मी आपको सभी स्वरूपों के साथ प्रदान की जाय और यह तभी सम्भव है जब समर्थ गुरु आपको यह दीक्षा प्रदान करें। महालक्ष्मी दीक्षा एक सामान्य दीक्षा नहीं है अपितु यह एक श्रेष्ठ, अद्वितीय दीक्षा है। महालक्ष्मी दीक्षा प्राप्त करने के बाद साधक जब महालक्ष्मी से सम्बन्धित मन्त्र जप करता है तो उसके जीवन की जो भी न्यूनताएँ हैं वे धीरे-धीरे समाप्त होने लग जाती हैं, उसके मार्ग में आने वाली बाधाएँ भी समाप्त होने लगती हैं।

जब पाण्डव निरन्तर बनवास भोगते चले जा रहे थे और दुर्योधन नित नये कूचक रच कर, उन्हें किसी न किसी बहाने से, सभी सुखों से वंचित कर दूर जंगल में ही उनको स्थाई निवास बनाने को मजबूर कर दिया था, तो एक दिन पांचों भाई आपस में विचार-विभर्ण करने लगे, कि आखिर हमारे जन्म से लैकर आज तक जितनी भी घटनाएं घटित हुई हैं, उनसे हमने दुःख ही झेला है, हम सभी सदैव अपने जीवन के एक-एक दिन को जीने के लिए संघर्षरत रहे हैं, कहने को तो हम राजपुरुष हैं पर हमारा वास्तविक जीवन निर्धनों, दरिद्रों की भाँति ही बीत रहा है। ऐसा नहीं है कि हममें बल की कमी हो, फिर भी हमेशा हमारे जीवन को खतरा रहा और दुर्योधन व उसके अन्य भाइयों ने हमेशा पक्षपात कर हमें निर्धनता का एहसास कराया। सदैव हमें राज महल के घड़ीयों का सामना करना पड़ा, यहां तक कि हमारे वृद्ध पितामह तथा अन्य गुरुजनों ने भी हमारा कभी रखेच्छापर्वक साथ नहीं दिया। अपने जीवन की रक्षा के लिए

हम इस बन से उस बन भटक रहे हैं, आखिर कब तक हमें यूं
ही भटकना पड़ेगा और जब हमारा बनवास काल पूरा हो रहा
है तो भी कौरब युद्ध करने की बात कह रहे हैं। आखिर क्या
हमारे भाग्य को परिवर्तित नहीं किया जा सकता है।

कृष्ण ने कहा, कि आप पांचों को चाहिए, कि आप महालक्ष्मी दीक्षा ग्रहण कर लें, क्योंकि इस समय आपके लिए यही दीक्षा श्रेष्ठ है। इसे पूर्णता के साथ प्राप्त करने के पश्चात आप राज्य सुख, शांति, ऐश्वर्य, धन, धान्य, आरोग्यता, विजय, वश, प्रतिष्ठा सभी कुछ प्राप्त कर लेंगे।

पांचों भाइयों की प्रार्थना के फलस्वरूप ही कृष्ण ने उन्हें यह श्रेष्ठतम दीक्षा (महालक्ष्मी दीक्षा) सम्पूर्ण विधि-विधान के साथ प्रदान की। महालक्ष्मी दीक्षा प्राप्त कर, कर्जायुक्त होकर फिर पाण्डवों को कभी जीवन में दुःखों का सामना नहीं करना पड़ा। महाभारत के युद्ध में विजयी होकर फिर पाण्डवों ने विष्णुकंटक राज्य किया, और कई बर्षों तक राज्य किया। फिर उन्हें जीवन में कभी दुःखों को सामना नहीं करना पड़ा, फिर उनका जीवन कष्टमय नहीं गुजरा।

महालक्ष्मी दीक्षा गुरु अपने शिष्य को तभी देता है जब वह देखता है कि अब इसे पूर्णता देनी है, भौतिक क्षेत्र में इसे पूर्ण कर ही देना है, अपूर्ण नहीं रखना है ब्यांक महालक्ष्मी दीक्षा सिर्फ लक्ष्मी के स्वरूप को ही ध्यान में रखकर नहीं प्रदान की जाती है, बल्कि यह दीक्षा साधक के भगव्य को भी जाग्रत कर देती है, उसे आरोग्यता प्रदान करती है। यदि लीमारी के कारण उसको देह निस्तेज हो गई है, तो उसका पूर्ण काव्याकल्प कर उसके चेहरे को ओज़्युक्ट और प्रसन्न बना देती है, शक्ति फिर ऐसे साधक के जीवन में प्रविष्ट नहीं हो पाता है, फिर उसे अपने लक्ष्य की प्राप्ति में कोई बाधा या अड़चन नहीं आती है।

महालक्ष्मी दीक्षा के पश्चात फिर साधक जीवन के बासियिक अर्थ को अनुभव करने लगता है, यद्योंकि दीक्षा के पश्चात ऐसे जैसे साधक इसका गंत्र जप पूर्ण करता जाता है उसके बारे का वानाकारण भी बदलने लगता है। घर में उडासी, नीरसता के स्थान पर एक सुगन्ध व्याहित होने लगती है। यदि कोई बाहरी व्यक्ति आ जाता है तो वह भी जल्दी जाने की इच्छा नहीं रखता है, उसे भी उस घर में आनन्द की अनुभूति होती है। पूरे घर में तथा सभी सदस्यों में निर्भयता का संचार होने लगता है। जीवन के इतने विविध पक्षों को पूर्ण करती वह 'महालक्ष्मी दीक्षा' का साधारण हो सकती है?

दीपावली पूजन

दीपावली भव्यकार से प्रकाश की ओर जाने की प्रक्रिया है। जीवन में दुःख, दरिद्र्य तथा जो भी बाधाएं हैं उन सभी को समाप्त करके सुख, समृद्धि, ऐश्वर्यवान् यनने का ही यह पावन पर्व है, इसे 'काल गति' भी कहा गया है, इस गति में जो भी साधनाएं सम्पत्ति की जाती है, वे फलप्रद होती ही हैं। इस दिन किया गया महालक्ष्मी और महागणपति का पूजन पूरे वर्ष को चक्रत तथा समुद्दिष्ट बनाता है। भगवती महालक्ष्मी समस्त चल और अचल सम्पत्तियों, मिद्दियों एवं निर्धियों की अधिष्ठात्री देवी है। भगवान गणेश मुद्रिद्वय के अधिष्ठात्री देव हैं। इसलिए दीपावली के शुभ अवसर पर इन दोनों का एक साथ पूजन मंगल और सुख के लिए मान जाता है। कार्तिक कृष्ण अमावस्या को भगवती महालक्ष्मी और भगवान गणपति का यमवेत पूजन भौतिक और आध्यात्मिक दोनों पक्षों को संबंधित के लिए शुभ क्षण माना जाता है, इसलिए इस पावन क्षण पर प्रस्तुत है आपके लिए शुभ क्षण माना जाता है, इसलिए इस पावन क्षण पर प्रस्तुत है आपके लिए महालक्ष्मी महागणपति पूजन।

पूजन सामग्री

कुंकुम, मौली, अग्रवती, केसर, कपूर, लिन्हूर, पान, सुपारी, लौंग, इलायची, फल, पुष्प माला, गंगा जल, पंचामृत (दूध, दही, धी, शहद और चीनी), यज्ञोपवीत, वस्त्र, मिट्टी एवं पचपात्र।

दीपावली पूजन के शुभ मुहूर्त वृष्ट लग्न शाम को 6:53 से 8:49 और सिंह लग्न रात्रि 1:21 से 3:38 में हैं। सर्वश्रेष्ठ आप स्नान कर शुद्ध पीले वस्त्र धारण करें तथा उत्तर दिशा की ओर मुँह कर पीले आसन पर बैठें, सामने बाजोट पर पीला कपड़ा छिड़ा लें एवं एक थाली में कुंकुम से अष्टवल कमल बना कर उसे बाजोट पर रखा कर उसपे 'महागणपति-महालक्ष्मी यंत्र' को स्थापित करें। यंत्र के पूर्व में 'ऋद्धि काल्पनिका', परिचय में 'सिद्धि कल्पनिका' उत्तर दिशा में 'शुभ' और दक्षिण दिशा में 'लाभ' की स्थापना करें। यंत्र के मध्य में 'ॐ धनदायै नमः' मंत्र पांच बार बोल कर अष्टग्रांथ से पांच ब्रिन्दियां लगावें, किंतु अपने मस्तक पर लिलक करें। इसके बाद निम्न प्रकार से पूजन क्रम प्रारम्भ करें —

ॐ मंत्र-नम-यंत्र विज्ञान अक्टूबर 97

पवित्रीकरण

ॐ अपवित्रः पवित्रो वा सविवस्था गतोऽपि वा ॥

यः भूरेत् पृष्ठदीकाक्षं स ब्रह्मश्वन्तरः शूचिः ॥

इस मंत्र को पढ़ कर अपने ऊपर तथा सभी पूजन सामग्री पर पंचशत्र में रखा हुआ जल छिड़कर पवित्र कर लें।

रांकल्प

दाहिने हाथ में जल लेकर निम्न मंत्र को पढ़ें —

ॐ विष्णु विष्णु विष्णुः श्री महभगवतो महापुरुषस्य विष्णोराज्या प्रवर्त्तमानस्य अद्य श्री ब्रह्मणोऽहि द्वितीय परादेव श्वेतवाराहकल्पे वैवस्वतमन्तर्मन्त्रे ज्यमद्वीपे भारतवर्षे अस्मिन् पवित्र क्षेत्रे अमुक वासरे (दिन का नाम लें) अमुक गोत्रोन्पत्रोऽहं (अपना गोत्र बोलें), अमुक शमांऽहं (अपना नाम बोलें) यथा मिलितोपचारैः श्री महालक्ष्मी धीत्यर्थे तदंगत्वेत् गणपति पूजनं च करिष्ये ।

जल भूमि पर छोड़ दें।

गुरु पूजन

सामने गुरु यंत्र व गुरु चित्र स्थापित कर लें तथा दोनों हाथ जोड़ कर निम्न मंत्र का उच्चारण करें —

गुरुद्वंद्वा गुरुर्धिष्णुः गुरुद्वंद्वो महेश्वरः ।

गुरुः साक्षात् परब्रह्म तस्मै श्री गुरुवे नमः ॥

गुरु आवाहयामि भ्यापयामि नमः ।

प्राणं स्नानं तिलकं पुष्पं धूपं

दीपं नैवेष्यं च समर्पयामि नमः ॥

ऐसा बोल कर पाठ्य, स्नान, तिलक, पुष्प, धूप और नैवेष्य आदि समर्पित करें। फिर दोनों हाथ जोड़ कर प्रार्थना करें —

अज्ञानतिमिराभ्यस्य ज्ञानरूपन शलाक्या ॥

चक्षुरन्मीलितं वेन तस्मै श्री गुरुवे नमः ॥

गणपति पूजन

इसके बाद दोनों हाथ जोड़ कर भगवान गणपति का प्रार्थना करें —

गजानन् भूत गणाधिष्ठित,
 कपित्थ जम्बुफल चारुभक्षणि ॥
 उमासुतं शोक विनाश कारकः
 नमामि विघ्नेश्वरं पादपञ्जम् ॥
 ॐ गणेशाय नमः ध्यानं समर्पयामि ॥
 भगवान गणपति को आसन के लिए पुष्ट समर्पित करें।
 इसके बाद भाग्ने स्थापित यंत्र को जल से स्नान करायें।
 फिर पंचामृत स्नान करायें, स्नान के समय निम्न मंत्र बोलें –
 पञ्च नदः सप्तस्ती भूयिति सप्तस्तोत्रः ।
 सप्तस्ती तु पञ्चद्वा सोदेशेऽभ्युत्त भूयिति ॥
 इसके बाद चन्दन, अक्षत, पुष्पमाला, नैवेद्य आदि समर्पित करें तथा धूप-दीप दिखाएं –
 चन्दनं अक्षतान् पुष्प मालां नैवेद्यं च समर्पयामि नमः ।
 धूपं दीपं दशशामि नमः ॥
 इसके बाद तीन बार मुख शुद्धि के लिए आचमन करायें। इलायची और लौंग आदि से युक्त पान छड़ायें। फिर दोनों हाथ जोड़ कर ग्राहन करें –
 नमस्ते ब्रह्मरूपाय विष्णुरूपाय ते नमः ।
 नमस्ते रुद्ररूपाय करिरूपाय ते नमः ॥
 विश्वरूपस्वरूपाय नमस्ते ब्रह्मचारिणी ॥
 भक्तप्रियाय देवाय नमस्तु विनायक ॥
 ॐ ग गणपतये नमः ।
 निविघ्नमस्तु । निविघ्नमस्तु । निविघ्नमस्तु ॥
 ॐ तत् सद्ब्रह्मार्पणमस्तु ।
 अनेन कृतेन पूजनेन सिद्धि बुद्धि सहितः ॥
 श्री भगवान् गणाधिष्ठितः प्रीयन्ताम् ॥
 इसके बाद दोनों हाथ जोड़ कर भगवती महालक्ष्मी का स्नान करें –
 ॐ अष्टेऽभिषिके अष्टालिके नमा नवति कश्चन ।
 सप्तस्तवश्वकः सुभट्टिका कार्यालयसिनीम् ॥
 श्री महालक्ष्म्ये नमः ध्यानं समर्पयामि ॥

आहारन
 ध्यान के पश्चात दोनों हाथों में पुष्ट लेकर भगवती का आहार करे तथा निम्न मंत्र पढ़े –
 महापत्र वनानन्दस्थे कारणानन्ददिश्वे ।
 सर्वभूतहिते मात्ररक्षेहि परमेश्वरि ॥
 श्री महालक्ष्म्ये नमः आवाहनं समर्पयामि ॥
 पुष्ट को यंत्र पर समर्पित कर दें।

आसन
 आसन के लिए एक पुष्ट अर्पित करें –
 श्री महालक्ष्म्ये नमः आसनं समर्पयामि नमः ॥

यात्रा
 पाठ के लिए दो आचमनी जल छड़ायें –

श्री महालक्ष्म्ये नमः पादं समर्पयामि ॥
 अर्धे आचमनीयं स्नानं च समर्पयामि ॥
 फिर अर्धे छढ़ा कर आचमन करायें तथा स्नान करायें।

पंचामृत स्नान
 पंचामृत से भगवती महालक्ष्मी को स्नान करायें –
 पञ्चामृतश्वरं रायुकं दधिक्षीरसमन्वितम् ॥
 पंचामृत गृहणेदं पंचामृतप्राणवल्लभे ॥
 श्री महालक्ष्म्ये नमः पंचामृत स्नानं समर्पयामि ॥

शुद्धोदक स्नान
 इसके बाद उन्हें शुद्ध जल से स्नान करायें –
 परमानन्दयोधार्थं निमः न निजमूर्तये ।
 शुद्धोदकस्तत्र स्नानं कल्पयाप्यभ्यं शंकरि ॥
 श्री महालक्ष्म्ये नमः शुद्धोदक स्नानं समर्पयामि ॥

वस्त्र
 वस्त्र समर्पित करें –

श्री महालक्ष्म्ये नमः वस्त्रं समर्पयामि ॥

आभूषण
 आभूषण समर्पित करें –

श्री महालक्ष्म्ये नमः आभूषणं समर्पयामि ॥

अन्धा

इत्र चक्राये –

श्री महालक्ष्म्ये नमः गङ्धं समर्पयामि ॥

अदाता

श्री महालक्ष्म्ये नमः अक्षतान् समर्पयामि ॥

पुष्प

श्री महालक्ष्म्ये नमः पुष्पाणि समर्पयामि ॥

इसके बाद कुंकुम, चाषल तथा पुष्ट मिला कर निम्न मंत्रों का उच्चारण करते हुए यंत्र पर छड़ायें –

ॐ चपलायै नमः पादौ पूजयामि ॥
 ॐ चञ्चलायै नमः जानुनी पूजयामि ॥
 ॐ कमलायै नमः कटि पूजयामि ॥
 ॐ कात्यायनी नमः नाभिं पूजयामि ॥
 ॐ जग्न्यायै नमः जठरं पूजयामि ॥
 ॐ विश्ववल्लभायै नमः वक्षः स्थलं पूजयामि ॥
 ॐ कमलवासिनी नमः हस्तीं पूजयामि ॥
 ॐ पद्मानन्दायै नमः मुखं पूजयामि ॥
 ॐ कमलपत्रायै नमः नेत्रत्रयं पूजयामि ॥
 ॐ श्रियै नमः शिरः पूजयामि ॥
 ॐ महालक्ष्म्ये नमः सर्वज्ञं पूजयामि ॥

धूप

श्री महालक्ष्म्ये नमः धूपं आधारयामि ॥

दीप

श्री महालक्ष्म्ये नमः दीपं दशशामि ॥

विवरण

तात्र विश्वानि भक्ष्याणि व्यज्जनानि हरिपिते।
चक्रेष्ट भूदृश्य नैवेद्यं घडसं च चतुर्विधम्॥
श्री महालक्ष्मी नमः नैवेद्यं निवेदयामि॥
नैवेद्य समर्पित कर तीन बार जल का आचमन कराएं।

ताम्बूल

तीन इलायची युक्त पान समर्पित करें –

श्री महालक्ष्मी नमः ताम्बूलं समर्पयामि॥

दक्षिणा

दक्षिणा दद्य समर्पित करें –

श्री महालक्ष्मी नमः दक्षिणां समर्पयामि॥

इसके बाद यंत्र के चारों ओर रखी गुटिकाओं का भी चूजन पूजन करें।

इसके बाद 'कमलगढ़ी की माला' से निम्न मंत्र का 21 बाल मंत्र जप सम्पूर्ण करें –

मंत्र

॥ॐ श्री श्री महालक्ष्मी अग्नच्छ अग्नच्छ थनं देहि
देहि ॐ॥

OM SHREEM SHREEM MAHALAXMI AGYACHYA
AGYACHYA DHANAM DE HI DEHI OM

आरती

इसके बाद धी की पांच बत्ती की आरती बना कर आरती करें –

ॐ जय लक्ष्मी माता, मैया जय लक्ष्मी माता।

तुमको निसि दिन सेवत, और विष्णु धाता॥

ॐ जय लक्ष्मी माता

अमा, रमा, अहाणी, तुम ही जग माता।

सूर्य चन्द्रमा व्यावह, चराद ऋषि गाता॥

ॐ जय लक्ष्मी माता

दुर्गा रूप निरंजनि, सुख सम्पति दाता।

जो कोई तुमको व्याता, तिथि तिथि धरा पाता।

ॐ जय लक्ष्मी माता

तुम पाताल निवासिनि, तुम ही शुभ दाता।

कर्म प्रभाव प्रशासिनि, भव निधि को ग्राता॥

ॐ जय लक्ष्मी माता

जिस पर तुम रहनी नहं, सदगुण आता।

सब सम्भव ही जाता, मन नहि धराता॥

ॐ जय लक्ष्मी माता

तुम बिन यज्ञ न होते, वस्त्र न हो पाता॥

खात पात का वैभव सब तुमसे भ्राता॥

ॐ जय लक्ष्मी माता

श्री मंत्र-तंत्र-यंत्र विज्ञान अक्टूबर 97

शुभ गुण मन्दिर सुन्दर, श्रीरोदधि जाता॥

रत्न चतुर्दश तुम बिन, कोई नहीं पाता॥

ॐ जय लक्ष्मी माता

महालक्ष्मी जी की भासी, जो कोई नर गाता॥

२ अ आत्मन्द सप्ताता, पाप उत्तर जाता॥

ॐ जय लक्ष्मी माता

जल आरती

तीन बार आचमनी से जल लेकर दोपक के चारों ओर घुमायें तथा निम्न मंत्र का उच्चारण करें –

ॐ द्यौः शान्तिरन्तिरक्ष (गृ) शान्तिः पृथिवी

शान्तिरापः शान्ति रोधथयः शान्तिः । वनस्पतयः

शान्ति विश्वे देवाः शान्तिः ग्रह शान्तिः सर्व (गृ)

शान्तिः शान्तिरेष शान्तिः सा मा शान्तिरधि॥

पुष्पाङ्गालि

दोनों हाथों में पुष्प लेकर निम्न मंत्र का उच्चारण करें तथा यंत्र पर चढ़ा दें –

नारा सुगन्ध पुष्पाणि तथा कालोदध्वानि च।

पुष्पाङ्गालिर्मया दत्ता गृहण जगदभिके॥

श्री महालक्ष्मी नमः पुष्पाङ्गलिं समर्पयामि॥

प्रणामाङ्गालि

दोनों हाथ जोड़ कर निम्न मंत्र का उच्चारण करते हुए प्रार्थना करें –

नमो देव्यै महादेव्यै शिवायै सततं नमः॥

नमः प्रकृतै भद्रायै नियता: प्रणता: स्व ता:॥

श्री महालक्ष्मी नमः वरमस्करोमि॥

समर्पण

इसके बाद निम्न समर्पण मंत्र का उच्चारण करते हुए पूजन व जप भगवती लक्ष्मी को समर्पित करें, जिससे कि इसका फल आपको प्राप्त हो सके –

ॐ तत्सत् ब्रह्मपूर्णसन्, अनेन कृतेन पूजाराधन कर्मणा॥

श्री महालक्ष्मी देवता परासविन स्वस्त्रपिणी प्रीत्यनाम॥

एक आचमनी जल ले कर पूजन की पूर्ता हेतु भूमि पर छोड़ दें।

इसके बाद वहां उपस्थित परिवार के सभी सदस्यों एवं स्वजनों को प्रसाद वितरित करें।

इस प्रकार यह सम्पूर्ण पूजन व साधना सम्पन्न होती है। साधना समाप्ति के पश्चात् माला व यंत्र को पूजा स्थान में ही स्थापित रहने दें और शेष सामग्री को अगले दिन जल में विसर्जित कर दें। सब यात्रीने के उपरान्त यंत्र एवं माला को भी नदी के जल में विसर्जित कर दें।

गौरवशाली हिन्दी मासिक पत्रिका
मन्त्र-तंत्र-यंत्र विज्ञान की

वार्षिक सदस्यता

एक वर्ष के लिए पत्रिका सदस्य बनने पर आपको प्राप्त होगा अत्यन्त दुर्लभ एवं अति



जिसे ग्राप्त कर आप स्वयं इसका प्रधान अनुभव करेंगे। इसके स्थापन से ही आपके समस्त शत्रु परामर्श होंगे तथा आप सदैव विपरीत परिस्थितियों में भी अनुकूलता ग्राप्त कर सकेंगे और किसी भी प्रकार की साधना में सफलता के लिए आवश्यक है। इस अति विशिष्ट उपहार द्वारा पत्रिका ने तो आपके लिए सीधार्थ का द्वार खोल दिया है (इस गुटिका को सबा महीने तक स्थापित कर थूप दीप दिखायें, मन्त्र जप की आवश्यकता नहीं है, किन्तु नदी में विसर्जित कर दें।)

आप पत्रिका में प्रकाशित पोस्टकार्ड स्पष्ट अक्षरों में भर कर हमारे पास भेज दें... शेष कार्य हम स्वयं करेंगे।

सम्पर्क इस पते पर करें

मन्त्र-तंत्र-यंत्र विज्ञान, डॉ० श्रीमाली पार्ग, लाईकोर्ट कॉलोनी, जोशपुर (राज०), फोन : ०२९१-३२२०९, फैक्स : ०२९१-३२०१०

यह सौभाग्य आपको प्राप्त होगा पत्रिका सदस्यता प्राप्त कर; यदि आप सदस्य हैं, तो अपने किसी मित्र, सम्बन्धी, रिश्तेदार या स्वजन को सदस्य बनावें और प्राप्त करे यह अद्वितीय उपहार।

अब यिशेष आपको करवा है, हम तो सिर्फ इतना ही प्राप्तार्थी दे रहे हैं, कि आप ही आपको विशेष तरह इस धरा आये सौभाग्य से।

यह योजना मात्र 30 दिनों के लिए है

वार्षिक सदस्यता शुल्क - 195/-

डाक खर्च ऑटोटिक।

धन योगी प्रयोग

यक्षिणी शालृ के घबराने की जनकत
नहीं है, यद्योगिक यक्षिणी तो एक नारी
हृदय का प्रतिक्षय है, जो बाधक को
वित्य धन-योग्य प्रदान करती है और उनका
कायाकल्प करती हुई जीवन में पूर्णता प्रदान
करती है।

१०४ यक्षिणियों के नाम शाकत्रों में शिर्हित हैं, जनक
ठनमें धनका यक्षिणी अखके अधिक महत्वपूर्ण है, यद्योगिक यह
जीवन में खेड़ी, ठल्लाश, डमंग, जोश, जवानी, धन, कम्माज,
प्रतिष्ठा, लीर्ति, यश और श्रेष्ठता प्रकान करने में कर्मसु है।
और यदि आपने आपने जीवन में धनका यक्षिणी को भिन्न ही नहीं
किया, तो आपका जीवन एक कोश कागज बह जाएगा, ब्रह्मूवा का बह
जाएगा श्रतः यह जकड़ी है, कि आप धनका यक्षिणी को भिन्न करें, सफलता
प्राप्त करें और यह बख कुछ प्राप्त कर जाकें, जिसके माध्यम के जावा
जंभार आपको ठंगलियों पद नाद भजें।

**और इसी कारणवश यह दुर्लभ प्रयोग आपके लिए
इस पत्रिका में प्रस्तुत किया जा रहा है . . .**

संन्यास जीवन की सुवास है, संन्यास जीवन का
आनन्द है, संन्यास जीवन की श्रेष्ठता है, मगर
ऐसा तब है, जब संन्यास की भावना स्वतः ही
मन में प्रस्फुटित हो। संन्यास का अर्थ है — मनुष्य जीवन को
ऋणामी गति प्रदान करना, एक निश्चित उद्देश्य, एक
निश्चित लक्ष्य निर्धारित कर उसे पूर्णता प्रदान करना। संन्यास
का अर्थ यह कदापि नहीं होता, कि आप भूखे भरे, भौख
मारे और जर्जर होकर जीवन-यापन करें। इस प्रकार तो
जीवन का रस ही समाप्त हो जायेगा, जीवन का
आनन्द ही समाप्त हो जायेगा। इस प्रकार यदि
संन्यास है, तो फिर कौन संन्यासी होना चाहेगा, इस
प्रकार तो संन्यास सुवास न होकर के सजा हो
जायेगी और कौन चाहेगा,
कि वह संन्यास ले ?

आज के युग में तो पग-पग पर धन की
आवश्यकता पड़ती है, धन के बिना तो
धर्म भी सम्भाव नहीं हो पाता।
इसलिए धन की इस
आवश्यकता को देखते हुए धन
के आगमन का स्रोत रखना कोई पाप
नहीं होता, मगर धन का आगमन पाप पूर्ण
कार्यों से न हो, छल से न हो, कपट से न हो।

मगर जब आप संन्यास ले लें, तो फिर पूर्णता के
साथ संन्यास को जियें। आप चाहे गृहस्थ हों या संन्यासी हों,
मगर पूर्णता के साथ उस जीवन को जिएं, पूर्ण आनन्द के साथ
जीवन को जिएं। यदि आप गृहस्थ जीवन में हैं, तो गृहस्थ का
आर्थिक दृष्टि से सम्पन्न होना अत्यन्त आवश्यक है, धन के
बगैर गृहस्थ की गाढ़ी नहीं चल सकती। यदि आप संन्यासी
हैं, तो भी आपको धन को आवश्यकता तो होती ही है। आप
भीख मांग कर जीवन-यापन नहीं कर सकते, क्योंकि भीख
मांगने वाला भिखारी तो
हो सकता है, संन्यासी
नहीं। संन्यासी का अर्थ
ही होता है — अपने
आपमें पूर्ण सक्षम, पूर्ण
सामर्थ्य युक्त . . . और
जो सामर्थ्यवान होता है,
जो सधाम होता है, वह
सिक्ख देने की किया
जानता है, लेना नहीं।



वर्तमान युग में तो व्यक्ति को पण-पण पर धन की आवश्यकता पड़ती है, क्योंकि आज के सामाजिक परिवेश में धन ही सबसे महत्वपूर्ण आधार बन गया है। यदि आप गृहस्थ हैं, तो भी आपको अपनी दैनिक अनिवार्यताओं की पूर्ति के लिए व श्रेष्ठता के साथ समाज में गतिशील होने के लिए धन की आवश्यकता है और यदि आप संन्यासी हैं, तो भी आपको भी ख़न न मांगनी पड़े, इसके लिए धन की आवश्यकता तो है ही। धन के लिना तो धर्म भी सम्भव नहीं हो गता, क्योंकि यदि आपको कोई धार्मिक अनुच्छान सम्पन्न करना है, तो उसके लिए आवश्यक सामग्रियां आपको बाजार से ही खारीदनी पड़ेंगी। इसलिए धन को इस आवश्यकता को देखते हुए धन के आगमन

का स्रोत रखना कोई पाप नहीं होता, मगर धन का आगमन पाप पूर्ण कार्यों से न हो, छल से न हो, कपट से न हो।

फिर कैसे धन प्राप्त होगा? धन प्राप्त होगा दैविक सहायता से। मगर इसके लिए आवश्यक है, कि आप जीवन में दैविक सहायता प्राप्त करें, साधना करें, मंत्र जप करें और इसमें सफलता आपको गुरु देगा। हालांकि आपको नित्य ही बाहरी बातावरण के अनुसार ढलना पड़ता है, समाज में एक सामव्यस्य स्थापित करना पड़ता है, लोगों से झूठ भी बोलना पड़ता है, कपट भी करना पड़ता है। यह आज के युग की आवश्यकता है और यह सब मात्र आज के समय में ही नहीं है, मात्र इस कलियुग में ही नहीं है, यह सब तो त्रेता में, द्वापर में, सत्यग्रह में भी था। राम की भी सीता का त्याग करना पड़ा, कृष्ण को भी अपने अधिकारी की प्राप्ति के लिए लड़ना पड़ा। इस तथ्य से आप सभी परिचित हैं। यह तो प्रत्येक युग में, प्रत्येक समय में घटित होता रहा है और भविष्य में भी घटित होता रहेगा।

कभी-कभी व्यक्ति को क्रोध भी करना पड़ता है, लेकिन आज के धर्म ग्रंथ और तथाकथित स्वामी कहते हैं, कि क्रोध मत करो, क्रोध को समाप्त करो। मैं कहता हूं, कि क्रोध समाप्त हो जायेगा, तो मनुष्य के पास बचेगा क्या? क्रोध करना चाहिए, मगर विवेक के साथ। यदि किसी को गलत रास्ते पर जाने से रोकना है, तो क्रोध करना ही होगा। लेकिन क्रोध पर नियन्त्रण अवश्य होना चाहिए, अनावश्यक क्रोध नहीं होना चाहिए। कब किस गुण का प्रयोग करना है, यह तो आपको गुरु ही बतायेगा, यह जान आपको गुरु ही देगा, कि मानव मन की चित्त वृत्तियों का कब और कैसे प्रयोग किया जाये?

गुरु वह होता है, जो शिष्य के ऊपर प्रहार कर सके, गलत को गलत बोल सके और ठोकर मार कर उसे सही रास्ते पर गतिशील कर सके। जो गुरु अपने शिष्य

बहुत से लोग चक्रिणी का नाम सुनते ही डर जाते हैं, कि वे बहुत मरानक होती हैं, किसी चुड़ैल की तरह, किसी प्रेतनी की तरह, मरण ये सब मन के बहुम हैं। चक्रिणी साधक के समक्ष एक बहुत ही सौम्य और सुन्दर स्त्री के रूप में प्रस्तुत होती है। देवताओं के कोषाश्वक कुबेर स्वयं भी चक्र जाति के ही हैं।

की वास्तु करेगा, जो उसे कैसे जान दे सकेगा? जब वह
जब अपने पेट को चिन्ना में रहेगा, किसी को कड़वा सच
कैसे छह सकेगा? जो सही अर्थों में गुरु होगा, वह
जब-सब धर पर शिष्य को प्रत्येक प्रकार से सही रास्ते पर
लाने का प्रयास करेगा।

व्यक्ति की आर्थिक समस्याओं के समाधान के लिए और गुप्त धन की प्राप्ति के लिए 'बनदा व्यक्षणी साधना' एक श्रेष्ठ साधन है। गुप्त धन का अर्थ होता है वह धन, जिसके आगमन के किसी निश्चित स्रोत के बारे में हमें भी जानकारी न हो, कि धन किस स्रोत से प्राप्त होगा? इस प्रकार का धन हमें इस साधना के माध्यम से प्राप्त होता है।

बहुत से लोग वक्षिणी का नाम सुनते ही डर जाते हैं, कि ये बहुत भयानक होती हैं, किसी चुड़ैल की तरह, किसी जेनो की तरह, मगर ये सब मन के बहम हैं। वक्षिणी साधक के समक्ष एक बहुत ही सौम्य और सुन्दर स्त्री के रूप में प्रस्तुत होती है। देवताओं के कोषाध्यक्ष कुबेर स्वयं ही यक्ष जाति के हैं, इसलिए इनसे किसी भी प्रकार से भयभीत होने की आवश्यकता नहीं है। फिर भी यदि कोई आदमी डरता ही हो, तो क्या किया जा सकता है? जैसे नेपेलियन बोनापार्ट बहुत ही बहादुर योद्धा था, मगर वह बिल्लों से डरता था और इसी कारण वह मारा गया।

यक्षिणी साधना एक प्रेममय साधना है। प्रेम का अर्थ वासना नहीं, वासना को प्रेम समझने से तो यह साधना तुरे जीवन भर सिद्ध हो ही नहीं सकती। साधना की सफलता के लिए आवश्यक है, कि आप अपना व्यक्तित्व प्रेममय बनायें। प्रेम तो पुत्र से हो सकता है, पुत्री से हो सकता है, बहन से, मां से और मित्र से भी हो सकता है। प्रेम का अर्थ यहां वासना कदापि नहीं है, इस बात को भली-भाँति समझ लेना आवश्यक है।

किसी भी साधना में सफलता प्राप्त करने के लिए गुह और मंत्र के प्रति श्रद्धा और विश्वास की अनिवार्यता होती है। अतः यदि आप पूर्ण श्रद्धा और विश्वास के साथ साधना सम्पन्न करेंगे, तो आप को सफलता अवश्य ही मिलेगी और यह सफलता आपको गुरु की कृपा से ही प्राप्त होगी, बशर्ते गुरु के प्रति असीम प्रेम हो और साधना के प्रति असीम विश्वास। इसलिए अपने गुरु से प्रेम करना चाहिए और असीम प्रेम करना चाहिए, ऐसा प्रेम, कि गुह से एक क्षण को भी अलग रह पाने का विचार स्वयं में भी न आ पाये, गुह के बांग्र जीने की

कल्पना भी नहीं हो। ऐसा ही प्रेम आपके मन में गुरु के प्रति होना चाहिए। साथ ही मन में किसी भी प्रकार सन्देह नहीं रखना चाहिए, सन्देह की एक लहर भी आपके सारे कार्य को विगड़ सकती है, आपको साधनाओं में असफलता प्रदान कर सकती है।

साधना विद्या

- ◆ यह प्रयोग दिनांक 14.12.97 को आ किसी भी शुक्रवार से प्रारम्भ किया जा सकता है।
 - ◆ यह रात्रि कालीन प्रयोग है, अर्थात् इसे रात्रि में नौ बजे के बाद सम्पन्न करना चाहिए।
 - ◆ इसमें मंत्र सिद्ध प्राण प्रतिष्ठा युक्त 'धनदा यक्षिणी यंत्र' तथा 'यक्षिणी सिद्धि माला' की आश्रयकता होती है।
 - ◆ इस साधना में पीला आसन बिछायें तथा पीली धोती व गुरु पीताम्बर का प्रयोग करें, सिले हुए बख्तों का प्रयोग बर्जित है।
 - ◆ इसमें आप किसी भी प्रकार के तेल का दीपक जला सकते हैं।
 - ◆ पूर्व या उत्तर दिशा को ओर मुंह करके ढैरें।
 - ◆ इसमें 'धनदा यक्षिणी यंत्र' को पीले पुष्प की माला के ऊपर स्थापित कर, धूप, दीप, कुंकुम, अशत आदि से पूजन करें।
 - ◆ इसके बाद निम्न मंत्र का 5 माला जप 11 दिन तक करें —

३८

੧੧ ਅੰ ਸ਼੍ਰੀ ਘਨਕਾਰੈ ਯਜਿਣੀ ਨੁ ਸ਼੍ਰੀ ਅੰ ॥

Om Shreem Dhandayel Yakshani Hum Shreem om

- उपरोक्त मंत्र का जप 11 दिन तक प्रतिदिन सम्पन्न करना चाहिए।
 - 11 दिन के बाद यंत्र व माला किसी नदी या तालाब में विसर्जित कर दें।

इस साधना को कोई भी व्यक्ति सम्पन्न कर अपने जीवन की दरिद्रता को कोसों दूर धकेल सकता है तथा सुख, समृद्धि तथा पूर्ण ऐश्वर्य को प्राप्ति के साथ यक्षिणी का साक्षिध्य मित्र रूप में प्राप्त करता है। मित्र रूप में होने के कारण यक्षिणी हर समय साधक की रक्षा करती है तथा उसके छोटे माटे कार्य वह स्वयं ही सम्पन्न कर देती है।

न्यौलावर - 303/-

— राम चैतन्य शास्त्री हुव

जिजासु व्यक्तियों के लिए शास्त्रीय निर्देश

— विश्वनाथ यादव

जो जिजासु हैं, जो शोध करने वाले हैं, जो योज करने वाले हैं, उनके लिए आवश्यक है, कि वे शास्त्रीय निर्देश का पालन करें और यदि वे इस प्रकार एक शास्त्र सम्मत कार्य सम्पन्न करते हैं, तो उनको उच्चता, सफलता और पूर्णता प्राप्त होती ही है।

यह पत्रिका आपके लिए इस प्रकार के लेख प्रस्तुत कर एक गौरव, एक श्रेष्ठता, एक दिव्यता और तेजस्विता आपको प्रदान करना चाहती है . . .

मृत्यु पथ गामी माता-पिता या परिवार के अन्य सदस्य तथा निकटस्थ व्यक्तियों के लिए जिन शुभ अनुष्ठानों के करने से मर रहे व्यक्ति को सदगति प्राप्त होती है, वे मुख्यतः निम्नलिखित हैं —

प्रथम — मर रहे व्यक्ति के लिए सर्वश्रेष्ठ अनुष्ठान भगवत्पूर्खि है। यह श्रवण, कीर्तन और अर्चना द्वारा किया जा सकता है।

द्वितीय — तीर्थ में मृत्यु से उस व्यक्ति का कल्याण होता है। गंगा, यमुना, सरस्वती, गोदावरी, नमंदा, कावेरी, ताप्रपर्णी, कृतपाला, पर्यस्तिनी, सरयू आदि जलमय तीर्थ हैं। इनके अलावा मथुरा-बृन्दावन, अयोध्या, माया (हरिद्वार, कामाख्या), काशी, काची, विश्वनाथी, अवनिका (उज्ज्वलिनी), शिव मन्दिर, देवी मन्दिर के समीप अथवा

भगवत् भक्त के साक्षिध्य वा गुरु के साक्षिध्य में या श्री गुरु के गृह में मृत्यु होने से सदगति प्राप्त होगी।

तीर्थ में मृत्यु के सम्बन्ध में शास्त्र में कहा गया है —
अयोध्या मथुरा माया काशी काची अवनिका।
पुरी द्वारिका वैदेश सप्लेना मोक्ष दायिका॥
आसु वासे प्रकृत्वनि ये मृता व नरः परम॥
लभने न पुनर्जन्म मातु गर्भे सु वृचित॥

अर्थात् 'अयोध्या, मथुरा, माया, काशी, काची, अवनिका व द्वारिकापुरी — ये सप्तपुरी मोक्षदायिनी हैं। इन पुरियों में जो रहते हैं वा मृत्यु को प्राप्त करते हैं, वे कभी मातृ गर्भ से जन्म ग्रहण नहीं करेंगे।'

तृतीय — मर रहे व्यक्ति को गंगा धेर में रखने से या गंगा जल के समीप उसका शरीर रखने से ही वह मोक्ष लाभ

अन्व कहता है : बाराणसी का गंगा जल हो या पर्णिकर्णिका का जल हो या स्थल हो, मृत्यु होने से मोक्ष लाभ होता ही है। इसके अलावा नगरसागर, संगम विधि गंगा, ऊपर शून्य प्रदेश में मरने से, संगम जल में मरने से या संगम स्थल पर मरने से लाभ होता है।

इस विश्वेश्वरो देव एधा वै पर्णिकर्णिका ।
कृष्णवंतहिता काशी मुक्ति स्त्रै न संशयः ॥

स्वाहा च जले मोक्षो बाराणस्थाम जले स्थले ।
चान्तरीक्षे च गंगाधारं गंगासाग्रगमे ॥

(कूर्म पुराण)

नर्मदा तीर्थ में जो व्यक्ति प्राण त्याग करता है, वह सद्गति हो शिव लोक को गमन करता है। उसी तरह अमुना जन्म में जो व्यक्ति प्राण त्याग करता है, वह सद्गति को प्राप्त करता है।

चतुर्थी — जिस स्थान पर शालिग्राम शिला विद्यमान है, उन स्थान पर श्री हरि वास करते हैं। जो व्यक्ति शालिग्राम शिला के समीप प्राण परित्याग करता है, वह विष्णु लोक प्राप्त करता है।

पंचम — यदि किसी व्यक्ति की तुलसी कानन में मृत्यु होती है, तो वह यम की अवज्ञा कर श्री हरि के साथ उनके धाम जाता है।

षष्ठम — तिल व कुश परम पवित्र हैं, क्योंकि इन द्वयों से विष्णु की कृपा शक्ति निहित रहती है। इस कारण वे आत्मर व्यक्ति की दुर्गति का निवारण करते हैं। नर रहे व्यक्ति के मृत्यु काल में उसके दोनों हाथों में कुश की स्थापना करना चाहिए।

सप्तम — लवण को दिव्य रस माना गया है, अतः लवण रस का दान सर्व ब्रेष्ट है। यदि किसी व्यक्ति के बचने की सम्भावना नहीं हो तथा उसके प्राण निकालने में विलम्ब हो रहा हो, तो उसको जमीन पर रख लवण दान करना चाहिए, ऐसा करने से शीघ्र ही प्राण वियोग व सद्गति प्राप्त होती है।

अष्टम — मनुष्य की आसन मृत्यु जन्म गोमूत्र, गंगा मृतिका, अन्य तीर्थ मृतिका और गंगादि तीर्थ जल, नारायण चरणमय तथा कुशोदक द्वारा स्नान करना चाहिए। इसके बाद पवित्र खस्त्र द्वारा परिधावन कर गोबा लिपा भूमि या गंगादि तीर्थ दक्षिणाग्रकुश आसारण करना चाहिए। इसके बाद तिल विकिरण कर पूर्व या उत्तर शीर्ष कर मर रहे व्यक्ति को

शायित कर देना चाहिए और उस स्थान पर शालिग्राम शिला, तुलसी व गव्यधृत दीप रखना चाहिए। इसके बाद अष्टाक्षर, द्वादशाक्षर विष्णु मंत्र से अथवा दशाक्षर वा अष्टादशाक्षर कृष्ण मंत्र से श्री कृष्ण का बोडशोपचार, दशोपचार वा पंचोपचार पूजन व ध्यानादि कर यशाशक्ति मंत्र जप करना चाहिए। गो, भूमि, तिल, स्वर्ण, घृत, खस्त्र, धन, गुड़, रजत व लवण इन दस द्रव्यों को दस दान कहते हैं। मर रहे व्यक्ति को यह दस द्रव्य प्रदान करना चाहिए तथा विभिन्न प्रकार के अन्य दान करना चाहिए।

नवम — मर रहे व्यक्ति यदि बासुदेव मंत्र या विष्णु मंत्र जप करे और ऐसा करते हुए उसके प्राण निकाल लें, तो उसे सद्गति प्राप्त होती है।

दसम — मृत्यु काल सत्रिकट जान यदि कोई व्यक्ति शास्त्र विधि के अनुसार अनशन ब्रत या प्रायोक्त्वेशन करता है, तो वह पुनः संसार में परिभ्रयण नहीं करेगा।

मृत्यु एक कठिन व दुःखजनक प्रक्रिया है। मर रहे व्यक्ति के साथ उसके निकटस्थ व्यक्ति को भी इससे आत्मिक पीड़ा होती है। इन शास्त्रीय अनुष्ठानों से उसको कितनी सद्गति होगी, क्या उसे सचमुच मोक्ष प्राप्ति होगी, यह विद्याद का विषय है। वैज्ञानिक कसौटी पर ये खरे उत्तरने से रहे, फिर भी इनमें श्रद्धा रही है।

किन्तु परम प्रिय का वियोग, दुःख के समय उसे अनुष्ठानों में फँसाये रहने के कारण, उस दुःख को लाघु किया जा सकता है। ये खचीले आडम्बर पूर्ण अनुष्ठान क्या सचमुच एक यापी को मोक्ष प्रदान कर सकते हैं?

शास्त्र का उत्तर है —

जो अदर्भिक, हिंसा रहित, पवित्राहारकारी, जितेन्द्रिय, विशुद्धमति, सत्यवादी, धर्मकार्य में दृढ़ व विवेककारी तथा जिसके हस्त, पाद, वाक और मन सुसंयत हैं तथा जो विद्वान्, तपस्ची तथा सत्रकीर्ति सम्पन्न हो, वही व्यक्ति तीर्थ फल का लाभ प्राप्त करता है।

पापात्मा, नास्तिक, संशयात्मा, कुतक्निष्ठ व अश्रद्धावान (गुरु व शास्त्र वाक्य में दृढ़ विश्वाम रहित) — ये पांच प्रकार के व्यक्ति तीर्थ फल का लाभ नहीं पाते।

महाभारत में कहा गया है, जो व्यक्ति लोभी, खल, क्लू, नास्तिक व विषयासक एवं पाप युक्त होता है, वह सभी तीर्थों में स्नान करके भी जैसा मलीन था, जैसा ही मलीन रह जाता है।

ਸਾਧਨਾ ਬਿਨੁ ਸਿਛਿ ਨਹੀਂ
ਕਾਹੇ ਹੋਤ ਅਧੀਰ

साधना जीवन का आवश्यक तत्व है,
बिना इसके जीवन में प्रगति, सफलता, श्रेष्ठता सम्भव नहीं.
पर यह सब कुछ सम्भव है संयम से . . . दैर्य से . . .
गिर्छा से . . . और पूर्ण समर्पण विश्वास से . . .
इस बार इन्हीं तत्वों को आधार बना कर कोई भी साधना करिये,
और आप स्वयं देख लीजिये, कि यह पत्रिका,
इसके लेख और सुझाव कितने अग्रलय है . . .

स्याधना का क्षेत्र बहुत व्यापक है, बहुत विस्तार लिए हुए हैं . . . 'साधयति इति साधना' अर्थात् खुद को साथ लेना, खुद को पूर्ण कर लेना ही साधना है। इस क्षेत्र में कई प्रकार के नियम हैं, जिनके बिना साधना में व्यक्ति को सफलता सदैशस्यद हो रहती है। कई चार साधकों के पत्र आते हैं, कि उन्हें साधना में सफलता नहीं मिल रही है, उनको अनुभव नहीं हो रहे हैं, उनका काम नहीं बन रहा है आदि-आदि।

इनका काम नहीं बल रहा है ज्ञान - ज्ञाय।
इन सबका मूर्ख्य कारण ही सकता है — नियमों
का सही ढंग से पालन न करना। प्रत्येक साधना के अपने
विशिष्ट नियम होते हैं, जिनको समझे बिना व्यक्ति को
सफलता मिल ही नहीं सकती। इसलिए व्यक्ति को बिना
किसी परेशानी और अधीरता के इन सबको पहले समझना
चाहिए और फिर साधना समझ करनी चाहिए।

आप स्वयं देखा तेरे, कि जीवन के प्रत्येक क्षेत्र में नियमों का पालन करता ही पड़ता है। अगर सड़क पर गाड़ी चलानी है तो नियम, खेतों में अलग नियम, खाना बनाने में 'भी नियम, आफिस के अलग नियम, स्कूल के

अलग नियम . . . नियम तो संसार की प्रत्येक चीज में है और अगर नियम न हों, तो सब गड़बड़ हो जाता है। आप खुब कल्पना करके देख लें।

कई साधकों के उदाहरण हमारे पास ऐसे हैं, जिन्होंने साधना में सफलता पाई है। क्या आप यह सोचते हैं, कि वे पहली बार में ही सफल हो गए थे . . . नहीं, परन्तु उनमें जोश, हिम्मत और लगन थी, उन्होंने दिल छोटा नहीं किया, उन्हें पता था, कि पुराने कर्मों एवं दोषों की वजह से उन्हें सफलता प्राप्ति में खिलाड़ हो रहा है। साथ ही वे यह भी जानते थे, कि जो साधना वे कर रहे हैं, वे पूर्ण दूषित कर्मों के मार्जन में काम आ रही है . . . वे व्यर्थ नहीं जा रही हैं।

और इन साधकों में हैं भग्न प्रदेश के प्रकाश जैन, जिनको तारा साधना में सफलता प्राप्त करने के लिए तीन बार प्रयास करना पड़ा, विहार के मुकेश चौधरी को पांच प्रयासों के बाद ही काली के दर्शन हुए। दिनेश शर्मा (दिल्ली) को महालक्ष्मी के दर्शन के लिए तीन बार प्रयास करने पड़े और राजस्थान के जयपराज मलंकी को तो प्रथम बार में ही भैरव के प्रत्यक्ष दर्शन हो गए थे . . .

वह तो व्यक्ति के बदल के दृढ़ निष्ठत्व न निपटे करता है, कि वह साधना को बीच में जी न छोड़ कर उसमें जी जन में लगा रहे . . . निष्ठा प्राप्त होती है, उसमें उत्तो भर भी सन्देह नहीं, पर यदि आप खुद

की हाथ पर हाथ रख कर बैठ जावेंगे, तो फिर किस तरह सफलता मिलेगी?

धैर, आज मैं साधना के उन मुख्य सूत्रों को स्पष्ट करनगा जो इस क्षेत्र में अत्यधिक महत्वपूर्ण हैं और जिनको निष्ठाने और उनका पूर्णतः पालन करने के उपरान्त व्यक्ति साधना में असफल हो ही नहीं सकता।

इनको साधना के क्षेत्र में 'पंच साधन' कहते हैं . . . और लगभग सभी प्रमुख साधनात्मक ग्रंथों में कहा जाता है, कि जो व्यक्ति इन पंच साधनों को समझ लेता है, तो उसके लिए फिर कोई ऐसी साधना नहीं, जिसे वह निष्ठा न कर सके। इन ग्रंथों में पंच साधनों का विवरण निम्न उक्तार से प्राप्त होता है —

1. स्थान, 2. समय, 3. सामग्री, 4. संख्या, 5. संयम।

1. स्थान

स्थान का साधना के क्षेत्र में बहुत अधिक महत्व है। यदि इसके चयन में चूक हो जाय, तो साधना में असफलता ही मिलती है। स्थान पवित्र और दिल को अच्छा लगाने वाला होना चाहिए, जहाँ मन शांत रहे और साधना में विना किसी व्यवधान के रूप सके। बह एकान्त में हो, ताकि कोई शोरगुल न हो और सबसे बड़ी और अहम बात यह है, कि प्रथम दिन जहाँ साधना प्रारम्भ करें उसी स्थान पर ही सम्पूर्ण साधना सम्पन्न करें, उसी स्थान विशेष एवं उसी दिशा की ओर मुँह करके तथा उसी आसन पर बैठें। ऐसा करना उचित नहीं, कि आज एक कक्ष में बैठ ली, तो कल दूसरे कक्ष में, इस प्रकार से स्थान बदलना पूर्णतः वर्जित है। यदि किन्हीं विशेष कारणों से स्थान परिवर्तन करना पड़े, तो उससे पूर्व गुरु आज्ञा अवश्य ले लें।

2. समय

समय का भी इस दृष्टि से अत्यधिक महत्व है।

ॐ भंते-तत्-थत् विज्ञान अवदृश ७७ ॥७॥

कई साथकों के उदाहरण हमारे पास पुरे हैं, जिन्होंने साधना में सफलता पाई है। क्या आप वह सोचते हैं, कि वे पहली बार में ही सफल हो गए थे . . . नहीं, परन्तु उनमें जोश, हिम्मत और लगन थी, उन्होंने दिल लोटा नहीं किया, उन्हें पता था, कि पुराने कर्मों पुर्व दोषों की वजह से उन्हें सफलता प्राप्ति में विलग्न हो रहा है। साथ ही वे यह भी जानते थे, कि जो साथना वे कर रहे हैं, वे पूर्व दूषित कर्मों के मार्जन में काम आ रही है . . . वे व्यर्थ नहीं जा रही हैं।

साधनाएँ अधिकतर रात्रि में ही सम्पन्न की जाती है, ताकि व्यक्ति विना किसी परेशानी के अपनी साधना सम्पन्न कर सके। स्वयं विज्ञान भी इस बात को स्वीकारता है, कि व्यक्ति का

सूक्ष्म मन दिन की अपेक्षा रात्रि को अधिक जाग्रत हो जाता है, जो कि साधना करने के लिए अत्यन्त अनुकूल है। विशेष बात यह है, कि व्यक्ति प्रथम दिन जिस समय पर साधना शुरू करे, रोज उसी समय पर ही साधना प्रारम्भ करे। उदाहरणतः अगर प्रथम दिन वह ग्यारह बजे रात्रि को साधना शुरू करता है, तो फिर हर गत वह ग्यारह बजे ही साधना में बैठे। ऐसा करना उचित नहीं, कि एक दिन दस बजे शुरू कर दी, तो दूसरे दिन साढ़े दस और तीसरे दिन ग्यारह बजे। चार-पांच मिनट इधर-उधर ही जाय, तो कोई खास फर्क नहीं पड़ता।

दूसरे, अपनी साधना के लिए काल अवधि भी निश्चित कर लीजिए, कि मैं 11 दिन अथवा 21 दिन या 40 दिन तक यह साधना करूँगा और एक बार संकल्प लेने के बाद उस पर अटल रहें।

3. सामग्री

सामग्री का अर्थ वे सब वस्तुएँ, जिनसे पूजन होना है, जो साधना में काम आती है। यत्र, माला जो पहले दिन इस्तेमाल की जायें, उनको ही सम्पूर्ण साधना में उपयोग करें। यह उचित नहीं, कि रोज अलग-अलग माला से मंत्र जप करें, ऐसा वर्जित है। इसके अलावा जो पूज्य, जो फल, जो मिठाइ प्रथम दिन अपित वही गई है, वही नित्य अपित करनी चाहिए। रोज अलग-अलग खाद्य पदार्थ अपित करना उचित नहीं। इन छोटी-छोटी बातों का ध्यान रखना चाहिए, नहीं तो सारी मेहनत व्यर्थ जाने में देर नहीं लगती।

4. संख्या

संख्या का अर्थ है, कि रोज कितना मंत्र जप करना है और फिर जब साधक एक बार यह निश्चित कर ले, तो विना भूल के उन्हें ही मंत्र नित्य जायें।

उदाहरणतः यदि साधक निष्ठत्व कर ले, कि मैं

नित्य 500 मंत्र जप करुंगा, तो फिर उसे नित्य उतना ही जप करना चाहिए। ऐसा उचित नहीं, कि एक दिन 200 जप लिए और दूसरे दिन 800, यह नियमों के विपरीत है। अतः ऐज 500 मंत्र जपने पड़ेंगे, ज्यादा बेशक जप कर लें, परन्तु इस बात का विशेष ध्यान रखें, कि कम मंत्र जप किसी हालत में न दो।

५. संयम

संयम का स्थान तो साधना क्षेत्र में सर्वोपरि है ही। साधनात्मक ग्रंथों में तो यहाँ तक कहा गया है, कि यदि प्रथम चार को मान कर भी साधक संयम का पालन नहीं करता, तो उसे साधना में सफलता मिलना सम्भव नहीं।

संयम का तात्पर्य है — खाशाचर्य छत का पालन

करना, शुद्ध, सात्त्विक वस्तुओं को ही ग्रहण करना तथा पवित्रता पूर्वक रहना। अगर स्त्री साधना कर रही है, तो उसे ऋतुकाल में साधना त्याग देनी चाहिए और ऋतुकाल के समाप्त होने पर अपनी साधना को पुनः वहाँ से प्रारम्भ करना चाहिए, जहाँ उसने छोड़ी थी। ऐसा करने से उसकी साधना खण्डित नहीं होती।

इसके अतिरिक्त संयम का अर्थ मानसिक विचारों पर नियन्त्रण भी है, क्योंकि थोड़े से कुछ विचारों या क्रोध को फलस्वरूप ही व्यक्ति वह तपस्या नष्ट कर देता है, जो वह साधना से प्राप्त करता है। अतः इसका विशेष ध्यान रखना चाहिए।

ये 'पंच साधन', जिनके विषय में वर्णन किया गया है, इनका पालन प्रत्येक साधना में अत्यन्त

ही आवश्यक है और जिनको आत्मसात् किए बिना व्यक्ति साधना में सफलता प्राप्त कर ही नहीं सकता। इनमें छोटी सी गलती भी सारी मेहनत को व्यर्थ कर सकती है।

वैसे तो ये 'पंच साधन' अत्यधिक उपयोगी और सफलतादायक हैं, परन्तु यदि युरु इनसे अलग कोई विशेष नियम भी देते हैं, तो साधक को उसे बेहिचक स्वीकार करना चाहिए, क्योंकि इसका अर्थ यह है, कि युरु साधना की जिम्मेवारी अपने कापर ले रहे हैं, अतः साधना में सफलता निश्चित है।

एक बात और, जो साधना में विशेष स्थान रखती है, वह है 'गोपनीयता'। अपनी साधना के विषय में किसी को न बताएं, अपनी पत्नी, पुत्र को भी नहीं, सामान्य प्रकार से नहों, किसी को भी अपना मंत्र न बताएं। ऐसा उचित नहीं,

कि यूरे मुहल्ले में आप खबर फैला दें, कि मैफला साधना कर रहा हूँ। ऐसा करना अपने पैर पर स्वयं कुल्हाड़ी भारने के समान है... ऐसे में कोई साधना फलदायक हो ही नहीं सकती।

अतः साधक को चाहिए, कि वह इन विशेष नियमों का पालन करता हुआ ही साधना सम्पन्न करे, जिससे उसे अनुकूल परिणाम शीघ्रताशीघ्र प्राप्त हो सकें। यदि किसी वजह से साधना में सफलता न मिले, तो हटाय छोटा न करें और पुनः पूर्ण जोश एवं पौरुषता को साथ उस साधना में संलग्न हो जाएं, क्योंकि आगे बढ़ना ही पौरुषता है और जो ऐसा करते का साहस रखता है, मिठियां मात्र उसी के ही गले में वर माला ढालने को व्यग रहती है।

— संजीव, जोधपुर

क्या आप साधना सम्पत्ति करने जा रहे हैं? यदि हाँ, तो पहले इसे पढ़ लें!

किसी भी साधना में सफलता प्राप्त करने के लिए जिस प्रमुख आधार की आवश्यकता होती है, वह ही साधक की श्रद्धा तथा उसका दृढ़ निश्चय। कभी-कभी ऐसा देखा जाता है, कि साधक पूर्ण श्रद्धा के साथ किसी साधना को सम्पन्न करता है, किर भी उससे कृच्छर न कृच्छर न्यूनताएं रह जाती हैं, जिनकी वजह से उसकी सफलता संदिग्ध हो जाती है।

हमारे साधनात्मक ग्रंथों में इस प्रकार की परिस्थितियों के उचित समाधान हेतु अनेक साधनाएं वर्णित हैं। उनमें से एक ऐसा ही लघु प्रयोग यहाँ प्रस्तुत किया जा रहा है, जिसे यदि साधना में पूर्ण सम्पन्न कर लिया जाय, तो पूर्ण सफलता मिलने में कोई सन्देह नहीं रह जाता।

यह एक तीव्र सावर प्रयोग है। साधक को चाहिए, कि वह सुखासन या बीरासन में उत्तर दिशा की ओर मुँह करके बैठ जाए तथा अपने सामने 'सावर गुटिका' स्थापित कर उसे एकाग्रधित हो कर देखते हुए निम्न मंत्र का 101 बार जप करे।

मंत्र

॥ॐ द्विलि मिलि मिलि द्विलि ॐ॥

Om Hill Mill Mill Hill Om

108 बार जप करने के पश्चात् साधक मूल प्रयोग या साधना को प्रारम्भ करे। साधना समाप्त होने पर अन्य सामग्रियों के साथ ही गुटिका को भी जल में विसर्जित कर दे।

न्यौदावर — 120/-

यदि आप अपनी सन्तान को श्रेष्ठ अद्वितीय बनाना चाहते हैं,
तो सम्पन्न करिए यह गर्भरक्षा प्रयोग, जिसे
सम्पन्न करके न केवल गर्भिणी स्त्री गर्भपात के भय
से मुक्त होगी, अपिनु वह एक श्रेष्ठ और
उच्चकांटि की सन्तान को
उत्पन्न करने में सक्षम होगी

गर्भ रक्षा प्रयोग

प्र ल्येक दम्पति का यह सपना होता है, कि उसकी सुन्दर, स्वस्थ एवं दिव्य मन्त्रान हो और उन्हें भरपूर सन्नान सुख पिले, उनकी गोद में ऐसी सन्नान जन्म ले, जो अव्यन्त मेधावी हो और अपना तथा अपने मां-बाप का नाम रोशन करे। सन्नान सुख क्या होता है, यह जाप उन दम्पति से जान सकते हैं, जिनके आगंत में बच्चों की किलकारियां गृजती हैं। मां-बाप अपने बच्चे को वात्सल्य एवं स्नेह में पूकारते हैं, तो बच्चा दौड़ता हुआ उनकी गोद में लिपट जाता है। कितना मपत्त एवं खात्सल्य का भाव उस समय उनमें उत्तम होता है, यह कल्पना करते ही मन भाव विभोर हो जाता है।

लेकिन इस देश में लाखों दम्पति ऐसे भी हैं, जिन्हें सन्तान सुख कठिपय कारणों से नहीं मिल पाया है। वे लोग सन्तान प्राप्त करने के लिए तरह-तरह के

बार-बार गर्भपात हो जाना उस दृष्टि के लिए विड्मबना बन जाती है। इससे उस महिला के स्वास्थ्य में काफ़ी चिरावट भी आ जाती है, रठ की कमी हो जाती है, बार-बार गर्भपात से गर्भशिरा की नई धारण की क्षमता समाप्त हो जाती है और कभी-कभी तो अत्यधिक रठलाव से उस महिला के शीतल को खतरा भी उत्पन्न हो जाता है।

उपाय व चिकित्सा करवाते हैं, किन्तु उन्हें लाभ प्राप्त नहीं होता है।

इन कारणों में एक मुख्य कारण गर्भपात्र भी है। बार बार गर्भपात्र हो जाना उस दम्पति के लिए बिड़बूना बन जाती है। इससे उस महिला के स्वास्थ्य में काफी निशावट भी आ जाती है, रक्त की कमी हो जाती है, बार बार गर्भपात्र से गर्भाशय की गर्भ धारण की क्षमता समाप्त हो जाती है और कभी-कभी तो अत्यधिक रक्तसामग्री से उस महिला के जीवन को खतरा भी उत्पन्न हो जाता है।

इसकी पृष्ठभूमि में कई कारण हो सकते हैं, जिसमें गर्भवती महिला द्वारा असावधानी रखना भी एक प्रमुख कारण होता है, वहीं अन्य आगिक एवं गर्भवन्धन आदि कारण भी हो सकते हैं, जिसमें बे दुखी प्रबंधित जाते हैं

अलौकिक उचित निदान
में ज्ञातव्य में जीवन
की एक श्रेष्ठता से
संबंधित हो जाते हैं।

एक बार
एक मरीज ऐसी ही
स्थिति मेरे समझ
जाता। मैं अपने
कल्पनिक पर बैठा

लैंगिकों की चिकित्सा में व्यस्त था, उसी समय एक सञ्जन
इसके हुए मेरे पास आये और बोले — 'डाक्टर साहब! मैं
एक मरीज की लाया हूं, जो अत्यन्त गम्भीर अवस्था में है,
कृपया उसे जल्दी देख लीजिए।'

मैंने पूछा — 'भाई! रोगी कहां है और उसे क्या
परेशानी है?'

उन्होंने कहा — 'डाक्टर साहब! मरीज मेरे पत्नी है
और बाहर खड़ी एम्बुलेंस में स्टेचर पर लेटी हुई है, आप वहीं
से चल कर देख लीजिए।'

मैंने पूछा — 'बात क्या है?'

उसने कहा — 'क्या बताऊं डाक्टर साहब! मेरी पत्नी
लौन महीने के गर्भ से है और उसे दो दिन से पेट में दर्द और
रक्तस्राव हो रहा है। पहले भी दो बार ऐसा हो चुका है। हमने
महिला चिकित्सक को दिखाया था, लेकिन गर्भपात नहीं रुका।
इस बार हम पहले से ही महिला चिकित्सक की देख-रेख में
चिकित्सा करवा रहे थे, किन्तु फिर भी ऐसी दशा हो गई है।
हमारी मदद कीजिए।'

मैंने उन्हें महिला चिकित्सक के पास (मरीज को)
ले जाने की सलाह दी। लेकिन वे मेरे सामने गिरणीदाने लगे
— 'नहीं डाक्टर साहब! हमें आपका धरोशा है और आप इस
समय कुछ कीजिए, थोड़ा स्वस्थ होने पर हम अपने मरीज को
महिला चिकित्सक के पास ले जायेंगे।'

मैं अन्य रोगियों को थोड़ा रुकने की सलाह देकर उनके
साथ मरीज को देखने एम्बुलेंस के पास गया। मैंने उनकी पत्नी
के स्वास्थ्य का सामान्य परीक्षण किया, तो मुझे स्थिति गम्भीर
नजर आई। मैंने इस बारे में उन्हें अवगत कराया और कहा, कि
तुम अपने रोगी को महिला चिकित्सक के पास ले जाओ, लेकिन
वे नहीं माने और पुनः विनती करने लगे। मुझसे उनकी दशा
देखी नहीं गई। मैंने उनसे कहा, कि यदि तुम नहीं मानते हो तो मैं
एक दिन देख लेता हूं अन्यथा आपको अपने रोगी को सरकारी

मैं परम पूज्य गुरुदेव से दीक्षा
प्राप्त शिष्य हूं और मुझे जब भी अपने कार्य
में जटिलता अनुभव होती है या कोई आकर्षित
समस्या सामने आ जाती है, तो मैं पूज्य गुरुदेव को
द्यान में बैठ कर अपनी समस्या पुर्व कठिनाई के
निराकरण को लिए उनसे प्रार्थना करता हूं और द्यान
में मुझे मार्गदर्शन प्राप्त हो जाता है।

मैंने रक्तस्राव को रोकने का एक इन्जेक्शन दिया और नर्स को
आवश्यक देख-रेख की हिदायत देकर अन्य रोगियों को देखने
लगा।

इसके उपरान्त मैंने उस गर्भवती महिला के पूर्व में
किये गये उपचार के सभी आवश्यक रिपोर्टों का सूचना
पूर्वक अध्ययन किया और स्पष्ट हुआ, कि यदि इस बार भी
इस महिला का गर्भपात थोड़ा गया, तो भविष्य में वह कभी मां
नहीं बन सकेगी। एक सम्भावना यह भी थी, कि यदि गर्भपात
हो गया, तो उसके जीवित रहने की सम्भावना कम थी। मेरा
मन बहुत बेचैन हो गया, मैं स्वयं में बहुत परेशान और
चिन्तित हो गया। कभी मन करता था, कि मरीज को अभी
बड़े अस्पताल भेज दू, यह जाने और इसका भाग्य ! किन्तु
मानवता और चिकित्सक होने के अहसास ने मुझे झाकझोर
दिया और अन्नारात्मा ने मुझे आवाज दी, कि मुझे उनके त्रिए
कुछ करना चाहिए।

मैं रात्रि में अपने निवास पर गया और 9 बजे के बाद
अपने दैनिक कर्म से निपट कर अपने पूजा स्थान में बैठा और
गुरुदेव का ध्यान करने लगा। यहां पर मैं स्पष्ट कर दू, कि मैं
परम पूज्य गुरुदेव का काफी पहले से दीक्षित शिष्य हूं और
मुझे जब भी अपने कार्य में जटिलता अनुभव होती है, तो मैं
पूज्य गुरुदेव के ध्यान में बैठ कर अपनी समस्या एवं कठिनाई
के निराकरण के लिए उनसे प्रार्थना करता हूं और ध्यान में मुझे
मार्गदर्शन प्राप्त हो जाता है। ध्यान में बैठ कर मुझे जो मार्गदर्शन
प्राप्त हुआ, वह अलौकिक और मन को प्रसन्नता प्रदान करने
वाला था।

ग्रातःकाल जब मैं अपने दैनिक कार्य सम्पादित
कर अपने कलीनिक में बैठा, तो मैंने उन सञ्जन को बुलाया
और उन्हें सलाह दी, आप इलाज के अतिरिक्त इस 'गर्भे
रक्षा प्रयोग' को भी सम्पन्न कर लें। हो सकता है, आपको
लाभ प्राप्त हो जाए। उन्होंने कहा, कि प्रयोग आप स्वयं

अस्पताल से जाना
होगा। वे मेरी चात
मान गये और मैंने रोगी
को बाईं में भर्ती कर
लिया। जोच करने पर
याम, कि रोगी का
रक्तचाप अत्यधिक
न्हीं नहीं था एवं
बुखार भी नहीं था।

सम्पन्न कर दीजिए, हमें प्रयोग के बारे में कुछ पता नहीं है, आप हमारी मदद करें।

उनके विनम्र भाष्य को देख कर मैंने वह 'गर्भ रक्षा प्रयोग', जो पूज्य गुरुदेव ने मुझे व्यान में निर्देशित किया था, सम्पन्न किया और उसका परिणाम एक दिन बाद ही दिखाई देने लगा और धीरे-धीरे उस महिला के स्वास्थ्य में सुधार आने लगा और कुछ ही दिनों में वह पूर्ण रूप से स्वस्थ हो गई। जब उसका प्रसव का समय नजदीक आया, तो मैंने उसे महिला चिकित्सक के पास ले जाने की मतलाह दी और वहां पर उस महिला ने स्वस्थ बच्चे को जन्म दिया। उस समय स्पष्ट हुआ, कि उसके गर्भाशय का आकार सामान्य अवस्था से छोटा था, जिससे उसे बच्चा होने की सम्भावना बहुत कम थी।

यह इस दुर्लभ एवं गोपनीय 'गर्भ रक्षा प्रयोग' के ही अनुकूल परिणाम एवं पूज्य गुरुदेव की कृपा दृष्टि से ही सम्भव हुआ। मैंने जो प्रयोग सम्पन्न किया था, उसे मैं पत्रिका के पाठकों के लिए एवं जनहितार्थ पत्रिका में दे रहा हूं, जिससे कि इसका लाभ जल्द तम्हार दम्पतियों को प्राप्त हो सके।

साधना विद्यान

- ३ यह प्रयोग आप 5.12.97 को या किसी भी शुक्रवार से सम्पन्न कर सकते हैं।
- ३ रात्रि ९ बजे के बाद स्नान आदि से निवृत्त होकर, स्वच्छ पौली धोती धारण कर, पीला आसन बिछा कर, उत्तर दिशा की ओर मुंह कर बैठ जायें।
- ३ साथना उपकरण तथा पूजन सामग्री जैसे - 'गर्भ रक्षा यंत्र', 'गर्भ रक्षा माला', जलपात्र, कुंकुम, अक्षत, पुष्प, अगरबत्ती, दीप व मैत्रेयी आदि

एकत्रित कर लें।

सर्वप्रथम पवित्रीकरण कर मंत्र सिद्ध प्राण प्रतिष्ठा युक्त 'गर्भ रक्षा यंत्र' को अपने सामने बाजोट पर, जिस पर पीला कपड़ा बिछा हो, स्थापित कर दें और उसके सामने ही 'गर्भ रक्षा माला' को भी स्थापित कर दें।

इसके बाद गणेश पूजन तथा गुरु पूजन सम्पन्न करें। इसके पश्चात् प्रयोग सम्पन्न करने हेतु जल अपने दाहिने हाथ में लेकर संकल्प लें। अपने नाम व गोत्र का उल्ल्वरण करें और जिसके लिए यह प्रयोग सम्पन्न किया जा रहा है, उसके गर्भ की रक्षा की कामना करते हुए यह जल भूमि पर छोड़ दें। इसके पश्चात् यंत्र एवं माला का सामान्य पूजन सम्पन्न करें और नैवेद्य अर्पित करें।

पहले गुरु मंत्र का 4 माला जप करें, इसके उपरान्त निम्न मंत्र का 21 माला मंत्र जप 5 दिन तक नित्य सम्पन्न करें।

मंत्र

//ॐ यं हं द्वं //

OM YAM HAM RAH

प्रतिदिन मंत्र जप की समाप्ति के पश्चात् गुरु आरती सम्पन्न करें।

प्रयोग समाप्त होने पर पांचवें दिन 'गर्भ रक्षा यंत्र' व 'गर्भ रक्षा माला' को नदी में विसर्जित कर दें। ऐसा करने से प्रयोग पूर्ण होता है और गर्भ की पूर्ण रक्षा होती है।

नौआठर - 300/-
— राजेश गुप्ता

अक्टूबर माह में सम्पन्न होने वाली साधनाएं, जो अगस्त माह के अंक में प्रकाशित हैं -

गुरुवार	इवोपी	विशुद्ध चक्र के द्वारा विभिन्न रोगों के निवारण की साधना
6.10.97	महाकाली साधना	महाकाली के अष्ट स्वरूप की सिद्धि हेतु अद्वितीय साधना
12.10.97	पापांकुशा एकादशी	पूर्वजन्म कृत दोष निवारण की साधना
14.10.97 से	दीपावली के 108 प्रयोग	दीपावली पर्व पर अपने जीवन के विविध पक्षों से सम्बन्धित समस्याओं के निदान हेतु लघु प्रयोग
14.11.97 के बीच	चन्द्रज्योत्सना अप्सरा साधना	चन्द्रज्योत्सना अप्सरा को सिद्ध करने की साधना
26.10.97	धन प्रवोदशी	लक्ष्मी प्राप्ति व आकस्मिक धन प्राप्ति के दो अद्वितीय प्रयोग
28.10.97		

समझव ही नहीं है साधना प्रेम के बिना

प्रेम जीवन का एक अमूल्य आधार है, प्रेम के बिना हृदय में समर्पण उत्पन्न नहीं होता। किसी के प्रति समर्पित हो सके, किसी के प्रति अनुरक्ति प्राप्त की जा सके, किसी के प्रति अपने आपको पूर्ण रूप से विलीन कर सकें, यह छिथा केवल प्रेम के माध्यम से ही सम्भव है। इसलिए संसार में प्रेम को सबसे उच्चादा महन्य दिया गया है, वह चाहे जीवन का व्यक्तिगत क्षेत्र हो, चाहे साधना का क्षेत्र हो। साधना के लिए जरूरी है त्याग, हृदय का उच्छ्वास, विश्वित कण्ठ, आँखों की अथुवार, समर्पण और असीमित प्रेम।

यदि आपके हृदय में भी प्रेम का सञ्चार हो और फिर आप साधना करें, तो आप स्वयं अनुभव कर सकेंगे, कि प्रत्येक साधना आपके लिए सहज सुलभ हो गयी है और साधना में सफलता आपके लिए उपायर स्वरूप बन गई है।

हसरते दबाने को गये थे यजवृष्टि
मगर इक नई जगा कर आये हैं॥

ब्रहा क्या है, पूर्णता क्या है, प्राण तत्त्व के जाग्रत होने का अर्थ क्या है — इन बड़े-बड़े शब्दों के अर्थ को मैं किस प्रकार से समझूँ? मैं शब्द तो तभी से ही बेमानी हो गये हैं, जब से मैंने आपको देखा है, जब से आपको अपने सञ्जिकट अनुभव किया है। कुछ गया था इस बाती घमक दृष्टक से, अहुत आकर्षण था इसमें, पर अब यही आकर्षण चुभने लगा है। मैं क्या हूँ, मेरा अस्तित्व क्या है — सब कुछ मिट गया है, एक नकली आवरण, एक लबादा होते-होते थक गया हूँ मैं। एक यंत्रवत् जीवन जीते-जीते अव्यानक एक स्वर्णिम क्षण आया, जब आपसे रु-ब-रु हुआ, पता नहीं वह प्रकृति द्वारा निर्मित क्षण था या फिर आपका प्रेम या मेरा भागव... कुछ दिनों तक मैं अस्थिर चित्त का हो गया, करना कुछ चाहता था, करता कुछ था, देखना कुछ चाहता था और दिखाता कुछ और... समझ नहीं पा रहा था, कि यह क्या घटित हो रहा है।

पहली बार एहसास हुआ, कि दिल का धड़कना किसे कहते हैं, खुमारी में दूबना क्या होता है, तड़फ, किसी से मिलने की चाहत क्या होती है... और मैं दिन भर दीवारों की ओर ताकता हुआ अपने को समझने की कोशिश करता रहता, पर स्वयं को जितना समझने का प्रयास करता, उतना ही उलझता जाता... और फिर अव्यानक, एक बार फिर आपसे मुलाकात हुई... वह क्षण ऐसा था, जब मेरे न चाहते हुए भी मेरे कदम आपकी ओर बढ़ चले, आपसे मिलने के बाद ऐसा लगा, जैसे वही तो है वे जिन्हें मैं दूँड़ रहा हूँ, जिनसे मेरा आन्तरिक समन्वय है,

लेकिन जब मैं इस सम्बन्ध का अर्थ भी नहीं जानता था।

परन्तु फिर कुछ ऐसा घटित हुआ, कि मेरे धौतिक आवारण ने मुझसे पूछा, कि तू एक अनजान व्यक्ति से मिलने को इतना आतुर लगो है, क्यों

तू उन पर न्यौछावर हो जाना

चाहता है, तुझे तो उनका पूर्ण परिचय भी नहीं जात है, फिर किस आधार पर उन्हें एक बार में ही अपना सबस्त्र यानने लगा है। पर जो अन्यथा की बेदैनी थी, जो तड़फ थी, वह मुझे चैन नहीं लेने देती थी, वह मुझसे कहती, कि जानता नहीं है क्या, पिछले कई जन्मों से तू तू जानता है, फिर किस बात से पीछे हट रहा है, मात्र कुछ समय की दूरी से इतना परिवर्तित कर देगी क्या और फिर आपका चेहरा, वही आपकी चित्त को चुराने वाली मुस्काराहट, हृदय को बेधने वाली दृष्टि आंखों के सामने धूम जाती और उन आंखों में जो अपनास्त्र, जो ऐसा अनुभव होता, वह मुझे और भी बेदैन कर देता, फिर एक जुनून में ऊपर हावी हो जाता और मैं अपने रास्ते से मुड़ कर पूँँ; उस रास्ते पर पहुँच जाता, जहां आप खड़े होते। कड़ बार खुद को धिक्कारता थी, कि वह क्या ज़राफ़ी है? क्या वह डिचित है?

परन्तु जब हृदय की बात होती है, तब यस्तिक भी हार जाता है, कदम पर नियन्त्रण नहीं होता और दृष्टि बातक की भूति स्थिर हो जाती है। फिर धीरे-धीरे अपना अस्तित्व इलाकने लगा, खुद से पहचान होने लगी, जीवन में कुछ ऐसा घटित होने लगा, जिससे लगने लगा, कि ज्ञानांड में शिरकन होने लगी है, फ़ूलों में अपनी सुगंध बिखुर दी है, हवाओं में कोई मनोश तैरने लगा है, परिधियों का कल्परब, मधुर संगीत अनुभव होने लगा है।

मारी की सारी

पृथ्वी अलमस्त दिखने लगी है और स्वयं मेरी गति भी ऐसी हो गई है, जैसे मैं कई-कई परतों से निकल कर खुली हवा में सांस ले रहा हूँ, मेरा कुटिल भस्तिक, जिसने शायद ही कभी अजने व्यापार या

और फिर अचानक, एक बार फिर आपस मुश्कात हूँ... वह क्षण ऐसा था, जब मेरे नामने दुग भी बेरे कदम आपकी ओर बढ़ चले, आपसे मिलन के बाद ऐसा लगा, जैसे पही नी है वे चिने में हड़ रथ हैं, चिनसे मंग आनंदिक सम्बन्ध है, लेकिन जब मैं हृषि सम्बन्ध का अर्थ भी नहीं जानता था।

लैन-टेन के अलावा कभी कोई बत सोची हो, वह आज एकदम निविकार अनुभव हो रहा है, सतर्कता से धूमने वाली मेरी आंखें आज किसी लक्ष्य पर केन्द्रित हो गई हैं, हृदय आज खुद साफ होने के कारण मुझकाशने लगा है, उसमें एक पुलकन का धहमास होने के लिए आज मेरी सबस्त्र इन्द्रियों द्वाकाग्र द्वाकाग्र स्थिर आप पर ही केन्द्रित हो गई हैं।

शायद इसी भावभूमि की तो आप अक्सर चचा करते हैं, साथना को सम्पन्न करने के लिए। परन्तु अभी भी मुझमें असंख्य अनुभवाएँ हैं, जिन्हें मैं व्यक्त नहीं कर पाता... और आज जब हृदय में आप न्यायित हैं, तो फिर मेरे लिए क्या कुछ करना शेष रह जाता है? फिर वह आप मुझे अपने हाथों से मेंग हाथ पकड़ कर अपने साथ नहीं ले जायेंगे? ज्योंकि मैं इराना तो अनुभव कर चुका हूँ, कि मेरी सामर्थ्य यहीं तक है। अब आगे आप पर निर्भर हैं, कि मुझे अपने साथ ले चलें या फिर इसी दलालत में लोड हैं। आज मुझे यह तो पूर्णतया एहसास हो गया है, कि मेरा हृदय में जो स्थापित है, जिसके साथ मैं अपने जीवन के लक्ष्यों को लकीत किया है, वह जब याधारण नहीं है। मेरी दृष्टि में तो आप ही मेरी पूर्णता है, जो ही अहा हैं, जिससे प्राप्ति है, कि मुझे अपने शांत चरणों में स्थान देकर मुझे कृतार्थ करें। इससे मुझे पूर्ण ब्रह्मत्व प्राप्त हो जायेगा।

आपसे बढ़कर मेरी कौन सी साधना है? आपसे हट कर मेरा कौन सा लक्ष्य है, जो मुझे प्राप्त करना है? आपके अलावा कौन सा प्राप्त तत्त्व है, जो मुझे प्राप्त करना शेष है? आपकी कृपा ही मेरे इस जीवन का कल्पयण करने में पूर्ण समर्थ है, फिर क्यों मैं दा-ब-दा भटकता फिरता? आपको अपने में समा लेना ही मेरे जीवन की आकाश्चा रह

गई है, मुझे और कुछ इसके अलावा मृड़ता भी नहीं। यदि मैंने अपने जीवन में आपको आत्ममात का लिया, तो मही अर्थों में मुझे पूर्णता और ब्रह्मत्व प्राप्त हो जायेगा।

— निवापनि ८५

अमा मा सुदर्म अमान्द्र न्युनाम है, जिसे मैं यह नहीं कर पाना... और आज जब हृदय में आप स्थापित हैं, तो फिर मेरे लिए क्या कृप करना शेष रह जाता है? फिर वह आप मुझे अपने हाथों से मेंग हाथ पकड़ कर अपने साथ नहीं ले जायेंगे? ज्योंकि मैं हृतना तो अनुभव कर चुका हूँ, कि मेरी सामर्थ्य यहीं तक है। अब आगे आप पर निर्भर हैं, कि मुझे अपने साथ ले चले या फिर इसी ढलउल में लोड हैं।

सबसे कठिन काम है साधना में सफलता प्राप्त करना।

और यदि साधना में सफलता प्राप्त नहीं होती है,

तो जीवन में निराशा, वेदना और बिखरात पैदा हो जाता है।

परन्तु प्रत्येक साधना के लिए अलग-अलग विधियां बताई गई हैं।

और उस विद्यान में जरा सी भी चूक असफलता को जब्त देती है।

लेकिन अब आप असफलता को अपने जीवन के शब्दकोश से मिटा सकते हैं, इन तथ्यों को अपने जीवन में डार कर ...

किसी भी साधना में आप सफलता प्राप्त कर सकते हैं इस साधना के माध्यम से

Hमारे इतिहास में शंकराचार्य जैसा व्यक्तित्व नहीं हुआ। केवल वर्तीमान की अवस्था में उन्होंने वार स्थानों पर मठ स्थापित कर दिये। शंकर मत और शंकर भाष्य को आज भी लोग नहीं समझ पाये, कि इसमें कितनी गृह्णी विवेचना है।

मैं यह मन में भी बड़ी छटपटाइट हूँ, कि उस शंकर भाष्य को उन्हीं शब्दों में वापिस लिखूँ, सरल भाषा में, जो शंकराचार्य के मन की बात थी। गीता में कुछ क्या कहना चाहते थे, अने वासी पीढ़ी ने उनका अर्थ तो किया पगर मन की बात नहीं समझ पाये।

अर्थ एक अलग चीज़ है। वह क्या कहना चाहता है, यह एक अलग चीज़ है। मन के भावों को व्यक्त करने में शब्द कभी-कभी असमर्थ हो जाते हैं। जब राम, सीता के स्वरूपर में गए और लक्ष्मण के साथ पुष्प वाटिका में घूम रहे थे, उसी समय सीता गौरी की पूजा करने गई थी। राम ने एक शाण के लिए सीता को देखा और तुलसी ने नौपाई में लिखा — 'गिरा अनन्दन नयन बिनु आनी' कि जिहा बहुत कुछ कहना चाहता है, मगर आखें नहीं हैं, वह बोल सकती है, पर देख नहीं सकती और आखे देख सकती है, मगर उनके पास वार्षी नहीं है, वे कुछ बता नहीं सकती।

ठीक इसी प्रकार से शंकर वाया कह रहे थे वह हम समझ नहीं पाये, वे सपड़ा भी नहीं पाये। शावट कुछ ज्ञान मिले, तो शंकर भाष्य का एक यही चिन्नन है सर्व, गीता का सर्वी

चिन्नन है सर्व। मगर वह तो जैसा गुरुदेव चाहेंगे, प्रभु चाहेंगे, वैसा ही ही पायेगा। मेरे पास है एक ज्ञान है एक चेतना है और उस चेतना पर, ज्ञान पर, अपने आप पर बहुत ही गर्व है। पूरे ब्रह्माण्ड को तो गर्व है ही, पर मुझे भी गर्व है, कि मेरे पास साधनात्मक ज्ञान है।

मगर यह सब ज्ञान राखा में न बदल जाये, वह ज्ञान, अपने आपमें एक जीवित जाग्रत कृति बन सकती है। शंकराचार्य वर्तीमान की अवस्था में ही मृत्यु की प्राप्त हो गये, जनीस सालों में उन्होंने अत्यधिक तकलीफ ली और उनको मृत्यु हुई उनके ही शिष्य के द्वारा, शिष्य ने ही उनको कांच घोट कर पिला दिया और केदारनाथ के पास उनकी मृत्यु हो गई।

और उनके बाद अनिम समय में शंकराचार्य ने कहा, कि 'शिष्य' शब्द अपने आपमें अत्यन्त चटिया और तुच्छ शब्द है। अगर शिष्य ही गुरु की मार दे, गुरु को गाली देना तो बहुत बड़ी बात है, गाली सीधना भी बहुत बड़ा पाप है और अपने स्वार्थ के लिए पाटपत्ता जैसा कोई चटिया शिष्य गुरु को समाप्त कर दे, ऐसा अधम शिष्य उम्म पृथ्वी पर कोई दूसरा नहीं हो सकता।

इसमें 'शिष्य' शब्द अपने आप में एक गाली बन गया है। मैं शंकराचार्य के उस वक्तव्य को सुधारना चाहता हूँ, मैं बताना चाहता हूँ, कि शिष्य शब्द अपने आप में बड़ापन का शब्द है, उन्नती का शब्द है।

शिष्य शब्द शारेया नहीं है। कोई जरूरी नहीं है कि

सभी पादपद्म बौंगे, ही सकता है, कि उसमें कोई स्वार्थी हो। मगर इन शब्दों से उनकी पीड़ा झलक रही है। शंकराचार्य उस पीड़ा को लेकर चले गये, वेदना लेकर चले गये। शाश्वत दस साल और जीवित रहते, तो दो-चार शंकर भाष्य जैसे उच्चकोटि के ग्रंथ लिखे जा सकते थे। उनके होटों पर ये शब्द नहीं आते, कि शिष्य घटिया, अधम शब्द बना रहा। मैं अपने जीवन में उस शब्द को सुधारना चाहता हूं, कि शिष्य जैसा कोई उच्चकोटि का शब्द ही नहीं है, वह अपने ही हृदय का रक्त और अंस है। ऐसा ही प्यार आप से मुझे चाहिए।

वे लोग धन्य हैं, जिन्होंने अपने जीवन में शंकराचार्य के चरणों का स्मरण किया था। वे वास्तव में हजारों-हजारों देवताओं से भी ज्यादा अद्वितीय हैं, जिनका शरीर शंकराचार्य के शरीर से जुड़ा होगा, जिनके हृदय को धड़कन जुड़ी होगी, जिनके प्राणों के सम्बन्ध जुड़े होंगे, जिन-जिन के सम्बन्ध उनसे जुड़े होंगे, वास्तव में उनके जैसा सौभाग्यशाली तो दूसरा कोई व्यक्ति ही ही नहीं सकता क्योंकि एक लोहा पारस से स्मरण करेगा, तो एकदम कुदन बन जायेगा, सोना बन जायेगा; एक लकड़ी का ढुकड़ा, बबूल का ढुकड़ा भी यदि चन्दन से रगड़ खायेगा, तो अपने आपमें सुगम्य युक्त बन जायेगा।

मैं फिर कह रहा हूं, कि वे ऋषि, मुनि, योगी, यति बैकार हैं, ध्यर्थ हैं, जो कन्दराओं में जा कर बैठ गये हैं। उनको आपा चाहिए, आग में जलना चाहिए, तपना चाहिए, खून जलाना चाहिए; मगर इन लोगों को ज्ञान तो देना ही चाहिए। एकान्त में तो जंगली पशु बैठते हैं, आप भी एकान्त में बैठे हैं, उनके भी बाल बढ़े हुए हैं, तुम्हारे भी बाल बढ़े हुए हैं। तुमने उच्चकोटि की साधनाएं कर भी लीं, तो उनका जीवन में क्या अर्थ है।

शंकराचार्य ने एक श्लोक में बहुत ही उच्चकोटि की एवं बहुत अच्छी बात कही है, जिसे समझने की जरूरत है। उन्होंने कहा, कि गुरु और सिद्धि दो अलग-अलग चीजें नहीं हैं; जहां गुरु हैं वहां सिद्धि है, सफलता है, जहां सिद्धि है, अफलता है, जहां गुरु हैं। दोनों में अन्तर नहीं किया जा सकता। अन्तर तब होता है, जब गुरु - शिष्य के बीच में अन्तर होता है और यदि अन्तर है, तो गुरु उसे मिटाये, जो शिष्य को जात नहीं है। यह अन्तर है या नहीं, और है तो कैसे मिट सकता है — इसे उन्होंने गुरु पर ही छोड़ दिया। उन्होंने गुरु को भी ब्राह्मने की कीरिश की है, केवल शिष्य पर ही भार नहीं ढाला है। उन्होंने यह कहा है, कि गुरु का धर्म है, कि वह शिष्य की न्यूनता समाप्त करे और आज के युग में आपमें साधना में न्यूनता सम्भव है।

शंकराचार्य कहते हैं, कि शिष्य की गलती नहीं है, क्योंकि वह तो एक हाइ-प्रांस का पुतला है, उसमें प्राण तो अभी तक नहीं आ पाया है। उसे सफलता देना गुरु का कर्तव्य है। अन्तिम अंश तक गुरु शिष्य को सफलता प्रदान करे वह न कहे तो भी करे, यद्यपि मार करके भी उनको सफलता दिलाये, प्यार करके भी सफलता दिलाये, मार शिष्य को सफलता दिलाये। यह गुरु का धर्म है, यह गुरु का कर्तव्य है।

क्योंकि उसके थप्पड़ मारने में भी एक प्यार होता है, गाली देने में भी एक प्यार होता है, वह एक मधुरता होती है, और युक्त गाली नहीं होती। कबीर ने कहा कि — “गुरु कुम्हार शिष्य कुंभ है, गढ़ि-गढ़ि काके खोट, भीतर-भीतर सहजि के बाहर-बाहर चोट।” एक छोटी सी मटकी सी होती है, उसको बाहर से चोट पहुंचाता है कुम्हार और अन्दर हाथ लगाये रखता है और धंरे-धंरे उसको घड़ा बना देता है। उसको मालूम है, कि मैं ठोक रहा हूं, मगर अन्दर वह सहेजता रहता है। मैं आपको अन्दर से सहेज रहा हूं, ऊपर से फटकारता हूं, डांटता हूं, मगर उसमें भी प्यार है। आपको डांटने और फटकारने, पुचकारने में मुझे कोई आनन्द नहीं है, मगर मैं चाहता हूं, कि आपको सफलता मिले।

साधकों को कई बार मंत्र देने के बाद भी सफलता नहीं मिलती। जब नहीं मिलती है, तो वे इताश और निराश हो जाते हैं। भले ही वे होटों से नहीं कह पाते, मगर मन में निराश और हताश हो जाते हैं, कि यह मंत्र गलत है या शास्त्रों में कही हुई बात गलत है या मैं गलत हूं। कहां न्यूनता हो जाती है? वह भूमिता हो जाता है, गुरु से कह नहीं पाता। कहाँ-कहाँ उसकी पञ्चवूरी हो जाती है, कि मैं गुरु से कैसे कहूं। मगर गुरु को आगे बढ़ कर कहना चाहिए, कि तुम्हारे अन्दर यदि न्यूनता आ रही है, तो उस न्यूनता में भी सफलता देना मेरा धर्म है, गुरु के रूप में कर्तव्य है।

अब दोनों विशेषाभास को मिटाने के लिए क्या किया जाय? यह एक कठिन क्रिया है। यदि मैं कहूं, कि तुम्हें इस प्रकार से आसन पर बैठना होना पड़ेगा और यारह माला जप करना पड़ेगा, लेकिन तुम आठ माला के बीच में ही उठ जाओगे, कि छोड़ी अब आठ माला ही बहुत है, आकाश में तो उड़ने से रहे, अर्थात् तुम अपने आप में निराश और हताश हो जाते हो। जब हनुमान जी लंका गए, तो कोई ढवाई जहाज पर बैठ करके तो गए नहीं, वे तो उड़ कर गए। वे कैसे चले गए थे? अब या तो वह शास्त्र गलत है या फिर हम गलत हैं। बायू वेग के पाठ्यम से भी आदमी गमनशील हो सकता है, होता है। आज से पचास साल पहले विशुद्धानन्द जी ने भी यह क्रिया

करके दिखाई। परन्तु उसके बाद विशुद्धानन्द जी ने बहुत लकड़ीने पाई, एक मिनट भी बैन से नहीं बैठ सके। उनके घर में जो भी शिष्य आता वह बार-बार प्रदर्शन करने के लिए चलता। उन्होंने एक बार कहा था मैंने बहुत बड़ी गलती कर दी, कि यह किया इनको दिखा दी।

इसलिए सबसे ज्यादा जरूरी है साधना को प्राप्त करना और उसमें भी ज्यादा जरूरी है साधना में सफलता प्राप्त करना। तुमने मेरे साथ रह कर कम से कम सी साधनाओं में भाग लिया था, पचास साधनाओं में भाग लिया होगा या साठ साधनाओं में भाग लिया होगा। साठ साधनाएं तो मैंने तुम्हें बताई हींगी और उसमें से कुछ साधकों को सफलता मिली, कुछ साधकों को नहीं मिल पाई।

फिर प्रश्न यही उठता है, कि क्या कोई ऐसी युक्ति नहीं है, कि तुम्हे एक बार में ही सफलता मिल जाये?

इन दो दिनों में मैंने आपको उच्चकोटि की साधना दी और आपने बहुत गहराई के साथ प्राप्त की। मुझे विश्वास है, कि आप इसमें सफलता प्राप्त करेंगे ही! हो सकता है कि एक ब्लॉग में पचास लड़के बैठे हों, उसमें से बीस पास हो जायें और तीस फेल हो जायें। परन्तु उनके फेल होने में उस अध्यापक की भी गलती है, शिष्य की तो गलती है ही, लड़के की तो गलती है ही।

यही प्रश्न कभी विश्वामित्र के सामने भी उठा था और विश्वामित्र ने कहा, कि मेरा कोई भी शिष्य साधना में असफलता प्राप्त नहीं कर सकता, व्याकिं मैं ब्रह्माण्ड की रशियों से उस मंत्र को खींच कर उन्हें प्रदान कर दूँगा। इस मंत्र को किसी ऋषि ने नहीं बनाया। यदि ऋषि ने बनाया होता, तो फिर उपनिषदों में होता।

और आज भी ब्रह्माण्ड के शब्दों के माध्यम से मंत्र निर्मित होते हैं। विश्वामित्र ने उस मंत्र को प्राप्त किया, जिस मंत्र के माध्यम से न्यूनता, कमी, अशुद्धता, (अशुद्धता का पतलब पवित्रता की न्यूनता) होते हुए भी उसे साधना में सफलता मिल जाये। विश्वामित्र ने पहली बार इस मंत्र को उजागर किया और शिष्यों से कहा, कि तुम जान बुझ कर साधना में गलती करो। फिर भी मैं तुम्हें सफलता दूँगा। मैं तुम्हें यह प्रयोग करके दिखा देना चाहता हूँ, कि मैं वैज्ञानिक भी हूँ, ऋषि हूँ, योगी हूँ, संन्यासी हूँ।

और उन्होंने उन शिष्यों को उस मंत्र के माध्यम से पूर्ण सफलता दे कर दिखा दिया, कि यह मंत्र अपने आपमें शिष्यों के लिए बरदान है, इससे उनको साधना में सफलता मिलती ही है। यह मंत्र अपने आप में अद्वितीय है, उच्चकोटि का है और पूरे जीवन को स्वर्णिम बनाने के योग्य है।

मैं आपकी मजबूरी को समझ रहा हूँ, कि साधना करते हैं और सफलता नहीं मिलती। परन्तु नहीं मिल पाती, तो इसमें तुम्हारी गलती तो है ही, व्याकिं जहां श्रद्धा नहीं है, जहां समर्पण नहीं है, जहां आत्म निवेदन नहीं है, जहां न्यूनता है, वहां असफलता तो होगी ही। किन्तु सफलता नहीं मिल पाती, तो युरु उस रास्ते को दिखा दे, जिस पर चल कर न्यूनताओं के उपरान्त भी सफलता प्राप्त की जा सकती है। विश्वामित्र ने इस भ्रकार के मंत्र की रचना की, ब्रह्माण्ड की रशियों के माध्यम से को और उन्होंने कहा कि इस मंत्र के, इस साधना के माध्यम से पिछली जितनी भी साधनाएं शिष्य ने की हैं, उन साधनाओं में भी उसे पूर्ण सफलता प्राप्त हो सकती है। इसे सम्पन्न करने पर रह ही नहीं सकता, 'असम्भव' जैसा शब्द जीवन में जु़़द ही नहीं सकता, ऐसा कहा विश्वामित्र ने।

मैं चाहता हूँ कि इस प्रयोग से आप सफलता प्राप्त करें। जीवन में बाधाएं अड़चने आयें और उनको पार करें, और जीवन की श्रेष्ठता जीवन की उच्चता प्राप्त कर सकें।

साधना विद्यान

यह प्रातः कालीन साधना है। इसमें 'साधना सिद्धि यंत्र' एवं 'ब्रह्मणु माला' की आवश्यकता होती है। मुसलमान जैसे नमाज पढ़ते हैं उस लंग से आप बैठ जायें, घुटने टेक करके। 'साधना सिद्धि यंत्र' को अपने सामने थाजेट पर स्थापित कर दें और माला नीचे रख दें, यंत्र को जल से स्नान करायें।

स्नान के उपरान्त यंत्र को पौछ दें, उसके बाद मैं यंत्र के ऊपर सात बार कुंकुम से तिलक करें। फिर निम्न मंत्र का इक्कीस माला जप करें —

मंत्र

॥ ओ ह्रीं श्रीं क्लीं सम्पूर्ण ब्रह्मण्ड मंत्र सिद्धि श्लृष्टि श्री ह्रीं फट् ॥

Om Hreem Shreem Kleem Sampurna Brahmaand Mantra Siddhim Kleem Shreem Hreem Phat

इस मंत्र का जप केवल प्रातः काल होता है, यत्रि को इसका जप नहीं कर सकते। यह पांच दिवसीय साधना है: पांच दिन के बाद यंत्र और माला को किसी नदी, तालाब या जलाशय में विसर्जित कर दें।

मैं आपको आशीर्वाद देता हूँ, कि इस साधना को सम्पन्न करने के उपरान्त आपने जितनी भी साधनाएं पहले सम्पन्न की हैं और भविष्य में करेंगे, उन सबमें आपको निश्चित रूप से सफलता प्राप्त हो। ऐसा ही मैं आपके आशीर्वाद देता हूँ, आपकी कल्याण की कामना करता हूँ।

रिपोर्ट

जुलाई १९६७ वर्ष की गुरु गृणिमा का दृश्य

१७ जुलाई का सूर्योदय वास्तव में ही अल्पन दिव्यता लेकर आया था। हैदराबाद के एक प्रमुख होटल 'जया इंटरनेशनल' एक नवीन साज-सज्जा से सजाया गया था। अधिकारी श. सजावट दक्षिण भारतीय थी, परन्तु एक आध चिन्ह ऐसा भी था जो मानस पटल पर उत्तर भारतीय प्रभाव छोड़ जाता था। बड़ा ही अद्भुत संयोग,

बड़ा ही अनिवार्यीय मेल था दोनों का, और यही मेल ही अन्त हक के लिए सशक्त मार्ग बन सका।

होटल कम्पाउण्ड एवं रिसैप्शन पर करीब ५०० साधकों एवं शिष्यों की भीड़ बड़ी बेसब्री से इन्तजार कर रही थीं गुरुदेव के आगमन का।

और तभी अचानक सारा होटल 'जय गुरुदेव', 'पूज्य गुरुदेव की जय', 'माताजी की जय', के श्रद्धायुक्त भावों से भर गया। पूज्य गुरुदेव आ चुके थे।

पर, कितना गजब का शिष्याचार। चार-पाँच सौ



लोगों की भीड़ में एक व्यक्ति भी पंक्ति तोड़कर गुरु चरण स्पर्श के लिए आगे नहीं लपका... वहां के कुछ प्रबंधकों ने और कुछ दक्षिण ब्रेष्टपूया में सजी महिलाओं ने गुरुदेव की आरती उतारी, उन पर पुष्पों की वृण्ठि और घन्दन की भालाएं पहनाई। होटल की सारी व्यक्तियां चंद्रप्रकाश जी, श्री शंकरन जी एवं श्री मोहन देशपाण्डे जी द्वारा की गई थीं। स्वागत के बाद गुरुदेव, माताजी एवं छोटे गुरुदेव कैरनाश चन्द्र जी अपने कमरों की ओर चले गए।

गुरु गृणिमा के उपलक्ष्य में १७ जुलाई से ही कई कई



साधक सारे भारतवर्ष एवं सम्मान भर से हैदराबाद आने लगे।

इन सब साधकों एवं शिष्यों को कोई असुविधा न हो इसलिए स्टेशन आदि एवं शहर में जगह जगह पर गुरुदेव के पोस्टर आदि चिपकाए गए। यह व्यवस्था बिना श्री कृष्ण मूर्ति नायडू जी, श्री विजयना नायडू जी एवं अमृता गौड़ जी के प्रवचनों से संभव नहीं थी। साथ ही साथ इन्हीं तीनों ने किताबों की प्रिंटिंग एवं पैपलेट वितरण में भी महत्वपूर्ण सहयोग दिया।

साधकों की मुखिया हेतु धर्मशाला का उत्तम प्रबन्ध किया गया, जिससे वे बिना किसी कष्ट के आराम से रह सकें, निश्चित ही हैदराबाद के साधकों ने जिस प्रकार से अपने गुरुभाइयों की देखरेख की है वह ब्रेफ्ट थी। धर्मशाला और रहने की व्यवस्था को जिम्मेदारी ओर रामगोपाल, श्री सुरेश, श्री विजय, श्री अरुण, श्री अशोक, श्री वेणुगोपाल रेड्डी एवं श्री रवि ने निभाई।

इसके साथ ही साथ अगर और कोई समस्या हो या जानकारी प्राप्त करनी हो, तो साधकों के लिये इंकारायरी का अफिस श्री सत्यम एवं श्री श्रीणु ने संभाला।

अब जरा चलते हैं आठउण्ड, जहाँ यह महान उत्सव आयोजित किया जा रहा है। वास्तव में ही यह जगह बहुत विशाल है, ग्राउण्ड के चारों ओर होल बने हुए हैं, जहाँ लोग रह सकते हैं, सेकिन मुख्य आकर्षण ये होल नहीं अपितु यह विशाल एवं भव्य पंडाल हैं, जो कि हमारे हैदराबाद के भाइयों ने तैयार किया है... अनिवार्यीय, अद्वितीय, अनुपम... गुरुदेव का मंच तौ मानों गुलाब पुष्पों से ही निर्मित हुआ है... सारे पंडाल में उत्तम लाइट, पंखों एवं

टी.वी. सेटों का प्रबन्ध था...

स्टेज तो मानों अपने आप में ही अद्वितीय था, ऐसा लगता था जैसे इन्ड्रासन हो। उसकी सजावट वास्तव में री प्रशंसनीय थी, स्टेज को और पंडाल की व्यवस्था आदि का श्रेय अमृता गौड़, श्री रवि सेठ, श्री अनिल हिप्पलगावेरकर, श्री साई स्वामी एवं श्री गंगा प्रसाद जी को जाता है। इन लोगों ने तो वास्तव में सभी कार्यों में हाथ बटाया और समय-समय पर निरीक्षण किया। इसी मुख्य पंडाल के साथ ही अंग्रेजी और हिंदी साहित्य, यंत्र, मालाएं एवं गुटिका आदि एवं गुरु चित्रों का काउटर था, जहाँ पर शुरू से ही काफी भीड़ दिखाई दे रही थी। यह एक शुभ लक्षण है, क्योंकि यही बताता है कि साधक इस उत्सव के लिए कितने उत्सुक हैं, कितने व्याकुल हैं। साथ ही में और भी कई काउटर थे जहाँ वैग्पलेट आदि बाट रहे हैं। सब कुछ एक व्यवस्था से हो रहा है और इन सबका श्रेय जाता है श्री एकम्बर नाथ, श्री श्रीनिवास चक्रवर्ती, श्री राममोहन रेड्डी, श्री कृष्ण, श्री लक्ष्मी नरसिंह रेड्डी एवं श्री मोहन सेठ को। इन सब ने पंडाल आदि की व्यवस्था में भी बढ़चढ़ कर हिस्सा लिया।

18 तारीख को गुरुदेव के बल शाम को ही शिविर में गए थे। सबै से ही सारे साधक बड़े भाव विभीर होकर पूज्य गुरुदेव की प्रतीक्षा में रहे... जिस प्रकार से शिशु अपने माता के लिए व्याकुल रहता है वही हालत उन सब की थी और जब आस्तिरकार पूज्य गुरुदेव वहाँ पहुँचे तो उन भाव पूर्ण जय घोषों से प्रा पंडाल हिल गया... उस समय तो ऐसा प्रतीत हो रहा था मानों सही अर्थों में उत्तर और दक्षिण आलिंगन बढ़ हो गए हैं... सच ही कहा है किसी ने कि प्रेम का, धर्म का, श्रद्धा का कोई क्षेत्र नहीं होता, उसकी कोई सीमा नहीं होती... वह तो हर जगह एक ही समान हाती है।

हैदराबाद शिविर का एक मुख्य आकर्षण था वहाँ का रात्रि-भोज! अत्यन्त स्वादिष्ट और प्रेमपूर्वक बना भोजन सभी को रुचिकर लगा, और सबसे महत्वपूर्ण बात थी उन लोगों का आग्रहपूर्ण प्यार एवं ममत्व के साथ खिलाने का तरीका... खाने को एवं रसोई को सारी जिम्मेदारी सम्भाली श्री कृष्णमूर्ति, श्री नरसिंह, श्री चंद्रधूषण रेड्डी एवं श्री शिवरामकृष्ण जी ने। सारे काउटर पुस्तक माला मंत्र दीक्षा आदि से प्राप्त धनराशि एवं व्यवस्था सिद्धाश्रम साधक परिवार हैदराबाद के मौजन्य से रहीं।

फिर गुरुदेव ने प्रभुख आयोजक श्री अनिल कुमार जोशी एवं श्री कौ.एम. रवि कुमार की प्रार्थना पर 'पूर्ण ब्रह्मार्थ स्थापत्य साधना' करवाई, जो कि वास्तव में ही जीवन का भाग्योदय थी, जीवन की श्रेष्ठतम उपलब्धि थी।

गुरुदेव ने बाद में वहीं पर एक कक्ष में विश्राम किया। यह आयोजकों की धूरदर्शिता का प्रभाव या ताकि गुरुदेव को बार-बार होटल न जाना पड़े। इस कक्ष का प्रबन्ध और व्यवस्था श्री शिवानंद दीक्षित एवं श्री सुनील जैन के हाथों में थी और निश्चय ही वे साधुवाद के पात्र हैं।

गुरुदेव ने इसके बाद ब्रह्मपात युक्त 'कुण्डलिनी जागरण दीक्षा' सभी आप साधकों एवं शिष्यों को प्रदान की, जिससे कि उनके जीवन में पूर्ण वैधव, श्रेष्ठता एवं सम्पन्नता के साथ ही साथ उच्चतम आध्यात्मिक सोपान भी प्राप्त हो सके . . . निश्चय ही यह दिवस सभी के लिए अत्यधिक सौभाग्य दायक था . . .

समस्त विश्व में विजय प्राप्त करने हेतु साधकों को रात्रि में शत्रुओं को पूर्ण परास्त करने हेतु शत्रु संहारक बगलामुखी प्रयोग सम्पन्न करवाया, यह बड़ा ही तीव्र प्रयोग था। इसके सम्पन्न होते-होते सारा पंडाल एक अद्भुत तेजस्विता से आपूरित हो गया।

इसके बाद भजन एवं संगीत का दौर शुरू हुआ। सभी भजन अत्यन्त भाव पूर्ण थे, जो कि समस्त शिष्यों के हृदय के तारों को छेड़कर एक भावपूर्ण संगीत उत्पन्न कर रहे थे . . . माइक, स्पीकर आदि की काफी अच्छी व्यवस्था थी। संगीत से सम्बन्धित सारी व्यवस्था श्री मुरलीधर राव, श्री उदय कुमार एवं श्री राधवेन्द्र ने की।

20 तारीख को सूर्य यानों कई कई गुरुओं बाद उत्ता . . . क्षेत्रिक रात को नींद किसे आई थी? . . . सभी आहुता से प्रतीक्षा कर रहे थे गुरु पूर्णिमा की, उस दिन की जिस दिन गुरुदेव शिष्य को अत्मवत् बना लेते हैं, जिस दिन वे उसके सभी दोषों को अपने अंदर पका लेते हैं, उसका सारा विष स्वयं स्वीकार करके उस पर सारा अमृत न्यौछावर कर देते हैं . . .

जब गुरुदेव शिविर स्थल पर पहुंचे तो हजारों कांठों ने एक साथ गुरुदेव, माताजी एवं छोटे गुरुदेव का अभिवादन किया। 'पूर्ण गुरुदेव की जय', 'स्वामी निखिलेश्वरानंद जी की जय' से सारा वातावरण गुजायमान हो उठा।

गुरुदेव ने आज 'राज राजेश्वरी महाशक्ति साधना' सम्पन्न कराई। यह एक अत्यंत ही उच्चकोटि की साधना है और गुरुदेव के अनुपार उन्होंने इसे पहले कभी गृहस्थ शिष्यों



को नहीं दिया। वास्तव में ही साधनाओं की दृष्टि में वह हेदराबाद शिविर यादगार बन गया है।

इसके साथ ही साथ इस बार स्टेज एक नवीन ढंग से सजाया गया, पूरी तरह से पुर्णे से आकृदित और सबसे आकर्षक बात यह कि, गुरुदेव के आसन के चारों ओर चार चैंके सुसज्जित भालाघारी प्रहरी . . . जो हमेशा गुरुदेव के आने से पूर्व उनके आगमन की सूचना देते थे, तीक किसी राजा-महाराजा के दरबारियों की तरह। यह एक नया आकर्षण था और सभी को काफी पसंद आया।

व्यवस्था वास्तव में बहुत ही उत्तम थी। सभी काम अत्यधिक सुव्यवस्था के माथ किया। जिस सम्बन्धी सारे काम श्री उदयदत्त जोशी एवं श्री शिव शंकर ने संभाले और निश्चय ही उन्होंने कभी भी कोई कमी खड़ी होने नहीं दी। इस सारे शिविर के मुख्य आयोजक श्री अनिल कुमार जोशी एवं एम. रवि कुमार ने जिस प्रकार से सम्पूर्ण आयोजन की व्यवस्था की, निश्चय ही वे इसके लिए साधुवाद के पात्र हैं।

अब कुछ ही क्षण और गुरुदेव के सारानाथ में रह सकते हैं। और अंत में जब विदाइ समारोह सम्पन्न हुआ तो निश्चय ही सभी शिष्य अशुपूरित नेत्रों से गुरुदेव की ओर देख रहे थे सभी मानों कुछ कहना चाहते हुए भी कुछ कह नहीं पा रहे हों . . . सबका कंठ अवरुद्ध था . . . परन्तु गुरुदेव की करुणापूर्ण नेत्रों से निकलती प्रेममयी रशिमयाँ उनके सम्पूर्ण अस्तित्व को सराबोर कर रही थीं . . . उनके ऊपर अमृत घर्षा कर रही थीं।

इस बार गुरु पूर्णिमा शिविर जीवन का एक स्वर्णिम पृष्ठ बन गया।

समय

श्रेष्ठ, पाठक तथा सर्वजन सम्मान के लिए समय के बे सभी रूप यहाँ प्रस्तुत हैं, जो कि किसी भी व्यक्ति के जीवन में उत्तम या अवनति के कारण होते हैं तथा जिन्हें जान कर आप स्वयं अपने लिए ज्ञाति का मार्ग प्रशस्त कर सकते हैं। नीचे दी गई सारणी में समय की तीन रूपों में प्रस्तुत किया गया है — श्रेष्ठ, मध्यम और निकृष्ट। श्रेष्ठ समय जीवन के लिए आवश्यक किसी भी कार्य को, चाहे वह व्यापार से सन्बन्धित हो, जीकरी से सम्बन्धित हो, घर में शुभ उल्लंघन से सम्बन्धित हो अथवा अन्य किसी भी कार्य से सन्बन्धित हो, आप इस श्रेष्ठतम् समय का उपयोग कर सकते हैं और सफलता का उत्तिष्ठत 99.9% आपके खाल अंकित हो जायेग।

यदि किसी कारणबाट आप श्रेष्ठ समय का उपयोग नहीं कर सकें, तो वध्यम समय का प्रयोग कर सकते हैं। इस काल में भी सम्पन्न करने पर कार्य पूर्ण होता है और प्रतिशत होता है 75% अर्थात् कार्य पूर्ण होने में विलम्ब होता है, किन्तु सफलता मिलती है।

निकृष्ट समय का उपयोग तो ज्यादा से निषिद्ध है, व्यापेक यदि उन्होंने हुए कार्य का प्रारम्भ भी भूल चश निकृष्ट समय में हो जाय, तो वह बिगड़ जाता है। आतः ग्रावेक व्यक्ति को चाहिए, कि निकृष्ट समय में किसी भी उकार के कार्य का प्रारम्भ न करें। यहाँ पर यह चाल व्यापार रखने योग्य है, कि जीवने कोई कार्य श्रेष्ठ व्यवहार मध्यम समय में प्रारम्भ किया है और उसका अभ्यासन का समय निकृष्ट खाल से प्रभावित हो, तो उन में संशय का खाल नहीं जाना चाहिए, किन्तु यदि आपने दीक्षा ले रखी है, तो सदैव गुरु भंग का अप करें, यदि नहीं ले रखी है, तो इष्ट स्मरण कर कार्य की पूर्णता करें।

वार/दिनांक	श्रेष्ठ समय	मध्यम समय	निकृष्ट समय
रविवार (5, 12, 19 व 26 अक्टूबर)	प्रातः: 7.36 से 10.00 तक दिन में 12.24 से 2.48 तक रात्रि 7.36 से 9.12 तक रात्रि 11.36 से 2.00 तक	दिन में 10.00 से 12.24 तक दिन में 2.48 से 4.24 तक रात्रि 9.12 से 11.36 तक ब्रह्ममुहूर्त 3.36 से 6.00 तक	प्रातः: 6.00 से 7.36 तक साथ 4.24 से 7.36 तक रात्रि 2.00 से 3.36 तक
सोमवार (6, 13, 20 व 27 अक्टूबर)	प्रातः: 6.00 से 10.48 तक दिन में 1.12 से 6.00 तक रात्रि 8.24 से 11.36 तक रात्रि 2.00 से 3.36 तक	साथ 6.00 से 8.24 तक रात्रि 11.36 से 2.00 तक ब्रह्ममुहूर्त 4.24 से 6.00 तक	दिन में 10.48 से 1.12 तक रात्रि 3.36 से 4.24 तक
मंगलवार (7, 14, 21 व 28 अक्टूबर)	प्रातः: 6.00 से 7.36 तक दिन में 10.00 से 10.48 तक दिन में 12.24 से 2.48 तक रात्रि 8.24 से 11.36 तक रात्रि 2.00 से 3.36 तक	प्रातः: 7.36 से 10.00 तक साथ 5.12 से 8.24 तक रात्रि 11.36 से 2.00 तक ब्रह्ममुहूर्त 4.24 से 6.00 तक	दिन में 10.48 से 12.24 तक दिन में 2.48 से 5.12 तक ब्रह्ममुहूर्त 3.36 से 4.24 तक
बुधवार (1, 8, 15, 22 व 29 अक्टूबर)	प्रातः: 6.48 से 11.36 तक साथकाल 6.48 से 10.48 तक रात्रि 2.00 से 4.24 तक	साथ 5.12 से 6.00 तक रात्रि 10.48 से 2.00 तक	प्रातः: 6.00 से 6.48 तक दिन में 11.36 से 5.12 तक साथ 6.00 से 6.48 तक ब्रह्ममुहूर्त 4.24 से 5.12 तक
गुरुवार (2, 9, 16, 23 व 30 अक्टूबर)	प्रातः: 6.00 से 6.48 तक दिन में 10.48 से 12.24 तक दिन में 3.00 से 6.00 तक रात्रि 10.00 से 12.24 तक	ब्रह्ममुहूर्त 5.12 से 6.00 तक प्रातः: 8.24 से 10.48 तक साथ 7.36 से 9.12 तक रात्रि 12.24 से 2.48 तक ब्रह्ममुहूर्त 3.36 से 6.00 तक	प्रातः: 6.48 से 8.24 तक दिन में 12.24 से 3.00 तक साथ 6.00 से 7.36 रात्रि 9.12 से 10.00 तक रात्रि 2.48 से 3.36 तक
शुक्रवार (3, 10, 17, 24 व 31 अक्टूबर)	प्रातः: 9.12 से 10.30 तक दिन में 12.00 से 12.24 तक दिन में 2.00 से 6.00 तक रात्रि 8.24 से 10.48 तक रात्रि 1.12 से 3.00 तक	प्रातः: 6.00 से 9.12 तक दिन में 12.24 से 2.00 तक साथ 6.00 से 7.36 तक रात्रि 10.48 से 6.00 तक	दिन में 10.30 से 12.00 तक साथ 7.36 से 8.24 तक रात्रि 10.48 से 1.12 तक रात्रि 2.00 से 3.48 तक
शनिवार (4, 11, 18 व 25 अक्टूबर)	दिन में 10.48 से 2.00 तक साथ 5.12 से 6.00 तक रात्रि 8.24 से 10.48 तक रात्रि 12.24 से 2.48 तक ब्रह्ममुहूर्त 4.24 से 6.00 तक	प्रातः: 7.36 से 9.00 तक दिन में 2.48 से 4.24 तक साथ 6.48 से 8.24 तक रात्रि 10.48 से 12.24 तक रात्रि 2.48 से 4.24 तक	प्रातः: 6.00 से 7.36 तक प्रातः: 9.00 से 10.48 तक दिन में 2.00 से 2.48 तक साथ 4.24 से 5.12 तक साथ 6.00 से 6.48 तक

पूर्ण शक्तिपात युक्त

पराम्बा दीक्षा पराम्बा पूपा

कहते हैं, कि जिसने पराम्बा दीक्षा प्राप्त नहीं की, उसने जीवन में बहुत कुछ खो दिया। पूर्ण शक्तिपात युक्त पराम्बा दीक्षा तो केवल समर्थ और श्रेष्ठ गुरु ही दे सकते हैं, यह सामान्य, तुच्छ, अथकचरे, अज्ञानी तथाकथित गुरुओं के दश की बात नहीं है . . .

इसलिए किसी भी तरीके से, हजार प्रयत्न करके भी यदि पराम्बा दीक्षा प्राप्त हो जाती है, तो यह उस व्यक्ति के जीवन का सौभान्य है . . .

इस सौभान्य को आप भी प्राप्त कर सकते हैं, जब भी आप उवित समझें . . .

बालयों की मधुर धारणा अवनि। कुमारिकाओं का झूण्ड देव पूजन कर वापिस चल पड़ा था। बगल में भागवती गंगा का निर्मल प्रवाह अविराम निशील था, उसी में प्रतिविनिष्ट हो रहा था एवं नीलवर्णीय आकाश — वही भेरे आत्म की छाँच, जिसकी प्रतीति गुरु चरणों से हो सकी थी। प्रथम जार मैंने अनुभव किया, एक गंगा भेरे भीतर भी सतत् प्रवाहमान है। इसी निर्मल आकाश का प्रतिविन्द्रिय लिए हुए और उस पुण्यसलिला गंगा की एक-एक हिलोर मन में उत्तर कर आंसुओं के रूप में तरंगित हो उठी।

बचपन से ही मातृहीन था, तब भी किसी की मां-माँ की पुकार मात्र से मेरी आँखें सजल हो उठतीं। किसी प्रकार धरा पर लौटते हुए हृदय को ज्वाला शान्त करने का यत्न करता। पिता अवश्य ही क्रृष्ण तुल्य व्यक्ति थे, उनके प्रगाढ़ धर्मनुराग से ही भेरे भीतर सद्भावना के बीजों का अंकुरण हुआ था। लेकिन 'मां-माँ' पुकार से शान्ति बोध करने पर भी 'मां ही प्राणी मात्र का सर्वस्व है' — इस सत्य का बोध न हुआ। सदा ही यह आकांक्षा बनी रहती, कि एक ऐसी सजीव मूर्तिमयी मां का दर्शन लाभ कर्ल, जिसकी स्तिर्य, ज्योतिर्य दृष्टि से यह दाघ इदय ही बदल जाय।

जब स्वयं काल ने ही मुझे ढकेल कर उस पथ पर खड़ा कर दिया, जो शुरू का नव है, शाश्वत पथ। निश्चित रूप से उस नित्य लीला विहारिणी की इच्छा के बिना, उसकी क्रोड से शुजरे बिना, कोई शाश्वत नव पर जा ही नहीं सकता।

मातृ भाव की इस चरण क्षुधा को शान्त करने का एक उपाय न था। यत्र-तत्र परिव्राजक के समान भ्रमण जलता फिरता रहा, परन्तु अपने प्राणों के लिए जिस बस्तु की व्याकुल भाव से खोज रहा था, उसे कहीं न पाने से ज्ञा भी तुम्हि नहीं होती थी, संसार की किसी भी योग्य जल में मेरे लिए कोई आकर्षण नहीं था, हृदय में जो अकुलता, वेदना घनीभूत होकर मुझे पीड़ित कर रही थी, उसके प्रभाव से संसार का कोई भी रमणीय दृश्य चित्त में परिवर्तन नहीं कर सका था। घण्टों मौन भाव से रहा किनारे बैठा काष्ठ बैश धारियों को निहारा करता था, उपद कहीं कोई अवलम्बन मिल जाय।

जीवन के इसी वर्तुल में वह क्षण भी आ पहुंचा, जब स्वयं काल ने ही मुझे ढकेल कर उस पथ पर खड़ा कर दिया, जो गुरु का पथ है, शाश्वत पथ। निश्चित रूप से उस नित्य लीला विहारिणी की इच्छा के बिना, उसकी क्रोड से गुजरे बिना, कोई शाश्वत पथ पर जा ही नहीं सकता। यह न तो मेरे पूर्ण कर्मों का सुफल ही लगा और न ही मेरा कोई प्रकृति प्रदत्त अधिकार, बल्कि प्रकृति स्वरूपा मां भगवती का ही कोई कृपा कटाक्ष, उनकी अनुकम्मा मुझे गुरुदेव के पास ले चला, बिना शक्तिमय हुए भला कौन गुरु साहचर्य में आ सका है?

और इसी प्रकार वह जगञ्जननी काल के किसी विशेष क्षण पर आसूढ़ होकर, मेरी उंगली पकड़ कर उस चैतन्य माध्यम तक ले आयी, जो परम पूज्य गुरुदेव का पवित्र विग्रह है। मेरा परिचय मेरे प्राणाधार गुरु से करवा आयी; परन्तु जो कटाक्ष, जो संकेत आज गृह रहस्यों को उद्घाटित करते प्रतीत हो रहे हैं, तब क्या वे समझ में आ सके थे? पूर्णतया अनजान था मैं . . . एक अबोध शिशु की ही भाँति, जिसे किसी हलचल व उत्सव का बोध तो है, किन्तु वह उसका कारण व अर्थ नहीं समझता। उस समय तो सब कुछ एक कौतुक ही लगा था।

शुष्क देह में प्राणों का संचार

गुरु दीक्षा प्रदान करने के उपरान्त गुरुदेव समझा रहे थे — “शक्ति मंत्र तुम्हरा इष्ट है। जगञ्जननी महाशक्ति की मातृ भाव से उपासना करके ही तुम्हें साधना क्षेत्र में अग्रसर होना होगा। अभी से उसके लिए प्रस्तुत हो जाओ, स्वयं सन्तान होकर जगञ्जननी को प्रत्यक्ष अनुभव करने की अभिलाषा करो तथा समग्र रमणी मूर्ति में ही उस परम मातृशक्ति को देखने का अभ्यास करो।” इस प्रकार मेरी अन्तः प्रकृति को अपने विशुद्ध दिव्य चक्षुओं के माध्यम से गुरुदेव ने पल भर में ही भाँप लिया था।

मन में विचित्र आन्दोलन उत्पन्न हुआ। मंत्र साधना, अनुस्थान आदि के गृह विषयों पर तो कभी मेरा ध्यान ही नहीं गया था। अत्यन्त असहाय और कातर नेत्रों से सिर उठा कर गुरुदेव की ओर निहारने लगा। कुछ ही क्षणी में मेरी आग्रहपूर्ण प्रार्थना का स्नेहिल प्रत्युत्तर मिला। स्मित हास्य के साथ गुरुदेव कह रहे थे — “तुम्हारी अन्तः वेदना मुझसे छिपी नहीं है, आज ही तुम्हें विशेष शक्तिपात्र युक्त दीक्षा प्रदान करूँगा। योग को कठिन कियाओं में जीवन खापाने की फिर तुम्हें कोई अवश्यकता नहीं होगी, दीक्षा के द्वारा वही असम्भव प्रतीत होने वाला काय शण भर में पूर्ण हो सकता है।”

दिवस पर्वन्त निराहार रहने के उपरान्त जब दूबते सूरज का मिन्दूरी रंग पत्ते-पत्ते पर विद्युता हुआ गुरुश्वाम को लालिया और मुनहरी आभा से भरता हुआ, मानो गुरु चरणों में अभ्यर्थना कर रहा था, पृज्यपाद गुरुदेव मुझे आंगन में बिटा कर दीक्षा देने में मंत्रान् थे — “पूर्ण शक्तिपात्र युक्त पराम्बा दीक्षा” — जिसमें मेरी अन्तर्देह को विशिष्ट मंत्रों और अपनी तेजस्विता व तपःकर्जा द्वारा

स्मित हास्य के साथ शुरूदेव कह रहे थे — “तुम्हारी अन्तः वेदना मुझसे छिपी नहीं है, आज ही तुम्हें विशेष शक्तिपात्र युक्त दीक्षा प्रदान करूँगा। योग की कठिन कियाओं में जीवन खापाने की फिर तुम्हें कोई अवश्यकता नहीं होती, दीक्षा के द्वारा वही असम्भव शा प्रतीत होने वाला काय शण भर में पूर्ण हो सकता है।

झंकृत कर रहे थे; उस पूरे अन्तराल में मैं अपने शरीर के कण-कण में नवीन प्राणों का सञ्चरण स्पष्ट अनुभव कर रहा था। दीक्षा के अन्त में रोम रोम में गुज्जरित होती पूज्यपाद के

आशीर्वाद की घनि, वृक्ष पल्लवों से छन कर आती शरद की सुखद ऊँचा युक्त सूर्य की किरणों के समान मुझे चैतन्य व पुलकित कर गई थी।

तदुपरान्त एक विशिष्ट यंत्र एवं प्राणश्चेतना युक्त दिव्य माला प्रदान कर मुझे बापस लौट जाने की आज्ञा मिली। मैं भावविभोर हो चला था। अन्ततः गुरु चरणों में सर्वस्व आत्म समर्पण का संकल्प करते हुए वापिस काशी की ओर प्रस्थान किया। मत्र तथा उसके विधि-विधान की स्पष्टता के साथ डायरी में लिख लिया था, परन्तु साधनात्मक पृष्ठभूमि न होने के कारण मेरा मन सदैव आशकित रहता, अनुष्ठान प्रारम्भ करने का साहस ही नहीं कर पा रहा था। कभी-कभी भूष्य होकर सोचता, कि केवल युक्ति तर्क के द्वारा साधक के लिए आध्यात्मिक जीवन में अग्रसर होना सम्भव नहीं। विश्वास ही मूल है, जो लौकिक दृष्टि से असम्भव प्रतीत होता है, विश्वास के बल से ही वह संघरित हो सकता है। अतः मन-प्राण से सदगुर का आश्रय ग्रहण कर लिया, कि वे स्वतः ही छकेल कर आगे ले चलेंगे।

इसके आगे कुछ और ही कहां था? न कोई भावभूमि, न ही कोई उच्चता। परन्तु दीक्षा के बाद से ही मां का आकर्षण हृदय में प्रगाढ़ भाव से अनुभव करता। साथ ही संसार की सभी विज्ञ-बाधाओं के मरण भी उन नित्य चैतन्य स्वरूप श्री गुरुदेव की छवि, उनकी मनोहरी निरन्ध दृष्टि हर समय मुझे पागल की भाँति आकुल कर रही थी, उनकी कृपा प्राप्त करने के लिए हर क्षण हृदय में उत्कण्ठा रहती। कब उनके श्री चरणों में आश्रय पाकर नित्यानन्दमयी मां का दर्शन लाभ कर सकूंगा — सदैव एकमात्र यही ध्यान रहता। अन्तर की गहन पीड़ा के प्रभाव से धीरे-धीरे अन्न-जल सब छूटने लगा।

रक्त वर्णीय परिधान से सुशोभित उक्त तरुण स्त्री मेरे सम्मुख ही खड़ी थी। उसके हाथों में स्वर्ण निर्मित उक्त धाली थी। उसकी आकृति अत्यन्त दिव्य व लावण्यमयी थी, केशर मिश्रित दुर्घट सा गौर वर्ण, मेघ रूपी लहराती खुली केश रशि व ग्रीवा में गुलाब के पुष्पों का कण्ठहार . . . लगा जैसे उसके रोम-रोम से प्रकाश फूट कर पूरे स्थान को आलोकित कर रहा है। मैंने नैत्र पुनः भीच लिये। स्निग्ध प्रकाश होने पर भी वह इतना तीव्र था, कि दूसरी बार देखने का साहस ही नहीं हुआ।

निराहार, अनिद्रा और मन की व्याकुलता ही मुझे गंगा तट पर खींच लायी थी; ज्यों बिछुड़ हुआ बछड़ा अपनी मां को खोजता है, वैसी ही मैं कुछ देर बैठे रहने के उपरान्त इधर-उधर चक्कर

काटने लगा। उस समय मेरे हृदय में भी मां के कल्पित श्री चरणों के लक्ष्य की निरन्तर उच्छवास घनि हो रही थी, उनके बिना जीवन की कल्पना भी भवावह प्रतीत होने लगी। सायं काल मात्र गंगा जल का पान कर वहीं घाट पर निद्रा के आगोश में खो गया।

सजीव जगज्जननी का दर्शन

दूसरे दिन ब्रह्म मुहूर्त में ही, जब शुधा की ज्वाला में पीड़ित एवं हृदय की बेदना से दग्ध चुपचाप लेटा हुआ मैं सूर्योदय की प्रतीक्षा ही कर रहा था, कि कुछ अद्भुत सा सुनाई पड़ा। एक स्त्री उस घाट पर आकर मेरा नाम लेकर मुझे पुकार रही थी। अभी तक मैं आँखें बंद कर विनतन कर रहा था; उसकी पुकार को सुन मैंने नेत्र खोले और ध्यान से देखने लगा —

रक्त वर्णीय परिधान से सुशोभित एक तरुण स्त्री मेरे सम्मुख ही खड़ी थी। उसके हाथों में स्वर्ण निर्मित एक धाली थी। उसकी आकृति अत्यन्त दिव्य व लावण्यमयी थी, केशर मिश्रित दुर्घट सा गौर वर्ण, मेघ रूपी लहराती खुली केश रशि व ग्रीवा में गुलाब के पुष्पों का कण्ठहार . . . लगा जैसे उसके रोम-रोम से प्रकाश फूट कर पूरे स्थान को आलोकित कर रहा है। मैंने नैत्र पुनः भीच लिये। स्निग्ध प्रकाश होने पर भी वह इतना तीव्र था, कि दूसरी बार देखने का साहस ही नहीं हुआ।

पूरा बातावरण दिव्य, मनमोहक सुगम्य में आप्नावित हो उठा था। इसी अवस्था में मैं उस देव स्वरूपिणी स्त्री के साथ अत्यन्त अन्तरंगता से बातालाप करने लगा, मानों मैं जन्म-जन्मान्तर से उनका अत्यन्त परिचित हूं। तभी दूसरा आश्चर्य यह हुआ, कि नेत्र बंद करने पर भी ऐसा अनुभव हुआ, जैसे वह प्रकाश

जबने भीतर से बाहर फूट जा है। उस स्त्री ने मुझे एकत कर अत्यन्त स्नेहपूर्ण वार में कहा — “गंगा नान नहीं करोगे, विलम्ब हो जाए है।”

अब मैंने हाथ की लड़ियों की दरर से थोड़ा सा नेत्र खोल कर देखा — वे नवाँ थाली में पुष्प चुन रही थीं। उस निर्जन स्थान पर एक जलवत्थ वृक्ष के चतुर्दिक नाम प्रकार के फूलों के ब तुलसी के पौधे लगे हुए थे, उन्होंने से वे फूल ब तुलसी दल चुन कर बाली में सजा रहीं थीं।

प्रेम की साकार पुञ्जस्वरूपा उन्होंने पुनः कहा — “चलो! गंगा स्नान कर लो।”

बिना किसी संकोच के मैंने भोलेपन से उत्तर दिया — “हमारे घर में गंगा स्नान के लिए तिल, धूप, दीप आदि की जलशयकता होती है” . . . कहने के साथ ही मैंने देखा, उनकी थाली में तिल, धूप, हर्द, दीप रखे हुए हैं। मैं विस्मय से संकुचित हो उठा।

उन्होंने मुदु भाव से हँसते हुए कहा — “तुम यहाँ क्यों आ गए हो? मैं तो सभी के भीतर हूँ।”

उस समय मैं अपने भीतर एक अत्यन्त मधुर शब्द का गुञ्जरण सुनने लगा। वह किस प्रकार का शब्द था, यह वर्णन नहीं किया जा सकता; पर मुझे वह वीणा और बासुरी की विश्वित अवनि के समान अनुभव हुआ, उस दिव्य स्वर माधुरी से विमोहित हो मैं स्वयं को भूलने लगा।

तभी उन्होंने मुझे अपना मुंह खोलने की आज्ञा दी, जैसे ही मैंने अपना मुंह खोला, मुंह खोलते ही मुझे सुनाई पड़ा, कि मेरे मुंह और कण्ठिद्वयों के भीतर से ही वह अवनि निकल रही है।

पुनः मुझे चैतन्य करते हुए उनकी वाणी गुञ्जरित हुई — “मैं इस शब्द के पीछे ज्योतिर्यथ आलोक रूप में हूँ और आलोक के पीछे सर्वदशी, सर्वसाक्षी के रूप में विश्व ब्रह्माण्ड में व्याप्त हूँ।” — इतना कह कर वह मंथर गति से गंगा की ओर बढ़ गयीं। मंत्रमुरथ की भाँति मैं भी पीछे-पीछे चलने लगा।

बिना किसी संकोच के मैंने भोले पन से उत्तर दिया — “हमारे घर में अंगा रबाज के लिए तिल, धूप, दीप आदि की जलशयकता होती है” . . . कहने के साथ ही मैंने देखा, उबकी थाली में तिल, धूप, हर्द, दीप रखे हुए हैं। मैं विस्मय से संकुचित हो उठा।

महाशक्ति का लीला विलास

स्नान आट के निकट ही महाशमशान था, वहीं जाकर वे रुक गयीं। उनकी आँखों से असीम करुणा और बासनल्य का निझर प्रवाहित हो रहा था,

मेरे मस्तक पर अपना दाहिना हाथ रख कर वे बोलीं — “घर लौट जाओ। मैं तुम्हारे घर के मन्दिर में स्थायी रूप से रहूँगी। तुम्हारी अत्यन्त उच्चस्तरीय दीक्षा के कारण ही मुझे यहाँ आने को बाध्य होना पड़ा, पर स्थायी रूप से मुझसे व्यवहार करने के लिए साधना पथ पर अग्रसर होना आवश्यक है। इसके लिए गुरु कृपा ही एकमात्र सम्बल है, उनकी कृपा के बिना पूर्णत्व के पथ पर कुछ भी लाभ की सम्भावना नहीं। सत्य दर्शन होने पर भी जिसके द्वारा जीवन का बासनविक रूपान्तर न हो, वह चरम दर्शन नहीं। इसी प्रकार की व्याकुलता और प्रेम जब गुरु चरणों के प्रति उपजेगी, तभी तुम बासनविक, अत्यन्त जाज्वल्यमान ब्रह्म स्वरूप का दर्शन लाभ कर सकोगे, अभी केवल बासक के समान उनका हाथ पकड़े रही।”

इतना कह उनका हाथ अभय मुद्रा में उठ गया। हाथ का उठना था, कि मेरे नेत्रों के समक्ष कई-कई सूर्यों का प्रकाश, जो अत्यन्त शीतल था, जगमगा उठा और उसी के मध्य मैंने देखा — परम आराध्य श्री गुरुदेव रथारुद्ध अपूर्व स्वर्ण काँति से दैदीप्यमान हो रहे हैं। उनके मुख्यण्डल पर अपूर्व तेजस्विता और शरत् चन्द्र की भाँति निर्मल प्रसन्नता का प्रसार था, रोम-रोम से असीम मयत्व और करुणा प्रस्फुटित हो दिग्-दिगन्त को आलोकित कर रही थी . . . दूसरे ही क्षण दृश्यपटल साफ हो गया, वे देकीं भी अनन्धर्यान हो चुकी थीं।

पूर्ण ब्रह्ममयी उन जाग्रननी की साष्टांग प्रणाम कर मैं घर लौट चला। प्राची में सूर्योदय हो चुका था, पर मेरे मन के तमस को भेदने वाले उन कोटि-कोटि शीतल सूर्यों के प्रकाश में मैं अपनी परमबासल्यमयी शाश्वत मां का परिचय गुरुदेव के रूप में ला चुका था।

जबने भीतर से बाहर फूट जा है। उस स्त्री ने मुझे उकार कर अत्यन्त स्नेहपूर्ण व्यर में कहा — “गंगा स्नान नहीं करोगे, विस्मय हो रहा है।”

अब मैंने हाथ की लड़ूलियों को दरर से थोड़ा सा नेत्र खोल कर देखा — वे जब्ती थाली में मुष्टि चुन रही थीं। उस निर्जन स्थान पर एक जलवत्थ वृक्ष के चतुर्दिक नाना प्रकार के फूलों के ब तुलसी के फौथे लगे हुए थे, उन्होंने से वे फूल ब तुलसी दल चुन कर जब्ती में सजा रहीं थीं।

प्रेम की साकार पुञ्जस्वरूपा उन्होंने पुनः कहा — “चलो! गंगा स्नान कर लो।”

बिना किसी संकोच के मैंने भोलेपन से उत्तर दिया — “हमारे घर में गंगा स्नान के लिए तिल, धूप, दीप आदि की जलशयकता होती है” . . . कहने के साथ ही मैंने देखा, उनकी थाली में तिल, धूप, हर्द, दीप रखे हुए हैं। मैं विस्मय से संकुचित हो उठा।

उन्होंने मुदु भाव से हँसते हुए कहा — “तुम यहां क्यों आ रहे हो? मैं तो सभी के भीतर हूं।”

उस स्वयं में अपने भीतर एक अत्यन्त मधुर शब्द का गुञ्जरण सुनने लगा। वह किस प्रकार का शब्द था, यह वर्णन नहीं किया जा सकता; पर मुझे वह वीणा और बासुरी की विश्रित ध्वनि के समान अनुभव हुआ, उस दिव्य स्वर माधुरी से विमोहित हो मैं स्वयं को भूलने लगा।

तभी उन्होंने मुझे अपना मुंह खोलने की आज्ञा दी, जैसे ही मैंने अपना मुंह खोला, मुंह खोलते ही मुझे सुनाई पड़ा, कि मेरे मुंह और कर्णछिद्रों के भीतर से ही वह ध्वनि निकल रही है।

पुनः मुझे चैतन्य करते हुए उनकी वाणी गुञ्जरित हुई — “मैं इस शब्द के पीछे ज्योतिर्पय आलोक रूप में हूं और आलोक के पीछे सर्वदशी, सर्वसाक्षी के रूप में विश्व ब्रह्मण्ड में व्याप्त हूं।” — इतना कह कर वह मंथर गति से गंगा की ओर बढ़ गयीं। मंत्रमुरथ की भाँति मैं भी पीछे-पीछे चलने लगा।

बिना किसी संकोच के मैंने भोलेपन से उत्तर दिया — “हमारे घर में गंगा स्नान के लिए तिल, धूप, दीप आदि की जलशयकता होती है” . . . कहने के साथ ही मैंने देखा, उनकी थाली में तिल, धूप, हर्द, दीप रखे हुए हैं। मैं विस्मय से संकुचित हो उठा।

महाशक्ति का लीला विलास

स्नान आट के निकट ही महाशमशान था, वहाँ जाकर वे रुक गयीं। उनकी आँखों से असीम करणा और बासनल्य का निझर प्रवाहित हो रहा था,

मेरे मस्तक पर अपना दाहिना हाथ रख कर वे लोलीं — “घर लौट जाओ। मैं तुम्हारे घर के मन्दिर में स्थायी रूप से रहूंगी। तुम्हारी अत्यन्त उच्चस्तरीय दीक्षा के कारण ही मुझे यहां आने को बाध्य होना पड़ा, पर स्थायी रूप से मुझसे व्यवहार करने के लिए साधना पथ पर अप्रसर होना आवश्यक है। इसके लिए गुरु कृपा ही एकमात्र सम्बल है, उनकी कृपा के बिना पूर्णत्व के पथ पर कुछ भी लाभ की सम्भावना नहीं। सत्य दर्शन होने पर भी जिसके द्वारा जीवन का बासनविक रूपान्तर न हो, वह चरम दर्शन नहीं। इसी प्रकार की व्याकुलता और प्रेम जब गुरु चरणों के प्रति उपजेगी, तभी तुम बासनविक, अत्यन्त जाज्वल्यमान ब्रह्म स्वरूप का दर्शन लाभ कर सकोगे, अभी केवल बासक के समान उनका हाथ पकड़े रही।”

इतना कह उनका हाथ अभय मुद्रा में उठ गया। हाथ का उठना था, कि मेरे नेत्रों के समक्ष कई-कई सूर्यों का प्रकाश, जो अत्यन्त शीतल था, जगमगा उठा और उसी के मध्य मैंने देखा — परम आराध्य श्री गुरुदेव रथारुद्ध अपूर्व स्वर्ण काँति से दैदीप्यमान हो रहे हैं। उनके मुख्यण्डल पर अपूर्व तेजस्विता और शरत् चन्द्र की भाँति निर्भल प्रसन्नता का प्रसार था, रोम-रोम से असीम ममत्व और करुणा प्रसन्नित हो दिग्-दिगन्त को आलोकित कर रही थी . . . दूसरे ही क्षण दृश्यपटल साफ हो गया, वे देकों भी अनन्धर्यान हो चुकी थीं।

पूर्ण ब्रह्ममयी उन जाग्रननी को साष्टांग प्रणाम कर मैं घर लौट चला। प्राची में सूर्योदय हो चुका था, पर मेरे मन के तमस को भेदने वाले उन कोटि-कोटि शीतल सूर्यों के प्रकाश में मैं अपनी परमबासल्यमयी शाश्वत मां का परिचय गुरुदेव के रूप में या चुका था।

जबने भीतर से बाहर फूट रहा है। उस स्त्री ने मुझे उकार कर अत्यन्त स्नेहपूर्ण व्यंजन में कहा — “गंगा स्नान नहीं करोगे, विस्मय हो रहा है।”

अब मैंने हाथ की लगुलियों की दरर से थोड़ा सा नेत्र खोल कर देखा — वे नवाँ थाली में पुष्प चुन रही थीं। उस निर्जन स्थान पर एक जलवत्थ वृक्ष के चतुर्दिक नाना प्रकार के फूलों के ब तुलसी के पौधे लगे हुए थे, डर्ना में से वे फूल ब तुलसी दल चुन कर बाली में सजा रहीं थीं।

प्रेम की साकार पुञ्जस्वरूपा उन्होंने पुनः कहा — “चलो! गंगा स्नान कर लो।”

विना किसी संकोच के मैंने भोलेपन से उत्तर दिया — “हमारे घर में गंगा स्नान के लिए तिल, धूप, दीप आदि की जलशयकता होती है” . . . कहने के साथ ही मैंने देखा, उनकी थाली में तिल, धूप, हर्द, दीप रखे हुए हैं। मैं विस्मय से संकुचित हो उठा।

उन्होंने मुदु भाव से हँसते हुए कहा — “तुम यहाँ क्यों आ रहे हो? मैं तो सभी के भीतर हूँ।”

उस समय में अपने भीतर एक अत्यन्त मधुर शब्द का गुञ्जरण सुनने लगा। वह किस प्रकार का शब्द था, यह वर्णन नहीं किया जा सकता; पर मुझे वह वीणा और बासुरी की विश्वित ध्वनि के समान अनुभव हुआ, उस दिव्य स्वर माधुरी से विपोहित हो मैं स्वयं को भूलने लगा।

तभी उन्होंने मुझे अपना मुंह खोलने की आज्ञा दी, जैसे ही मैंने अपना मुंह खोला, मुंह खोलते ही मुझे सुनाई पड़ा, कि मेरे मुंह और कण्ठिद्वयों के भीतर से ही वह ध्वनि निकल रही है।

पुनः मुझे चैतन्य करते हुए उनकी वाणी गुञ्जरित हुई — “मैं इस शब्द के पीछे ज्योतिर्यथ आलोक रूप में हूँ और आलोक के पीछे सर्वदशी, सर्वसाक्षी के रूप में विश्व ब्रह्मण्ड में व्याप्त हूँ।” — इतना कह कर वह मंथर गति से गंगा की ओर बढ़ गयीं। मंत्रमुरथ की भाँति मैं भी पीछे-पीछे चलने लगा।

विना किसी संकोच के भौंके भोलेपन से उत्तर दिया — “हमारे घर में गंगा स्नान के लिए तिल, धूप, दीप आदि की जलशयकता होती है” . . . कहने के साथ ही भौंके देखा, उनकी थाली में तिल, धूप, हर्द, दीप रखे हुए हैं। भौंके विस्मय से संकुचित हो उठा।

महाशक्ति का लीला विलास

स्नान आट के निकट ही महाशमशान था, वहाँ जाकर वे रुक गयीं। उनकी आँखों से असीम करणा और बाल्सल्य का निझर प्रवाहित हो रहा था,

मेरे मस्तक पर अपना दाहिना हाथ रख कर वे बोलीं — “घर लौट जाओ। मैं तुम्हारे घर के मन्दिर में स्थायी रूप से रहूँगी। तुम्हारी अत्यन्त उच्चरसीय दीक्षा के कारण ही मुझे यहाँ आने को बाध्य होना पड़ा, पर स्थायी रूप से मुझसे व्यवहार करने के लिए साधना पथ पर अप्रसर होना आवश्यक है। इसके लिए गुरु कृपा ही एकमात्र सम्भव है, उनकी कृपा के बिना पूर्णत्व के पथ पर कुछ भी लाभ की सम्भावना नहीं। सत्य दर्शन होने पर भी जिसके द्वारा जीवन का वास्तविक रूपान्तर न हो, वह चरण दर्शन नहीं। इसी प्रकार की व्याकुलता और प्रेम जब गुरु चरणों के प्रति उपजेगी, तभी तुम वास्तविक, अत्यन्त जाज्वल्यमान ब्रह्म स्वरूप का दर्शन लाभ कर सकोगे, अभी केवल बालक के समान उनका हाथ पकड़े रही।”

इतना कह उनका हाथ अभय मुद्रा में उठ गया। हाथ का उठना था, कि मेरे नेत्रों के समक्ष कई-कई सूर्यों का प्रकाश, जो अत्यन्त शीतल था, जगमगा उठा और उसी के मध्य मैंने देखा — परम आराध्य श्री गुरुदेव रथारुद्ध अपूर्व स्वर्ण काँति से देवीप्यमान हो रहे हैं। उनके मुख्यमण्डल पर अपूर्व तेजस्विता और शरत् चन्द्र की भाँति निर्भल प्रसन्नता का प्रसार था, रोम-रोम से असीम ममत्व और करुणा प्रसन्नित ही दिग्-दिगन्त को आलोकित कर रही थी . . . दूसरे ही क्षण दृश्यपटल साफ हो गया, वे देवों भी अनन्धर्यान हो चुकी थीं।

पूर्ण ब्रह्ममयी उन जाग्रननी को साष्टींग प्रणाम कर मैं घर लौट चला। प्राची में सूर्योदय हो चुका था, पर मेरे मन के तमस को भेदने वाले उन कोटि-कोटि शीतल सूर्यों के प्रकाश में मैं अपनी परमवास्तव्यमयी शाश्वत मां का परिचय गुरुदेव के रूप में पा चुका था।

साधक साक्षी हैं

गुरु कृपा से पुत्र प्राप्ति



जब हमारे घर दूसरी पुत्री ने जन्म लिया, तब हमने विचार किया कि अब हमारी अगली सन्तान किसी भी विधि से पुत्र ही होना चाहिए। क्योंकि सभी शास्त्र यही कहते हैं कि पुत्र के बिना यह जीवन व्यर्थ है।

डॉक्टरों से विचार विषय किया लेकिन किसी ने भी पूरी सफलता देने वाली बात नहीं कही। सन् 1985 में एक बैठक जो बीस साल से प्रैविटस कर रहा है, उनसे सम्पर्क स्थापित किया। उसने दावा किया, कि उसकी विधि से हमारे यहाँ पुत्र जन्म देय होगा। उसने हमारे यहाँ आ कर अपनी विधि से पूर्णोष्ट यज्ञ भी किया लेकिन जब समय आया तब हमारे यहाँ तीसरी पुत्री ने जन्म लिया। अब तो हम एकदम निराश हो गये। हमने सोचा कि जब हमारे भाग्य में पुत्र है ही नहीं तो कहा से आयेगा।

रखी का स्थीलार जब आता था तो हमारी बेटियां घर में रखी हनुमान जी की मूर्ति को राखी बांधती थीं, ये सब देख कर हमारा हृदय फटने को आता था, ऐसे ही छः साल बीत गये।

जब 1991 में 'तात्रिक सिद्धियाँ' मेरे हाथ में आयी तो मेरे हृदय ने कहा, कि अब तुझे साक्षात् शिव स्वरूप गुरुदेव मिल गये हैं। ये ही हमारे अंधेरे जीवन को प्रकाश से भर देंगे। सन् 1994 में मैं और मेरी पत्नी ने गुरुदेव की आज्ञा से फोटो द्वारा पुत्र प्राप्ति दीक्षा ली। गुरुदेव ने हमें पुत्र प्राप्ति की साधना विधि दी। गुरुदेव के आशीर्वाद से हमने निश्चित समय में साधना पूरी को तथा रोज़ सोलह माला गुरु मंत्र का भी जप करते रहे।

आज 28.3.96 को मारिशस में सिद्धाश्रम साधक परिवार की जीत दुई, क्योंकि निखिल निवास में पुत्र रत्न ने जन्म लिया। मैं रोज़ साधना के बाद गुरुदेव से कहता था, कि प्रभु जो निखिल ज्योति आपने निखिल निवास में जलायी है, हर गुरुवार को धजन, कोतीन व हर 21 तारीख को सत्संग, यज्ञ एवं स्वधोर द्वारे बाल कौन करेगा? रोज़ गुरुदेव मुस्कराते

रहे। उन्हें सब कुछ पता है, उनके होते हुए उनके भक्तों को कभी हार नहीं होगी। हे गुरुदेव, आपके और माताजी के चरणों में हमारा हृदय पुष्ट समर्पित है।

हरिनाथ रामदहल, निखिल निवास,
ग्रांड रीवर, साउथ इंस्ट,
मारिशस।

गुरु कृपा से द्वाक्षा हुई

मैं पुलिस का मुख्यमंत्री हूँ व लोकायुक्त विशेष पुलिस स्थापना रीवा पुलिस अधीक्षक जी ने पत्र व्यवहार कर भ्रष्ट अधिकारियों की सूचना देने हेतु अनुमति प्रदान की, मैं सूचना देने हेतु छिन्दवाड़ा से रीवा चला गया। मैंने रीवा पुलिस अधीक्षक जी से 3.4.97 को व्यक्तिगत मुलाकात कर कार्यालय पर सूचना दी। सूचना देने के पश्चात मैं अपने लाज पर बिआम हेतु पहुँचा ही था, कि सम्भवतः गोपनीयता भंग हो जाने से भ्रष्ट अधिकारियों व उनके साथियों ने मुझसे बाद-विवाद आरंभ किया व जान में खत्म करने की धमकी दी। सभी हालातों से टकराते हुए, मैं रीवा बस स्टैण्ड से छिन्दवाड़ा लौटने के लिए आया, तो भ्रष्ट अधिकारियों ने मेरा बहुत अपमान किया। अपमान से बचने हेतु मैं गाड़ी (प्राइवेट बस रीवा से सतना) में बैठ गया। मैं रीवा से सतना तक आया, सतना आते ही मुझे भ्रष्ट अधिकारियों के साथियों ने बहुत मारा-पीटा व जबरन गाड़ी में बैठा कर अज्ञात गोदाम पर ले जाकर बन्द कर दिया व मुझे गोदाम पर ही खत्म करने की धमकी दी गई।

मैं दिनांक 3.4.97 की रात्रि 10 बजे से ही मूऱ्य गुरुदेव जी का स्मरण करने लगा धीरे-धीरे हालात में परिवर्तन आया मैंने गुरुदेव जी का जप निरंतर 8.4.97 तक किया। असामाजिक लोगों के द्वारा मुझे 9.4.97 को 5 बजे गोदाम से बाहज्ञत सतना बस स्टैण्ड पर लाकर छोड़ दिया गया।

मुझे वे दिन बाद आते हैं, जो मैंने गोदाम पर गुरुवार अगर गुरुदेव का साथ मुझे नहीं मिलता तो शायद मुझे अपनी

जिन्दगी से साथ घोना पड़ता। यह बात सत्य है और गुरुदेव के जीवन में भी मुझे नई जिन्दगी मिली है।

गोहन कुमार पिपलहा
गांधी गंग के पीछे बांड नं. 6
नई अबाढ़ी, छिन्दवाड़ा-2 (म.प्र.)

अनुभूति सुनायना अप्सरा साधना की

जन्म साधना; सूर्य ग्रहण से होली तक बार या पांच बार रात को साधना प्रारम्भ करने से पूर्व ही एक तैजस्की साधु ने आकर नुज़े कोई वस्तु प्रदान की। इसके बाद मेरे शरीर में विद्युत तरंग यी उत्पन्न होती रही, शरीर में एक अजीब सी आनन्दानुभूति हो रही थी।

कुछ क्षण बाद छोटे गुरुदेव अरुविन्द श्रीमाली जी ने दर्शन व आशीर्वाद प्रदान किया और इसके बाद ध्यान अवस्था में 10-15 लड़कियां दिखाई दीं, जिन्होंने काले वस्त्र पहने हुए थे। फिर एक लड़की दिखाई दी, परन्तु उसका मुँह दूसरी तरफ था और मेरी तरफ उसका सिर था, उसके लम्बे काले बाल खुले हुए थे और ऐसा महसूस हुआ जैसे वह श्रृंगार कर रही है। कुछ क्षण पश्चात एक लड़की उपस्थित हुई, जिसने काले वस्त्र पहने हुए थे और वह जोर-जोर से हँसने लगी और कहने लगी आँखें खोलो, परन्तु मैं निश्चित भाव से मंत्र जप करता रहा। अगले ही क्षण मेरे सामने था मां दुर्गा, लक्ष्मी और हनुमान जी का प्रतिविम्ब, उन्होंने मेरे चारों ओर चक्कर काट कर मेरी परिक्रमा की और अद्भुत ही गये।

इसके कुछ क्षण बाद ही मेरे सामने खड़ी थी एक घोड़शी सुन्दरी जिसने सफेद वस्त्रों को धारण किया हुआ था। उसने सफेद पुष्पों को सुन्दरता के साथ अपनी बेणी में सजाया हुआ था और अपनी बेणी व पुष्पों को आगे कर मेरे सामने बैठ गई व थोरे धीरे मेरी गोद में गिर सी गई और कुछ क्षण बाद सब सामान्य हो गया। मेरा मंत्र जप जारी था, कुछ समय पश्चात देखा तो ग्रहण का मोक्ष हो चुका था।

मुकेश त्यागी, राजनगर कालोनी
लोनी बांड, गाजियाबाद (उ.प्र.)

ऐसा भी होता है


मैंने 1994-95 में 21 अप्रैल को भोपाल में ज्ञान दीक्षा लौ और पंडिल में 'क्री' मंत्र का जप मात्र ग्यारह मिनट करते ही गुरुदेव का घमत्कार देखा। तब से ही गुरु पूजन में रुचि बढ़ी है और घर आकर गुरु मंत्र साधियों सहित प्रति गुरुवार को रात-रात भर जप करता हूँ।

अचानक गुरुदेव की कृपा से मेरी पल्ली के शरीर से

कपरी हवा (जो कि डायन थी) प्रकट होने लगी। प्रत्यक्ष गुरुवार की मेरी पल्ली के शरीर में आने लगी और अपने अप बकने लगी। डायन ने अपना पूरा परिचय दिया कि किस कारण से उसने इतना परेशान किया है? अब मेरी पल्ली शारीरिक रूप से स्वस्थ है और 14 जनवरी 1997 को गुरुदेव से ज्ञान दीक्षा भी उसे दिलवा दी है।

इसके पूर्व भी मैंने कई जगह बहुवें, मौलाना को बताया था, परन्तु कोई बीमारी में सुधार नहीं हुआ। यहां तक, कि पल्ली को गुरुदेव स्वप्न में आकर कहते थे कि घबराने की बात नहीं है मैंने जो कार्य लिया है उसे पूरा करके ही छोड़ा और गुरुदेव ने पूर्ण रूप से उपरोक्त बाधा को दूर कर दिया।

हे गुरुदेव, श्री चरणों में अनेकों बार चरण स्पर्श स्वीकार हो।

नरेन्द्र मिश्र सोलंकी
बाग जि.धार, म.प्र.

दुर्घटना में रक्षा

22 मित्रवर 93 में मैंने गुरु दीक्षा प्रहण की। मुझे व्यापारिक कार्य से कुछ पूँजी मिली, जो पूज्य गुरुदेव की कृपा का ही परिणाम थी। वैसे मैं बिहार राज्य के गिरिडीह जिला के दुमरी अञ्चल के अन्तर्गत निमिखा धाट का रहने वाला हूँ।

विवैनैस के सिलसिले में कई बार पटना से माल लाया हूँ, लेकिन 12 अप्रैल 96 को पटना के दीदारगंज में केंद्रासर ट्रायापोर्ट में ट्रक नं. बी आर -04-एच 3713 में हम तीन व्यापारियों ने मिलकर सामान लोड करवा कर, उसी ट्रक में मैं और मेरा भाई राकेश कुमार धार के लिए 9 बजे रात्रि में प्रस्थान किया।

कुछ दूर चल कर माल की सुरक्षा को दृष्टि से तीनों व्यापारी ट्रक में आ गये और मैं आँखें बंद किये लेटा हुआ था, कि अचानक हम स्लोगों का ट्रक एक विपरीत दिशा से तेजी से आ रही कोच बस से टकरा गया। ट्रक के आगे का हिस्सा ट्रकड़े-ट्रकड़े हो कर सङ्कट पर बिखुर गया और पलक झपकते ही ट्रक का पिछला भाग भी चुरी तरह से तहस-नहस हो गया, और उसी पल अचानक जोर से मेरे मुँह से निकला गुरुदेव की जय . . . गुरुदेव की जय . . .

और मैं तथा सभी व्यापारी बाल-बाल लच गये। किसी को कुछ खरोंच तक नहीं आई। मुझे तो ऐसा लगता है, कि मेरे माथ वह घटना ही नहीं थर्टी। यह गुरुदेव की रहस्यमय कृपा है। मैं आशा ही नहीं पूरी उम्मीद करता हूँ, कि उन्होंने सभी मेरे जीवन की घड़ियां गुजरें, गुरुदेव हर शिष्य के साथ हर क्षण ऐसे ही जुड़े रहें तथा सहारा देते रहें।

आगे या न माने

आप भी भैरव साधना में
सफलता प्राप्त कर सकते हैं

प्रत्येक व्यक्ति भैरव की साधना सम्पन्न करने में सक्षम नहीं हो पाता, क्योंकि इस साधना को अपने अन्दर समाहित करने के लिए अत्यधिक संयम, गम्भीरता, ओजस्विता एवं तेजस्विता की आवश्यकता होती है। फलस्वरूप कई बार प्रयत्न करने के उपरान्त भी साधक को इस साधना में सफलता प्राप्त नहीं हो पाती और वह अपने पूर्ण प्रयत्नों के बावजूद भी असफल होता रहता है। यदि साधक भैरव साधना करने से पूर्व यह प्रयोग सम्पन्न कर लें, या भैरव दीक्षा ग्रहण कर लें, तो फिर इस असफलता को सफलता में परिवर्तित किया जा सकता है।

यह प्रयोग सात दिन का है। साधक इसे रविवार से आरम्भ करें। काले वस्त्र धारण कर, रात्रि के समय अपने सामने चावल की ढेरी बना कर, उस पर 'भैरव गुटिका' स्थापित करें, गुटिका के चारों ओर पांच तेल के दीपक प्रज्ञवलित करें, दीपक मिट्टी के हों। फिर भैरव के जिस मंत्र को सिद्ध करना चाहते हैं, उस मंत्र को एक कागज पर काजल से लिख कर भैरव गुटिका के नीचे रख दें। इसके बाद निन मंत्र का जप 51 बार करें।

मंत्र

//ॐ श्वेत्याय फट//

Om Bhram Bhalrvay Phat

मंत्र जप समाप्त होने पर वह कागज तथा दीपक किसी निर्जन स्थान पर रख दें। सात दिन बाद आप भैरव गुटिका को नदी में प्रवाहित कर दें।

नीडायर (भैरव गुटिका) — 150/-

स्वप्न में जान सकते हैं
अपने किसी भी कार्य का फल

जब भी हम किसी कार्य को आरम्भ करते हैं, तो वर्तमान युग में फैले हृत-प्रांच तथा स्वार्थ, हानि आदि के



कारण इसके परिणाम के विषय में निष्कर्ष निकालना अत्यधिक दुष्कर हो जाता है, क्योंकि आपका कोई हितविनाशक भी अपने स्वार्थवश कभी भी आपसे ही विश्वासघात कर सकता है या अचानक कोई ऐसी आधा उपस्थित हो सकती है, जिसके कारण आपका बना-बनाया कार्य ही विफल हो सकता है। यदि आप अपने कार्य की गति को प्रारम्भ में ही जान लें, तो आप निश्चय ही अपनी बुद्धि तथा विवेक के आधार पर अपने कार्य में उपस्थित होने वाली आधाओं का पहले ही निदान कर सकते हैं।

आप रात्रि को सोने से पूर्व अपने हाथ-पैर धोकर, अपने बिस्तर पर ही बैठ कर, निम्न मंत्र का 21 बार उच्चारण करें, फिर अपने कार्य को कागज में लिख कर अपने सिर के नीचे रख कर सो जायें, तो निश्चय ही रात में आप स्वप्न के माध्यम से अपने कार्य के फल से सम्बन्धित संकेत प्राप्त कर सकेंगे।

मंत्र

//ॐ स्वप्नेश्वरी दर्शय ओम//

Om Swapneshwari Darshay Om

**आप अपनी प्रेमिका को अपने आकर्षण
में पूर्णतया बांध सकते हैं**

आप जिससे प्रेम करते हैं, वह आपकी तरफ ध्यान नहीं दे रहा है और आप चाहते हैं, कि वह आपकी अभिव्यक्ति का उत्तर दे, आपसे प्रेम करे, आपको बार बार तबज्जह दे, आपको अपने जीवन का अहम हिस्सा माने और आपके आकर्षण में पूरी तरह बंध जाय। परन्तु यदि

अध्यात्म 97 42



ऐसा नहीं हो रहा है, तो यह प्रयोग सम्पन्न तो करके देखिए, आपकी प्रेमिका निश्चय ही आपकी ओर आकर्षित होगी और वह स्वयं आतुर रहेगी कि आप उसे एक बार देख लें। यदि आप पत्नी के प्रेम में भी न्यूनता अनुभव कर रहे हैं, तो भी वह प्रयोग सम्पन्न करना आपके लिए अनुकूल सिद्ध हो सकता है।

शुक्रवार के दिन एक भोजपत्र पर आष्टमंध से अपनी प्रेमिका या पत्नी का नाम लिखें, फिर उसके चारों ओर अपना नाम लिख कर उस पर 'आकर्षण यंत्र' स्थापित करें। यंत्र पर इत्र, पुष्प चाढ़ाएं तथा मृगचित्त धूप लगाएं। फिर उसके समस्त पृष्ठापिभुख हो कर निम्न मंत्र का 65 बार उच्चारण करें —

मंत्र

//ॐ रूत्यै ऽम्//

Om Ratyei Om

मंत्र जप समाप्त होने पर यंत्र पर लगा हत्र स्वयं लग जाए। यह प्रयोग पांच दिन तक जारे। पांचवें दिन यंत्र को उसी कागज पर छोड़ कर नदी में प्रवाहित कर दें।

न्योजकर - 150/-

आपके पुत्र को तीक्ष्ण और मेधावी की श्रेणी में लाकर खड़ा कर सकता है यह प्रयोग

प्रत्येक माता-पिता की इच्छा होती है, कि उनको संतान तीक्ष्ण, कुशग्र बुद्धि और मेधावी हो, ऐसा होने पर वे गौरवान्वित हो उठते हैं, किन्तु प्रत्येक बालक या बालिका के साथ ऐसा नहीं होता है। कुछ बालकों की बुद्धि औसत होती है और उन्हें मेधावी बनाने के सारे प्रयत्न व्यथ हो जाते हैं। ऐसी स्थिति में यह प्रयोग आपकी संतान के बौद्धिक विकास के लिए अत्युत्तम प्रयोग है।

एक पात्र में कुंकुम से 'ॐ' लिख कर उस पर 'सरस्वती गुटिका' को स्थापित करें। यदि संतान सक्षम हो, तो स्वयं ही निम्न यंत्र का जप करे, अन्यथा माता-पिता उसके नाम का संकल्प लेकर निम्न मंत्र का जप 31 बार करें —



मंत्र

//ॐ शृं शृंगात्कै शृं शृं॥

Om Srim Sringatakei Srim Om

यह प्रयोग आठ दिन तक करें। आठ दिन बाद गुटिका को नदी में प्रवाहित कर दें।

न्योजकर - 125/-

क्या इत्रु आप पर निरन्तर हावी होते जा रहे हैं?

जीवन में चिरोधी या शत्रु पक्ष प्रत्येक व्यक्ति को स्वयं से अधिक शक्तिशाली लगता है और उसका अधिक समय इस प्रकार के तनावों में जूझने में ही व्यतीत हो जाता है। जब शत्रु अत्यधिक प्रबल होने लगे, तो वे व्यक्ति के सम्मान को, वश को, धन को लानि पहुंचा सकते हैं। यदि आपके समक्ष ऐसी परिस्थितियाँ उत्पन्न हो रही हैं, तो यह आपके लिए एक श्रेष्ठतम प्रयोग है।

किसी बुधवार की रात्रि में दक्षिण दिशा की ओर मुँह करके बैठ जायें तथा अपने साथने बाजोट पर तीन तेल के दीपक इस प्रकार रखें, कि उनसे एक त्रिभुज सा बन जाये। उन दीपकों के मध्य में सिन्दूर की देरी पर 'दुर्गा गुटिका' स्थापित कर दें और दाहिने हाथ में चावल के कुछ दाने लेकर निम्न मंत्र का 61 बार उच्चारण करें —

मंत्र

//ॐ जीवनैश्वर्यै ऽम्//

Om Jeevaneishwaryei Om

मंत्र जप समाप्त होने पर चावल के दाने अपने घर में चारों ओर वित्तेर दें। यह प्रयोग तीन दिन तक करें। तीन दिन पश्चात् दुर्गा गुटिका को किसी दुर्गा मन्दिर में चढ़ा दें।

न्योजकर - 150/-

प्रचण्ड तृफान से भी उपकर लेने वाला बगलामुखी यंत्र

बगलामुखी साधना भारत की प्राचीनतम एवं दस महाविद्याओं में से एक है। कलियुग में तो इसका प्रभाव पन-पन पर देखा जा सकता है।

शमुओं पर हाथी होने, बलवान शमुओं का मान-मर्दन करने, भूत प्रेतादि को दूर करने, मुकदमों में सफलता पाने एवं समस्त प्रकार से उज्ज्ञाति करने में बगलामुखी यंत्र श्रेष्ठतम सामा गया है। योगियों, तांत्रिकों, मात्रिकों ने इस की भूरिभूति प्रशंसा की है। जिसके हाथ पर यह यंत्र बंद्धा होता है, उस पर किया गया तांत्रिक प्रभाव निष्फल रहता है।

पहली बार प्रामाणिक विवेचना के साथ यह महत्वपूर्ण लेख इस पत्रिका के माध्यम से प्रस्तुत है —

आ एतीय तंत्र-मंत्र माहित्य अपने आपमें अद्भुत, आश्चर्यजनक एवं रहस्यमय रहा है। यंत्र-यंत्रों हम इसके रहस्य के मूल में जाते हैं, त्वां-त्वां हमें विलक्षण अनुभव होते हैं। इस साहित्य में कुछ तंत्र-मंत्र तो इतने समर्थ, बलशाली एवं शीघ्र फलदायी हैं, कि देख कर चकित रह जाना पड़ता है। ऐसे ही यंत्रों में एक यंत्र है — 'बगलामुखी यंत्र', जो प्रचण्ड तृफान से भी उपकर लेने में समर्थ है।

भारत के लगभग सभी तांत्रिकों ने एक स्वर से यह स्वीकार किया है, कि बगलामुखी यंत्र के समान और कोई अन्य विधान नहीं है, जो कि इतने वेग से और तुरन्त प्रभाव दिखा सके। एक तरफ जहां यह यंत्र शीघ्र ही सफलतादायक है, वहां दूसरी ओर विशेष अनुष्ठान एवं मंत्र जप तुरन्त कार्य सिद्धि में सहायता प्रदान करता है।

ब्रिटेन के प्रसिद्ध तंत्र विशेषज्ञ श्री समरफोर्ड ने यह मंत्र विद्ध कर और इसका प्रभाव देख कर कहा था, कि पूरे विश्व की ताकत भी इससे उपकर लेने में असमर्थ है, असहाय है।

दुलभ ग्रन्थ 'मंत्र महार्णव' में लिखा है —

ब्रह्मास्त्रं च प्रवक्ष्यामि सदय प्रत्यय कारणम् ।
यस्य स्मरणमात्रेण प्रवर्त्तोऽपि स्थिरायते ॥
अर्थात् 'इस मंत्र को सिद्ध करने के बाद मात्र स्मरण से ही प्रचण्ड पवन भी स्थिर हो जाता है।'

भारत के श्रेष्ठ और अद्वितीय तांत्रिकों ने भी एक स्वर से इस यंत्र की सराहना की है —

'जिस व्यक्ति के घर में यह यंत्र स्थापित है या जिस व्यक्ति ने अपनी भुजा पर इस यंत्र को बांध रखा है, उस पर कभी भी रात्रि हावी नहीं हो सकते, न वह जहर से मर सकता है, न उस पर आक्रमण से सफलता पाई जा सकती है और न उसकी अकाल गृह्य ही सम्भव है।'

— विजटा अधोरी

'आज के युग में, जब पग-पग पर शत्रु हावी होने की चेष्टा करते हैं, और हर प्रकार से नीचा विखाने का प्रयत्न करते हैं तब प्रत्येक उज्ज्ञाति चाहने वाले व्यक्ति के लिये यह

साधना सम्पन्न करना या यह यंत्र धारण करना आवश्यक ही नहीं, अनिवार्य समझा जाना चाहिये।'

— विक्र बाबा

'समस्त यंत्रों में बगलामुखी यंत्र सर्वश्रेष्ठ है, अद्भुत प्रभावशाली है तथा किसी भी प्रकार के मुकदमे में पूर्ण सफलता देने में सहायक है।'

— स्वामी बोधत्रय जी

'यंत्र तो मारत में सैकड़ों है परन्तु यह यंत्र अपने आपमें महायंत्र है और शत्रुओं का मान-मर्दन करने में पूरी तरह से सक्षम है।'

— स्वामी अरुपानन्द जी

'जो व्यक्ति अपने जीवन में बिना किसी बाधाओं के प्रगति चाहता है, प्रगति के सर्वार्थ शिखर पर पहुंचना चाहता है, उसके लिये बगलामुखी साधना या बगलामुखी यंत्र धारण करना आवश्यक है।'

— मां भारती

इस यंत्र का ही यह प्रभाव है, कि इसे तंत्र-मंत्र के क्षेत्र में सर्वोपरि मान्यता मिलती रही है और इसके बारे में शोध और प्रयोग प्राचीन काल से बराबर होता रहा है। आश्चर्य की बात तो यह है, कि इस यंत्र का उपयोग जहाँ हिन्दू राजाओं ने अपने शत्रुओं के मर्दन के लिए किया, वही मुस्लिम शासकों ने भी इसका प्रयोग कर सफलता प्राप्त की। रिचर्ड्सन के इतिहास में उल्लेख मिलता है, कि औरंगजेब ने अपने शत्रुओं को परास्त करने के लिए बगलामुखी साधना कराई और सफलता प्राप्त की। हिन्दू शासकों में तो चन्द्रगुप्त, विक्रमादित्य, समुद्र गुप्त और शिवाजी जैसे प्रतापी राजाओं ने इस मंत्र का प्रयोग और साधना अपने तांत्रिकों से करा कर शत्रुओं पर विजय एवं सफलता प्राप्त की।

इसकी साधना से मारण, वशीकरण, उच्चाटन एवं विद्वेषण प्रयोग भली-भांति सफलता पूर्वक सम्पन्न किये जाते हैं। जहाँ तक मेरा अनुभव है, इस मंत्र की साधना से बांझ स्त्री को मनचाही सन्तान प्राप्त करने में सहायता दी जा सकती है, दरिद्र व्यक्ति को लखपति बनाने के लिये मार्ग प्रशस्त किया जा सकता है और विपरीत मुकदमे में भी पूर्ण सफलता प्राप्त की जा सकती है, इसके साथ ही साथ शत्रुओं का मान-मर्दन कर उन पर विजय प्राप्त की जा सकती है।

जो भी व्यक्ति इस साधना को सम्पन्न करना चाहे, उसे चाहिए, कि वह योग्य गुरु के निर्देशन में ही इस कार्य को सम्पन्न करे।

साधना काल में प्रत्येक साधक को दृढ़ता के साथ इससे सम्बन्धित नियमों का पालन करना चाहिए और उसे चाहिए, वह किसी प्रकार की शिथिलता न बरते।

साधना काल में द्यान स्वयं योग्य बातें —

1. बगलामुखी साधना में साधक को पूर्ण पवित्रता के साथ जप सम्पन्न करना चाहिए और उसे पूरी तरह से ब्रह्मचर्य का पालन करना चाहिए।
2. साधक को पीले वस्त्र धारण करने चाहिए, धोती तथा ऊपर ओढ़ने वाली धोती, दोनों पीले रंग में रंगी हुई हों।
3. साधक एक समय भोजन करें और भोजन में वेसन से बनी हुई वस्तु का प्रयोग अवश्य करें।
4. साधक को दिन में नींद नहीं लेनी चाहिए, न व्यर्थ की बातचीत करनी चाहिए और न किसी स्त्री से किसी प्रकार का सम्पर्क ही स्थापित करनी चाहिए।
5. साधना काल में 'बगलामुखी यंत्र' स्थापित कर उसके सामने मंत्र जप करें।
6. साधक बाल न कटवावें और न धौर कर्म ही करें।
7. यह साधना रात को ही सम्पन्न की जाती है, अतः यह साधना रात के 10 बजे से प्रातः 4 बजे के बीच करें, परन्तु जो साधना सम्पन्न कर चुके हैं, वे साधक वा ब्राह्मण दिन को भी मंत्र जप कर सकते हैं।
8. साधना काल में घी प्रयोग में लेते समय उसमें पीला रंग ढाल कर अच्छी तरह मिला दें। दीपक में जो रुई का प्रयोग करें, उस रुई को पहले पीले रंग में रंग कर सुखा लें और इसके बाद ही उस रुई का दीपक के लिए प्रयोग करें।
9. इस साधना में छत्तीस अक्षरों वाला मंत्र प्रयोग करना ही उचित है और यही मंत्र शीघ्र सफलता देने में सहायक है।
10. साधना घर के एकान्त कमरे में, देवी मन्दिर में, पर्वत शिखर पर, शिवालय में या गुरु के सभीप बैठ कर सम्पन्न की जानी चाहिये।
11. इसके मारण, मोहन, वशीकरण, उच्चाटन आदि कई प्रयोग हैं, अतः गुरु से आज्ञा प्राप्त कर उनके बताये हुए रास्ते से ही साधना सम्पन्न करनी चाहिये।
12. इसे तंत्रों में 'सिद्ध विद्या' कहा है और इसके प्रयोग

का प्रभाव तुरन्त दृष्टिगोचर होता है, अतः सावधानी के साथ इस प्रयोग को सम्पन्न करना चाहिये।

13. मोक्ष प्राप्ति के लिये क्रोध का सम्पन्न आवश्यक है और यह इस प्रयोग के द्वारा सम्पन्न है, अतः मोक्ष प्राप्ति के लिये भी इसका प्रयोग साधक और वैष्णव लोग करते हैं।

बगलामुखी यंत्र

भगवती श्री बगला का पूजन यंत्र साधना में आवश्यक है, जो कि तास पत्र पर अंकित होता है। इस यंत्र के सम्बन्ध में तांत्रिक ग्रन्थों में स्पष्ट है —

मध्ये योनि समालिख्य तद-बाह्ये तु घडस्तकम् ।
तद बाह्ये अट्टदलं पदम् तद बाह्ये योदशच्छदम् ॥
चतुरस्त्र-त्रयं बाह्ये चतुर्द्वारोप शोभितम् ॥

ऊपर मैंने बगला यंत्र बनाने की विधि स्पष्ट की है, इस प्रकार बगला यंत्र बना कर इस पर पूजन प्रयोग तथा संजीवनी मुद्रा के साथ प्राण प्रतिष्ठा करके एक लाख या पाँच लाख यंत्र जप से इसे सिद्ध किया जाता है।

स्वामी श्री अनन्तानन्दनाथ इस विद्या के श्रेष्ठ जानकार हैं और उन्होंने बगला महाशक्ति का रूद्रयामलोक अनुष्ठान सिद्ध किया हुआ है, केवल इस साधना से वे श्रेष्ठतम साधक, सम्पूर्ण भारत में विख्यात और सभी शास्त्रों के पारदर्शी विद्वान होने के साथ-साथ संगीत विद्या के श्रेष्ठतम उत्ताप्तक हैं।

व्यापी इस साधना की तीन पद्धतियां प्रचलित हैं, जिसमें हृदयामलोक पद्धति कठिन होने के साथ-साथ सर्वश्रेष्ठ कही जाती है और इस प्रकार का मंत्र प्रयोग करके किसी भी क्षेत्र में पूर्ण सिद्ध प्राप्त की जा सकती है।

स्थानाभाव से मैं बगलामुखी साधना का पूर्ण प्रयोग यहां नहीं दे पा रहा हूं, परन्तु ग्रामाधिक बगला मंत्र और अत्यन्त गोपनीय ब्रह्मास्त्र विद्या स्पष्ट कर रहा हूं —

विनियोग

अस्यः श्री ब्रह्मास्त्र-विद्या बगलामुखा चारद ऋषये नमः शिरसी। त्रिष्टुप छन्दसे नमो मुखे। श्री बगलामुखी देवतायै नमो हृदये। ह्रीं बीजाय नमो मुखे। स्वाहा शक्तये नमः पदयोः। ॐ नमः सवाङ्ग श्री बगलामुखी-देवता-प्रसाद सिद्धयर्थं भासे विनियोगः।

आहार

ॐ ऐ ह्रीं श्री बगलामुखी सर्व-दुष्टानां मुख्य स्वप्निमि सकल-मनोहरणि अभिके इहागच्छ सत्रिधि कूरु सर्वार्थं साधय साधय स्वाहा।

ॐ मंत्र-तंत्र-धन्त्र विज्ञान अक्टूबर 97 द्वाधि औं

द्यान

सौधर्णामनसस्थितां चिनयनां पीतांशुकोल्लासिनीम् ।
हेमवांगरुचिं शशंकपुष्टुदा सच्चमक्षव्युताम् ॥
हस्तैमुदगरपाशवद्वरसनाः सम्बिधती भूषणैः ।
व्यापारो ब्रानामुखी विजगतां संस्तप्तिनी चिनयेत् ॥

मंत्र

॥ ऊँ ह्रीं बगलामुखी सर्वकुष्टानां वाचं नुक्तं
एवं सत्त्वधय जिह्वां कौत्तल्य दुद्धि विवाहय
ह्रीं ऊँ स्वाहा ॥

OM HLEEM BAGALAMUKHI SARWADUSTANAM
WATCHAM MUKHAM PADAM STAMBHAY JHWAM
KILAY BUDDHIM VINASHY HLEEM OM SWAHA

वस्तुतः इस छत्तीस अक्षरों वाले मंत्र में गजब की शक्ति और प्रभाव है, जो कि विश्व में अन्यतम है। इसका एक लाख या पाँच लाख मंत्र जप कर इसे मिळ कर लिया जाता है और फिर पुरश्चरण के लिए चाप्तक-कुसुम से दशांश यज्ञ तथा इसका दशांश तर्पण करना चाहिए।

जीवन में किसी भी प्रकार की वाधा हो या परेशानी हो, व्यापार में दिवालिया होने की स्थिति आ रही हो या शत्रु हाथी हो रहे हों या मुकदमे में विजय की सम्भावना शीण हो, तो इस प्रकार का अनुष्ठान सम्पन्न करना या कराना चाहिए।

बगलामुखी साधना के सम्बन्ध में कहा गया है, कि 'बगलामुखी माला मंत्र' अपने आपमें पूर्ण है और जो साधक मात्र एक माला नित्य बगलामुखी माला पत्र का जप कर लेता है, उसके जीवन में कोई वाधा व्यापा नहीं होती। पाठकों के हित के लिये वह परम गोपनीय मंत्र भी मैं इन पत्रों के माध्यम से पहली बार उजागर कर रहा हूं —

बगलामुखी माला मंत्र

॥ ऊँ नमो भगवती ऊँ नमो वीरप्रतापविजयर्थगवति बगलामुखि मम सर्वनिन्दकानां
सर्वदुष्टानां वाचं मुखं पदं सत्त्वधय अन्ने मुद्रय मुद्रय
दुद्धि विनाशय विनाशय अपरबुद्धि कुरु कुरु आत्मविरोधिनां शत्रुणां शिरो, लम्हाट मुख, नेत्र, कर्ण,
नासिकारु, पद अण अण, दन्तोऽच, जिह्वा, तुल, गृह्णा,
गुदा, कठि, जानु, सवागीपु केशादिपादपर्यन्तं
पादादिकेशपर्यन्तं सत्त्वधय सत्त्वधय खों खों मारय मारय,
परमंत्र, परमंत्र परतंत्राणि द्वेदय, द्वेदय आत्ममंत्रतंत्राणि
रक्ष रक्ष, ग्रहं निवारय, व्याधिं विनाशय विनाशय दुःखं
हर हर दाशिद्वय निवारय निवारय सर्वमंत्रस्वरूपिणि,

कल्प
विवरण
नम स
वाच स
स्त्र व
स्त्र व
उत्तर व
जीवन
पर स
करने
16.10

20.10

दुष्ट्यह, भूतथह पाधाणथह, सर्वचापडान्थह, चक्रिक्रमित्यस्थपह भूतप्रेत, पिशाचाना, शाकिनी, चक्रिनीग्रहणां पूर्वदिशा बन्धय बन्धय, वार्तालि मां रक्ष, दक्षिण दिशां बन्धय बन्धय, किरातवार्तालि मां रक्ष रक्ष, पश्चिम दिशां बन्धय बन्धय, स्वप्रवातालि मां रक्ष रक्ष, उत्तरदिशां बन्धय बन्धय उपकालि मां रक्ष रक्ष, पाताल दिशां बन्धय बन्धय बगला परमेश्वरी मां रक्ष रक्ष सकलरागान् विनाशय विनाशय, शत्रु पल्नायनामज प्रयोजनमध्ये रजनजनक्षीवशां कुरु कुरु, शत्रून् दह दह, एव पच, स्तंभय स्तंभय मोहय मोहय, आकर्षय आकर्षय, मम शत्रून् उच्चाटय उच्चाटय, हुं फट् स्वाहा।

वस्तुतः यह मंत्र सिद्ध करने के बाद यदि साधक इसका नित्य प्रयोग करता है, तो उसे जीवन में किसी भी प्रकार का कोई अभाव नहीं रहता।

जहां तक मेरा अनुभव है और यह प्राभाणिक अनुभव है, कि वर्तमान समय में अधिकांश नेता, अभिनेता और उच्च स्तर के व्यापारी तथा उद्योगपति अपनी बाह पर बगलामुखी

यंत्र धारण किये रहते हैं। मैंने स्वयं इस प्रकार के कई उच्च उद्योगपतियों को यह यंत्र सिद्ध करके दिये हैं और उन्होंने इसका तुरन्त तथा आश्चर्यजनक प्रभाव देख कर इसके प्रति श्रद्धा व्यक्त की है।

वस्तुतः यह साधना अत्यन्त प्रभावपूर्ण है और मेरी राय में प्रत्येक साधक को अपने जीवन में इसे अवश्य ही सम्पन्न करने चाहिए। कलिमुग में इसका प्रभाव आश्चर्यजनक है, अद्भुत है, चमत्कारी है।

यह लेख सन् 1981 के फरवरी माह के अंक में प्रकाशित किया गया था, जिसमें बहुसंख्यक साधकों को सफलता भी प्राप्त हुई थी। उसी लेख का पुनर्मिकाशन किया जा रहा है, जिसकी साधना सामग्री आप निःशुल्क प्राप्त कर सकते हैं। आप केवल दो पत्रिका सदस्य बनायें (जो आपके परिवार के सदस्य न हों) और संलग्न पोस्टकार्ड भर कर हमें भेज दें।

हम 423/- (दो पत्रिका सदस्यता शुल्क 195/- + 195/- + 390/- + डाक व्यय 33/- = 423/- की बी०पी०पी० से यंत्र सिद्ध प्राप्त प्रतिष्ठा युक्त 'बगलामुखी यंत्र' आपको भेज देंगे और आपके दोनों परिवारों को नियमित यूरो वर्ष पर्वन पत्रिका भेजते रहेंगे।

काल चक्र

सवय का चक्र निरन्तर गतिशील है और यदि सूक्ष्मता से देखें, तो प्रत्येक क्षण का अपना अलग विशिष्ट महत्व है। इस काल चक्र की गति को फलस्वरूप कुछ ऐसे विशिष्ट क्षण भी व्यक्ति के जीवन में आते हैं, जिनमें साधना विशेष को सम्पन्न करने पर सफलता का प्रतिशत अधिकतम होता है और अत्र साधक इन विशेष क्षणों को अपने जीवन में ऊपर लेते हैं।

इस सम्पर्क के अन्तर्गत ऐसे ही बार विशिष्ट साधना मुहूर्त को प्रस्तुत किया जा रहा है, जिनमें सम्बन्धित साधना सम्पन्न करने पर सफलता प्राप्त होती ही...

16.10.97 — गुरुवार, शत्रु पूर्णिमा, हर्षण योग, सर्वांगी लिंगद्वयोग, देवती नक्षत्र का यह संयोग मनोकामना पूरी हेतु श्रेष्ठ समय है। इस हेतु 'मनोकामना पूर्ति गुटिका' (नौद्यावर - 100/-) के समान तेल का दोपक लगा कर निम्न मंत्र का जप रात्रि 10:00 बजे से 12:24 तक करें, जप समाप्ति पर गुटिका निम्न स्थल पर फेंक दें—
॥ॐ शर्वी कामकरपिण्डे शर्वी ॐ॥

Om Kleem Kaamkrupinyet Kleem Om

20.10.97 — कार्तिक कृष्ण एक का संयोगी, सोमवार को सर्वांगी लिंगद्वयोग, अमृत सिद्ध योग तथा वरियान योग के संयोग पर 'सिद्धि माला' (नौद्यावर - 150/-) से रात्रि 8:24 से 10:48 तक निम्न मंत्र का जप कर आप अपने प्रवल शत्रु वो भी पराजित कर सकते हैं, जप समाप्त होने पर सब पहाने तक माला को धारण कर नदी में प्रवाहित कर दें—
॥ॐ शृं सिद्धद्वये शृं ॐ॥

Om Srim Siddhaye Srim Om

23.10.97 — गुरुवार, कार्तिक कृष्ण पक्ष को अष्टमी, सिद्ध योग, गुरु पुर्ण योग व अमृत सिद्धि योग का संयोग आकर्षक धून प्राप्ति की साधना हेतु एक श्रेष्ठ मुहूर्त है। इस दिन 'लघु नारियल' (नौद्यावर - 21/-) के समान थी वा दोपक जला कर निम्न मंत्र का जप रात्रि 10:48 से 12:00 तक करें। जप समाप्ति पर नारियल किसी चौराहे पर रख दें—

॥ॐ प्री प्री ॐ॥
Om Proum Preem Om

2.11.97 — गुरुवार, कार्तिक शुक्ल पक्ष की द्वितीया को अनुराधा नक्षत्र में सौधार्य योग व सर्वांगी लिंगद्वयोग विहित हो रहा है, जिसका उपयोग कर आप अपने व्यक्तित्व को पूर्ण सम्पादक व आकर्षक बना सकते हैं। रात्रि 7:36 से 9:12 तक एक तासपात्र में 'हिरण्यदा' (नौद्यावर - 120/-) को स्थापित कर निम्न मंत्र का जप करें। जप समाप्ति पर हिरण्यदा की नदी में प्रवाहित कर दें—

॥ॐ सं सम्मोहन्य ॐ॥
Om Sam Sammohnay Om

निःशुल्क!

सर्वथा मुफ्त!!

सर्व सिद्धिदा छिनमस्ता यंत्र

वैदिक काल से आज तक सभी ऋषियों, मुनियों, उच्चकोटि के साधकों ने समवेत स्वर से यह स्वीकार किया है, कि महाविद्याएं संसार की सर्वोत्कृष्ट साधनाएं हैं। एक महाविद्या की साधना को सिद्ध करने में ही साधक का लगभग एक पूरा जीवन व्यतीत हो जाता है तब कहीं जाकर वह साधना सिद्ध कर पाता है। यदि महाविद्या सिद्ध यंत्र प्राप्त हो जाय, तो फिर जीवन में किसी प्रकार की कोई न्यूनता अनुभव हो ही नहीं सकती है। महाविद्या सिद्ध यंत्र प्राप्त हो जाय, तो किसी प्रकार की कोई न्यूनता अनुभव हो ही नहीं सकती है। यदि सर्व सिद्धिदा छिनमस्ता यंत्र आपके जीवन के समस्त शत्रुओं को परास्त करने में सक्षम होगा, वही इस यंत्र के माध्यम से आप भावती छिनमस्ता की समस्त सिद्धियों को भी प्राप्त करने में सक्षम होंगे, निश्चय ही यह यंत्र आपके जीवन के लिए अत्यन्त अनुकूलता प्रदान करने वाला सिद्ध होगा, आपको मात्र इसे पूजन स्थान में स्थापित करने के बाद नित्य यंत्र का सिर्फ संक्षिप्त पूजन करना है और तीन माह पश्चात इसे नदी में प्रवहित कर दें।

जीवन का सर्वश्रेष्ठ दान — ज्ञान दान

ज्ञान दान को जीवन का सर्वश्रेष्ठ दान बताया गया है। आप भी 20 पूर्व पत्रिकाएं प्राप्त कर मन्दिरों में, अस्पतालों में, समाजीहों में, मंगल कार्यों में, ब्राह्मणों को, निर्धन परिवारों को दान कर सकते हैं और इस प्रकार उनके जीवन को भी इस श्रेष्ठ ज्ञान के प्रकाश से आलोकित कर सकते हैं, जो अभी तक इससे बच्चित है। इस क्रिया के माध्यम से अनेक मनुष्यों को साधनात्मक ज्ञान की शीतलता धन्त होगी और उनका जीवन एक श्रेष्ठ पथ पर अग्रसर हो सकेगा।

आप क्या करें?

आप केवल एक पत्र (संलग्न पीस्टकार्ड) भेज दें, कि "मैं 20 पूर्व प्रकाशित पत्रिकाएं मंगाना चाहता हूँ। आप निःशुल्क 'सर्व सिद्धिदा छिनमस्ता यंत्र' 330/- (20 पूर्व प्रकाशित पत्रिकाओं का शुल्क 300/- + डाक व्यय 30/-) की बी०पी०पी० से भिजवा दें, बी०पी०पी० आने पर मैं पोस्टमैन को धनराशि देकर छुड़ा नूँगा। बी०पी०पी० छूटने के बाद मुझे 20 पत्रिकाएं रजिस्टर्ड डाक द्वारा भेज दें।" आपका पत्र जाने पर तथा 300/- + डाक व्यय 30/- = 330/- की बी०पी०पी० से 'सर्व सिद्धिदा छिनमस्ता यंत्र' भिजवा देंगे, जिससे कि आपको यह दुर्लभ उपहार सुरक्षित रूप से प्राप्त हो सके।

अपना पत्र जोधपुर के पते पर भेजें।

:: सम्पर्क ::

यंत्र-तंत्र-यंत्र विज्ञान, डॉ श्रीमाली भार्ग, हाईकोर्ट कॉलोनी,
जोधपुर-342001, फोन : 0291-32209, फैक्स : 0291-32010

जाति नहीं
'बन' का
जन के बीच
ज्ञान में रहना
सम्बन्धित
माध्यम से
'लक्ष्मी सु
पत्ना'ने
विश्वप्रिये

का अर्थ इ

कमलवानि
गीवा वाल
देवी। तुम
करने वाल
इसका ताज
प्रवेश करें
पत्रानन्द
तन्मे भ

समान नेत्र

सम्पदा, वर्चस्व, स्वास्थ्य, पवित्रता, मन की निर्मलता, धन-धान्य, पुत्र-पौत्रादि, वृद्धि उवं दीर्घयु प्राप्त होते हैं लक्ष्मी सूक्तम् के नित्य पाठ करने से

जा

ब भी श्रीसूक्त का पाठ किया जाता है, तब
'लक्ष्मी सूक्तम्' का पाठ करना अनिवार्य माना
गया है, मात्र श्रीसूक्त का पाठ करने से पूर्ण फल की
प्राप्ति नहीं होती। वैदिक काल से लेकर वर्तमान काल तक
'धन' का महत्व कम नहीं हुआ है। याहे कोई भी युग क्यों न हो,
धन के बारे जीवन-यापन करना असम्भव है। इसी रहस्य को
ध्यान में रखते हुए हमारे पूर्वजों ने श्री सूक्त, लक्ष्मी सूक्त से
सम्बन्धित पूजा-पाठ की विधि को हमें सींपा है, ताकि उसके
माध्यम से हम अपने जीवन को पूर्ण बना सकें। इस लेख में
'लक्ष्मी सूक्तम्' के मर्म का विवरण किया गया है।

पचानने पश्चिनि पचपत्रे पश्चप्रिये पचदलायतामि ।
पश्चप्रिये पश्चवमनोऽनुकूले त्वत्पादपद्यं मयि सश्रित्स्व ॥

इस मंत्र में भगवती लक्ष्मी की सुर्ति की गई है। इस
का अर्थ इस प्रकार है —

"कमलबत्, विकसित सुन्दर मुख बाली है लक्ष्मी!
कमलवासिनी! तुम तो 'पश्चिनी' हो, कमल के समान कोमल
गीड़ा बाली हो। कमल पत्र की तरह विशाल आँखों बाली है
देवी। तुम सब को प्यारी हो, सबके मन को अनुकूलता प्रदान
करने वाली हो, अपने घरण कमलों से मुझे पवित्र बना दो।"
इसका तात्पर्य यह हुआ, कि लक्ष्मी हमारे घर में एक बार
प्रवेश करें और कभी न जाये।

पचानने पच ऊरु पचाक्षि पचसप्त्वं ।
तन्मे भजसि पचाक्षि येन सौख्यं लभाप्यहम् ॥

"हे कमलमुखी! कोमलांगी देवी! तुम कमल के
समान नेत्र बाली, कमल सदृश अत्यन्त कोमल ज़हावाली,



शुद्ध विषयों पर अपनी समृद्ध लेखनी
से मन्थन कर उसे यहज और सरल
रूप में लिखने वाले श्री कृष्ण, सुधाकर
दाव जी का यह लेख प्रस्तुत है।

उस कमल मीं कृपा दृष्टि से मुझे देखो, ताकि मैं जीवन में
सुख प्राप्त करूँ।"

अश्वदायी गोदायी धनदायी महाधने ।
धनं मे लभता देवि सर्वकामाश्च देहि मे ॥

"हे महालक्ष्मी! तुम घोड़े, गाय, धन-धान्य, दौलत
सब कुछ देने वाली हो। मुझे अपार धन प्रदान करो, मेरी सभी
कामनाओं को पूर्ण करो — यहीं मेरी प्रार्थना है।"

पुत्र पौत्र धनं धान्यं त्वत्प्रश्वादि गवे रथम् ।
प्रजाना भवसी मरता आयुष्मंतं करोतु मे ॥

"हे महालक्ष्मी! तुम समस्त जनता की माता हो! तुम्हारी
कृपा से मेरे घर में पुत्र, पौत्र, धन-धान्य, हाथी, घोड़े, गाय, रथ
इत्यादि समस्त वैभव प्राप्त हो सकें। मुझे दीर्घयु प्रदान करो, मो!"

हाथी, घोड़े, जमीन, धन-धान्य — यह सब होने के
आवज्जूद भी कुछ लोग रोग ग्रस्तता के कारण इसका उपभोग
नहीं कर पाते और कभी-कभी अकाल मृत्यु के शिकार भी बन
जाते हैं। अगर किसी के पास अपार धन हो, लेकिन उसकी आयु
अल्प हो, तो क्या प्रयोजन? इसलिए भक्त ने हाथी, घोड़े इत्यादि
वैभव मांगने के बाद 'दीर्घयु' की जात कही है।

धनप्रिनिर्धनं वायुर्धनं सूर्यो धनं वसुः ।
धनप्रिन्द्रो वृहस्पतिर्वरुणं धनमश्विनी ॥

सारा संसार लक्ष्मी का ही स्वरूप है। अग्नि, वायु, सूर्य, वसु, इन्, बृहस्पति, वरुण, अश्विनी देवता — ये सब लक्ष्मी के ही स्वरूप हैं। इनके द्वारा भी मुझे समस्त वैभव मिले," यही इस मंत्र का तात्पर्य है।

**वैनतेय सोमं पिब सोमं पिबतु बृत्रहा।
सोमं धनस्य सोमिनो महा ददातु सोमिनः॥**

वह चाहे भौतिक सुख हो या आध्यात्मिक प्रगति — सभी लक्ष्मी के माध्यम से ही प्राप्त होते हैं। आध्यात्मिक प्रगति का साधन यज्ञ है, साधनाओं में सिद्धि प्राप्त करने का साधन यज्ञ है, और यज्ञ लक्ष्मी (धन) के बिना सम्भव नहीं है। इसको हम अमृतत्व कह सकते हैं, अमृतत्व की प्राप्ति भी लक्ष्मी के माध्यम से ही सम्भव है। उपरोक्त मंत्र का अर्थ इस प्रकार है —

"हे वैनतेय! विनता के पुत्र गरुड़ देव! आप सोमरस का पान करो बृत्रासुर को समाप्त करने वाले इन् देवता भी सोम पान करें। तुम दोनों मुझे अमृत प्रदान करो, जिससे मैं अजर-अमर बन सकूँ।"

यज्ञ का मुख्य भाग लेने वाला इन् और यज्ञफल प्रदाता गरुड़ — दोनों से निवेदन किया गया है, कि जो भी यज्ञ करें, वे उस यज्ञ में सोमपान करें, उसका फल हमें प्राप्त हो, यही इस मंत्र का अर्थ है।

**न ब्रीथो न च मात्सर्यं न लोभे नाशुभा मतिः।
भवति कृतपुण्यानां भक्त्या श्रीसूक्तं जापिनाम्॥**

"इस लक्ष्मी सूक्त का जो पाठ करते हैं, उनके पास द्वोध, मात्सर्य, लोभ, कुबुद्धि, कपट इत्यादि नहीं हुआ करते, वे पुण्य पुरुष मात्तिकता की प्रतिमूर्ति होते हैं।"

इस मंत्र में लक्ष्मी प्राप्त करने का विधान स्पष्ट रूप से बताया गया है। कभी कोंध नहीं करना, लोभ, मत्सर्य, अपकार की भावनाओं को मन से निकाल फेंकने पर ही लक्ष्मी की कृपा मिलती है।

**सरसिजनिलये सरोजहस्ते
धवलतराशुक गंधमात्यशो भी।
भगवति हरिवल्लभे मनोजे त्रिभुवन
भूतिकरि प्रसीद मत्तम्॥**

"कमल में निवास करने वाली, कमल को हाथ में धारण करने वाली, शुश्रा श्वेत वस्त्र को धारण करने वाली, चन्दन, इन् आदि से नुगान्वत, पुण्य मालाओं से सुशोधित, विष्णु की प्यारी, तीनों लोकों की माता, सुन्दरता की प्रतिमूर्ति है लक्ष्मी! मुझ पर कृपा करो।"

विष्णुपन्नीं क्षमां देवीं माधवीं माधवप्रियाम्।

विष्णुप्रिया सखीं देवीं नमाभ्यच्युतवल्मभाम्॥

"भगवान विष्णु की पत्नी, क्षमा रूपिणी, लक्ष्मी को मैं प्रणाम करता हूँ।"

ॐ महालक्ष्मीं च विदमहे विष्णुपन्नीं च धीमहि।

तम्रो लक्ष्मीः प्रचोदयात्॥

"मैं विष्णु की पत्नी उस महालक्ष्मी का ध्यान कर रहा हूँ, वह देवी मेरी कुड़ि को प्रेरित करें।"

महालक्ष्मी हमेशा सत्त्व गुण की प्रतीक मानी गई है।

सब के मन में शुभ संकल्प जगे — यही इस मंत्र का अर्थ है।

आनन्दः कर्दमः श्रीदः चिक्लीत इति विश्रुतः।

ऋषवश्च श्रियः पुत्रा पूर्वि श्रीदेवी देवता॥

आनन्द, कर्दम, श्रीद (कुबेर) और चिक्लीत — ये चार लक्ष्मी के पुत्र हैं, ये सभी अपनी माता के गाथ मेरे घर में वास करें।

ऋणरोगादि दारिद्र्यं पापं च अपमृत्यवः।

भयशोकमनस्तापाः नश्वत् पम् सर्वदा॥

"हे पाप! मेरे जीवन के जरण, रोग, दारिद्र्य, पाप, अपमृत्यु, भय, शोक, मनस्ताप — ये सभी नष्ट हो जाए।"

जीवन में कोई अभाव न रहे, जिन्हा न रहे, व्याकुलता न रहे, भय, रोग, शोक न रहे। यही जीवन की पूर्णता है।

अतिम पंत्र आशीर्वादात्मक है —

श्रीवैर्वस्वमायुभ्यमारोग्यमाविधात्प्रवर्मानं पर्वीथते।

धनं धात्रं पशं बहुपुत्रलभं शतसवत्सरं दीर्घमावः॥

इस लक्ष्मी सूक्त का पाठ करने से सम्पदा, वर्चोव, दीर्घायु, स्वास्थ्य, पवित्रता, मन की निमलता, धन-धान्य, पुत्र पौत्रादि, कुड़ि एवं सौ वर्ष की आयु प्राप्त होती है।

इस प्रकार लक्ष्मी सूक्त एक उच्चकोटि का पंत्र है, इसका प्रत्येक श्लोक देवी का स्वरूप है। श्री मूर्ति के पाठ में 'लक्ष्मी सूक्त' को भी शामिल करना सीधा व्युत्प्रदात्वक है। इस सूक्त के पाठ में, नियमित रूप से इवन करने से कमला भवतिवद्य स्वरूपिणी लक्ष्मी अवश्य प्रसन्न होंगी। जो भी पूजा-पाठ किया जाता है, उसका फल तो मिलता ही है। जिन्हीं श्रद्धा, उत्ता ही फल। देवी देवताओं को खुश करना कदापि व्याप्त नहीं होता। शारदी में इस बात का उल्लेख देखने को मिलता है —

न देवतोधणं व्यर्थं गमिष्यति कदाचन॥

जगद्भन्नी मां कमला प्रसन्न हो जायें, तो हमारा जीवन सीधा व्युत्पादन यन जायेगा।

गुरु पूर्णिमा के पावन अवसर पर

हैदराबाद शिविर के अद्वितीय कंसेट्रमेंट

दुर्लभ क्षणों को आकर्षक रूप में
कैब कर पुक ही वीडियो कैसेट
में सजाया गया है, जिसमें सम्पन्न
कराये गए सभी महत्वपूर्ण
प्रयोग और दीक्षाएं तथा गुरुदेव
के दिव्य प्रत्यक्षांश हैं।

न्यौलावर - 200/-

आडियो कैसेट्स :

- १) दिव्य प्रवचन
- २) पूर्ण ब्रह्मशय प्राप्ति महामृत्युज्ज्वरा प्रयोग
क) ब्रह्मामृत्यु प्रयोग
ख) कुल-कृपजिल्ली प्रयोग
- ३) प्रवचन (सिद्धाश्रम वितरण)
- ४) क) राज-राजेश्वरी प्रयोग
ख) स्वामी सदिकालानन्द जी आळान पुष्प
पूजा (सिद्धाश्रम सप्तक)

न्यौलावर प्रति कैसेट - 30

:: आदेश ::

आदेश चाहें तो जोधपुर टेलीफोन पर या फैक्स से भी भेज सकते हैं
भेज तत्त्व यज्ञ विज्ञान दा. श्रीगांगा नगर, लाईकोर्ट कॉलोनी, जोधपुर (राज.) कोड : 0291 32209 200मेंस : 0291 32010

दुर्गार्चन विधान

शास्त्रोक्त विधि से
भगवती दुर्गा का पूजन
अर्चन का पूर्ण विधि
विधान प्रस्तुत है इस
दुर्लभ कैसेट में जो आपके
लिए अत्यन्त उपयोगी है।

न्यौलावर - 30/-

गुरुर्गृहणी

SIDE A

1. ब्रह्मा विष्णु देवता देवी
2. आवाहयामि आवाहयामि
3. निखिलेश्वर भुवनेश्वर

SIDE B

1. जोधपुर के हमारे सांवर्जिया
2. ३० निखिल ३० कार निखिल
3. जय गुरुदेव दयनिधि (आरती)

संगीत की नवीनतम टेक्नोलॉजी से युक्त
है एस. सीरीज की यह नई प्रस्तुति

न्यौलावर - 30/-

जी

हाँ ! यह बिलकुल सच बात है कि मैंने प्रेत देखे हैं इन्हीं खुलीं आँखों से । वैसे तो जीवन में कई भौंके ऐसे आये हैं, जिनमें कि मुझे इन्हीं नंगी आँखों से प्रेत देखने का भौंका मिला है । जैसे मेरे एक आबा हुआ करते थे, उनसे प्रार्थना करने पर वे किसी शक्ति का आहान करते थे और कुछ क्षणों बाद घर के द्वार पर लगे जामुन के वृक्ष पर एक लोटा उतरना-चढ़ना प्रारूप कर देता था । इसके अलावा जीवन में और भी कई ऐसे अवसर आये हैं, जिनमें मुझे प्रेत देखने का सौभाग्य प्राप्त हुआ है । पर जिस घटना का वर्णन मैं करने जा रहा हूँ, वह बड़ी ही विचित्र है ।

मेरे ही शहर में मेरे मित्र रहते हैं, जो लखनऊ विश्वविद्यालय के एक विभाग में विभागाध्यक्ष हैं और उच्चकोटि के गृहस्थ संत हैं । उन्होंने मुझे राजयोग एवं तत्त्व रिखाया है । यह ही - उच्चकोटि के साधक हैं वे । अनेक उच्चकोटि के साधकों का उन्हें सानिध्य प्राप्त हुआ है । मैं अक्सर उनके घर दर्शन लाभ एवं ज्ञानार्जन के लिए जाया करता था । शहर में आये हुये संतों, महात्माओं की कृपा एवं दर्शन भी उन्हीं की कृपा से मुझको सुनिध हो जाते थे । मां आनन्दमयी, बाबा सीताराम एवं ग्रामी पुरुषोंनन्द जैसी महान् विभूतियों से उन्होंने ने मुझको मिला कर दर्शन लाभ कराया था ।

अमीनाबाद में चाहर से एक एस.पी. महोदय आकर रह रहे थे । उनकी पोस्टिंग लखनऊ में थी, स्वतंत्र भारत

कामशियल टाइप कालेज के पास ही उनका घर था । उनके घर में कुछ भी नहीं जानता था, डॉक्टर साहब यानी विभागाध्यक्ष महोदय से ही उनका परिचय था । एस.पी. महोदय की पोस्टिंग रायबरेली नशा बाराबंकी आदि आसपास के इलाकों में विभिन्न स्थानों पर हो चुकी थीं । वे पुलिस विभाग में कई पदों पर काम कर चुके थे, अकेले रहते थे, बाल-बच्चे उनके साथ वहाँ नहीं रहते थे ।

डॉक्टर साहब ने कहा, कि तिवारी ! चलो, तुम्हें एक ऐसे मज्जान से मिलाते हैं, जिन्हें प्रेत मिठ है । तुमने कौतुकलवश उनके साथ चलने को तत्पर ही गया । सभ्या का समय था वह । सूर्योदय हो चुका था, जब हम लोग वहाँ पहुँचे, द्वार पर लगी घंटी दबाई, तो तुमना ही द्वार खुल गया और एक लम्बी-धीड़ी आकृति का धनो व्यक्ति मेरे सामने आकर खड़ा हो गया । हल्का सांकला रंग, रोशीली मूँछ, बड़ी आँखें थीं उनको पर आँखों में आकर्षण के बजाय प्रथम दृष्टि में देखने पर चाकू की धार जैसा एक तीखापन दृष्टि गोचर हो रहा था । उनकी गम्भीर आवाज गूँजी - 'कहिये !'

डॉक्टर साहब ने अपना परिचय दे कर कहा, कि

इन्दर चन्द तिवारी भद्रै से गोदक किन्तु अनुभव निये हुए प्रामाणिक लेख ही आपके लिए लाते हैं । प्रस्तुत लेख स्वयं लेखक के साथ घटित हुई घटना का ही गोमांचिक वर्णन है ।

भूत, प्रेत, पिशाच इत्य योनियाँ हैं,
साथनाओं के माध्यम से भूत

और प्रेत सिद्ध भी किये

जा सकते हैं, वे

मनुष्य से भी ज्यादा

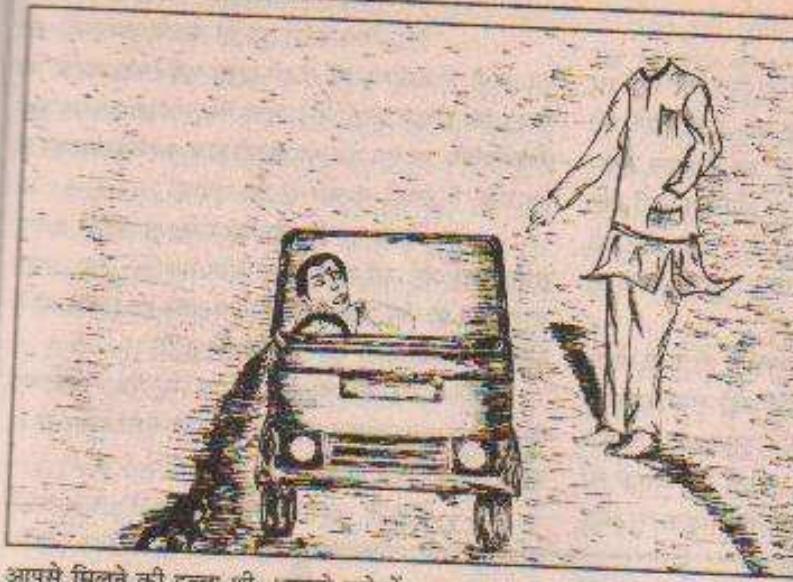
विश्वासपात्र होते हैं,

चौरास घाट सेवा में

रह रहते हैं और अनेक असम्भव

कार्यों को भी सम्भव कर सकते हैं ।

लेखक ने विश्वास के साथ प्रेतान्मा को देखा है और उसका वर्णन इन पंक्तियों में किया है, जिससे कि यह विश्वास हो सके, कि चाहनव में ये योनियाँ भी जीवन में होती हैं ।



आपसे मिलने की इच्छा थी, आपके बारे में बहुत कुछ सुन रखा है, अतः आप से मिलने की जिज्ञासा हो आई।

— आइये।

कहते हुये एस.पी. महोदय द्वार से हट कर एक किनारे हो गये और हम लोगों ने कमरे में प्रवेश किया। अजीब प्रकार की सुगम्भ व्याप्ति थी कमरे में। सुगम्भ ही कहेंगे उसको, किन्तु उसको सूच कर चित्त में किसी प्रकार की प्रसन्नता की अनुभूति नहीं हो रही थी, अलिंग गम्भा लग रहा था, कि मानो चित्त की एकाग्रता धीरे-धीरे धंग होती जा रही है और मन और नैराश्य में लीन सा होता जा रहा है। उस सुगम्भ को केवल अनुभव ही किया जा सकता था, चमोली, केवड़ा, गुलाब व चन्दन कह कर उसको इंगित नहीं किया जा सकता। कमरे के दाहिनी तरफ एक छोटी सी बेंज रखी हुई थी, जिसके कल्पर किन्होंने संत की तस्वीर बढ़े सलीके से साज़ कर रखी हुई थी। उस पर फूल बढ़े हुये थे, अगरबत्ती पहले जलाई गई होगी, अवशेष के रूप में राख का छेटा सा ढंग पड़ा हुआ था।

सामने पड़ी प्लास्टिक की एक रंगीन चटाई पर हम लोग बैठ गये और एक सफेद प्लास्टिक की चटाई पर वह महाशय स्वयं बैठ गये। अजीब रहस्यमय चेहरा था उनका, लम्बी और गोल आकृति के बीच ऐसा चेहरा था उनका, मानो बालटी को उलट कर रख दिया गया हो। कुछ देर तक कमरे में घोर नीरवता व्याप्त रही, फिर उस खांसेशी को तोड़ते हुए स्वयं एस.पी. साहब बोले — “कहिये मैं आपकी क्या सेवा कर सकता हूँ? कैसे आपने इस कुटुंब पर पधारने का काट किया?”

डाक्टर साहब ने उत्तर दिया — “सुना है आपको

प्रेत सिद्धि है?”

इतना सुनने पर एस.पी. महोदय के मुख पर बड़ी गहरी गम्भीर विषादयुक्त रेखा खिंच गई और वे दो-तीन मिनट तक चिल्कुल खौन रहे। पुनः मेरे मित्र और मेरी ओर प्रश्नात्मक दृष्टि से देख कर उन्होंने गहरे शोक के सागर में डूब कर कहा — “हाँ! डॉक्टर साहब मुझे प्रेत सिद्धि है।

डाक्टर साहब ने उत्तर पाकर पुनः डॉक्टरतावश कहा — “क्या आप मुझे उसके दर्शन करा सकते हैं? क्या वास्तव में ऐसा होता है?”

— “बड़ा जटिल प्रश्न आपने मेरे सम्मुख खड़ा कर दिया है।”

— “क्यों कोई काट है आपको इससे?”

— “मत पूछिये, डॉक्टर साहब! इस चक्कर में मैं बड़ा नुकसान उठा चुका हूँ। बड़ी कीमत चुकानी पड़ी है मुझे।”

— “मैं समझा नहीं आपकी बात।”

— “इसी चक्कर में मैं अपना एक जवान बेटा गवां चुका हूँ। वह कहानी काफी दर्दनाक है और उसकी याद आते ही मेरा रोम-रोम कांप उठता है। किर कभी।”

— “जैसा आप समझें।”

— “पर चलिये, जब जात हिंड ही गई है, तो उस दर्दनाक घटना का भी जिक्र किए देता हूँ। हुआ यों था, कि मैं उस समय सहारनपुर में नियुक्त था। जवानी का जोश था, प्रेत की सिद्धि थी और मेरे गुण ने मुझे एक चिमटा दे रखा था। चाहे जैसा प्रेत बाधा सुक प्राणी हो, मेरे पहुँचने पर, केवल दो बार चिमटा बजाने पर, व्यक्ति पर चढ़ा हुआ प्रेत उसे तुरन्त छोड़ कर भाग जाता था। मेरे घर से दूर लगभग दो किलोमीटर पर मेरे मातहन काम करने वाले एक दरोगा के पुत्र पुत्र को किसी प्रेत ने पकड़ रखा था। तमाम पैसा खीच करने पर भी दरोगा अपने पुत्र को ठीक नहीं करा पा रहे थे। मेरे बार में उन्हें भली-भाली जात था। एक दिन मुझ से उस बालक को ठीक करने की उन्होंने अनुनय खिनव की। दूसरे दिन मंगलवार था। मैंने उनसे बाधा किया, कि कल सत को रायरह से बारह बजे के बीच मैं आऊंगा और उसे ठीक कर

दूंगा, तुम घर पर ही मिलना।

दूसरे दिन नियत समय पर गाड़ी निकाली और उस पर गुरु द्वारा दिया गया चिमटा रख कर मैंने अपने बेटे अनिल से कहा, कि वह दरकारा जा बन्द कर ले। उस समय वही अकेला बेटा था। अब तो एक बेटा और एक बेटी और हैं। उसने मेरी आज्ञा का पालन किया। मैंने गाड़ी स्टार्ट की और दरोगा जी के घर की ओर चल दिया। घर से चलने पर अनिल बिलकुल ठीक टाक था।

गाड़ी अभी मुश्किल से दो फलांग ही चली होगी, कि लगा जैसे सड़क पर सामने से कोई बड़ी सम्मी आकृति गाड़ी की ओर बढ़ी चली आ रही है। उसका पूरा आकार तो दृष्टिगोचर हो रहा था, पर लग रहा था, कि उसके सर नहीं है। इसके अतिरिक्त लग रहा था, कि सड़क पर कोई भी प्रण तुफान आ गया है और वह गाड़ी की ऊँड़ा ले जायेगा। मैंने गाड़ी को धीमा किया, पर लगने लगा, कि गाड़ी काढ़ू में नहीं आ रही है और वह अवश्य कहीं न कहीं, किसी न किसी से लड़ जायेगी। मैंने गाड़ी को सड़क के किनारे करके रोक दिया।

वह आकृति भी गाड़ी के साथ-साथ रुक गई। उसने मुझे गाड़ी से नीचे उतरने का इशारा किया। मैंने उसकी आज्ञा चुपचाप मान ली और सड़क पर उतर आया, तो पाया कि उसकी आकृति तो बड़ी सम्मी है, परन्तु उसके मात्र धड़ है, सर नहीं है। इसके अतिरिक्त वह जमीन से लगभग छः इंच ऊपर हवा में खड़ा है तथा उसके पीरों के नीचे अंगारे धधक रहे हैं। मैं उस आकृति को अचानक सजीव सम्मुख देख कर धबरा उठा।

इतने में उसने मेरे कन्धे पर अपना आवां हाथ आगे बढ़ा कर रख दिया। मुझे लगा, कि जैसे मेरे कन्धे पर किसी ने भारी पहाड़ रख दिया हो। अचानक उसने मुझको सम्मोहित करते हुए कहा — “सुनते हो?”

— “हाँ! हाँ! सुन रहा हूं, बोलो आप कौन हैं और मुझ से क्या चाहते हैं?”

— “मैं जो कह रहा हूं उसे ठीक से सुनो, समझो; नहीं तो पछताओगे।”

— “बोलिये, आप क्या सुनाना-समझाना चाहते हैं?”

ॐ मंत्र-तंत्र-वंत्र विज्ञान अवदूर्बर ७७ छ३

— “देखो जिस घर में तुम प्रेत भागाने जा रहे हो, उस मत जाओ, मैं हरपिज उसे छोड़ने वाला नहीं। उस लड़के को मैं मार कर ही दम लूंगा। तुम्हें अगर पैसा चाहिये, तो वह तुम्हें पिल जायेगा, पर तुम उस लड़के को ठीक करने के चक्कर में मत पड़ो, मैं उसको मारकर ही दम लूंगा।”

अब जाकर पूरा किस्सा मेरी समझ में आया। अब मैं समझ गया और उसे हड़कते हुए मैंने कहा — “जा अपना काम कर। तेरे जैसे पचासों प्रेत मैं देख चुका हूं। लड़के को मैं ठीक करके रहूंगा। तू मेरा क्या कर लेगा?”

— “कर तो मैं बहुत कुछ लूंगा। मेरे मुह न लगें, नहीं तो आपको बहुत पछताना पड़ेगा। आप मुझे बैलेन्ज कर रहे हैं, यह न करें तो ठीक रहेगा।”

— “जाओ, जाओ अपना काम करो”, कह कर मैं गाड़ी पर पुनः बैठकर दरोगा जी के घर की ओर चल पड़ा। घर पहुंच कर मैंने देखा, लड़का गुमसुम सा चुपचाप बैठा हुआ था। मैंने उसकी तरफ देखा, उसने अपनी निगाह झुका ली। दरोगा जी मुझको देख कर उठ खड़े हुए।

— “सर आइए।”

— “चहो आपका बेटा है न?”

— “हाँ सर। यही है। मैं यह चुका हूं इलाज कराते कराते। अब आपका ही सहारा है, आप ही मेरे बच्चे को बचा सकते हैं।”

गम्भीर आवाज में मैंने कहा — “सब भगवान भैरवानन्द गुरुदेव ठीक करोगे।”

मैंने दरोगा जी से एक बालटी पानी मंगवाया तथा थोड़ा कपूर लाने को कहा। कपूर लाकर दरोगा जी ने मुझको दे दिया। कपूर एक और रख कर मैंने बालटी भर पानी उस लड़के पर डेल दिया। कपूर जला दिया तथा मैंने अपना चिमटा उतारा और दो बार जोर से उसे जमीन पर पटक दिया। लड़का जोर से चीखा और एक धोर नीरवता आतावरण में ब्याजा हो गई। लड़का दो मिनट के लिए बेहोश हो गया और उसके बाद वह पुनः उठ कर बैठ गया। चेहरे पर उसके ऐसी चमक लौट आई, जैसे उसे कुछ हुआ ही न हो। उसने मुस्कराते हुए आगे बढ़कर मेरे पैर छूए। मैंने उसे आशीर्वाद दिया और कहा — “जाओ पिता

जो के पैर छुओ और मौज करो।"

उसने मेरी आज्ञा का पालन किया और बिना उस घर में किसी प्रकार का नाशता-पानी किये मैं पुनः गाड़ी पर सवार हो घर की ओर चल पड़ा। रस्ते में मुझको कुछ विचित्र सी उलझन का एहसास होने लगा। मन में अजीब तरह का भय जैसा अनुभव हो रहा था और ऐसा लग रहा था कि मैं गाड़ी अब और नहीं चला पाऊंगा। अचानक मेरी गाड़ी बढ़ जोरों से डिवाइडर से जाकर टकरा गई और उलटो-उलटो बची। मैंने नीचे उतर कर देखा, गाड़ी लगभग टोक-ठक थी, कोई विशेष क्षति नहीं हुई थी। मैं पुनः गाड़ी से चल पड़ा। घर पहुंचने पर घंटी दबाई, पर कोई द्वार खोलने नहीं आया। पुनः मेरे घंटी बजाने पर कराता हुआ मेरा बेटा द्वार पर आया और द्वार खोला, पर यह क्या? मैं उसका चेहरा देखकर कांप उठा। उसको देख कर ऐसा लग रहा था, कि जैसे उसको किसी ने पकड़ कर निचोड़ दिया हो, उसकी आंखें एकदम निस्तेज लग रही थीं, सारा शरीर पीला पड़ गया था। स्वस्थ हाथ पैर एकदम ढीले-ढाले हो गये थे।

— "क्या हुआ तुम्हको अनिल?"

— "पापा! मेरी ढालत बहुत खराब है। मैं पेट के दायें हिस्से के दर्द से मरा जा रहा हूँ। इसे जरा छूकर देखिए, चिलकुल पत्थर जैसा हो गया है।"

मैंने उसे वहीं जमीन पर लिटा दिया, उसके पेट का दाहिना हिस्सा पत्थर की तरह कठोर हो गया था, मेरे छूते ही वह ऐसी दर्दनाक आवाज में चीख उठा, मानों वह पेट न छूकर किसी पके फोड़े को छुआ गया है। मैंने उसको उठा कर चारपाई घर लिटाना चाहा, पर काफी जोर लगा कर ही यह काम पूरा किया। चूंकि उसका शरीर यूं तो देखने में काफी निचुड़ जैसा गया था, पर वह काफी भारी हो गया था। एकदम पत्थर जैसा भारी हो गया था उसका जिस्म। चारपाई पर लेटने सी उसकी पीड़ा और बड़ गई। बलि दिए जाते पश्चु जैसी पीड़ा से वह छटपटाने लगा, उसकी आंखें बाहर निकली पड़ रही थीं। मेरी समझ में नहीं आ रहा था, कि मैं क्या करूँ। मैं किंतु विमूळ उसकी मात्र देख रहा था। लगभग चालीस पैंतालिस मिनट उसकी यहीं दशा रही होगी। अन्त में उसको दो-तीन हिचकोले आए और वह एकदम शांत हो गया।

तो यह थी डाक्टर साहब पूरी कहानी प्रेत सिद्धि के चक्षकर की।

डाक्टर साहब का और मेरा मन अब तक चिलकुल नैराश्य से भर गया था।

अन्त में मैंने तोड़ते हुए मैंने कहा — "चलिए हटाइए

— औ मंत्र-तत्त्व-थंव विज्ञान अवधुषर ७७

एस.पी. साहब, प्रेत दर्शन की प्रक्रिया प्रारम्भ करें।"

"हाँ अवश्य-अवश्य . . ." यह कह कर वे उते और आलमारी खोल कर एक बड़ी सी चादर उन्होंने निकाली और बचियां जलाई तथा चादर को फर्श पर बिछा दी और ध्यान की मुद्रा में बैठ गए। ओरों से बुद्धुदाहट प्रारम्भ कर दी उन्होंने। लगभग पन्द्रह मिनट तक उनका यह कार्यक्रम चला। उसके बाद एक रहस्यमय सत्राटा चारों ओर कमरे में फैल गया और एक ऐसी तीव्र कराह की आवाज कमरे में गूंजी, कि जिसे सुन कर मेरे रोम-रोम खड़े हो गए। फिर चादर के बीच के हिस्से में एक अजीब प्रकार का स्पन्दन हुआ, हरकत में आने के बाद बीच के हिस्से में ऐसा लगने लगा, मानों कोई चादर उठा कर उठने की चेष्टा कर रहा है। एस.पी. साहब का चेहरा तमतमा उठा था, वे जोर-जोर से बुद्धुदा रहे थे, उनके चेहरे की रेखाएं बदलती जा रही थीं, उनका युख विकृत एवं भयावह होता जा रहा था।

अचानक चादर एकदम ऊपर की ओर उठ गई और एक विकृत प्रकृति का व्यक्ति सामने आकर खड़ा हो गया। उसके बाल खड़े, मोटे काले, भद्रे और, मुख फटा हुआ, जिसमें एक भी दांत नहीं था, उसने आंखें बन्द कर रखी थीं। उसको सामने देख कर एक अजीब सी चिटुण्णा एवं भय का अनुभव हो रहा था। एस.पी. साहब ने पास रखी सिगरेट की डिब्बी से एक सिगरेट निकाली और जला कर उस आकृति की ओर बढ़ा दी। उसने सिगरेट हाथ में पकड़ ली और सिगरेट हाथ में लेते ही वह अदृश्य हो गया। सिगरेट उसके मुख के लेबल पर हवा में टिक गई और उसमें से टीक वैसे ही धुंआ निकलने लगा, जैसे कोई सिगरेट पीकर हुआ निकालता है, एस.पी. साहब अब खड़े हो गए थे। उन्होंने गम्भीर आवाज में कहा — "माले नाच-नाच कर पीं" . . . और मैंने देखा सिगरेट कमरे में चारों ओर धूमने लारी और सिगरेट पीने एवं उसके नाचने का दृश्य सामने उपस्थित हो गया। यह कार्यक्रम लगभग पन्द्रह मिनट तक चला दोगा। अन्त में एस.पी. साहब ने कहा

— "बस हो गया" . . . और पुनः दिखाई दिया, चादर के नीचे जैसे कोई घुस रहा ही और अन्त में सब कुछ शांत हो गया। धबल चादर फर्श पर यथावत बिछ गई थी। अचानक चादर के ऊपर एक सेव आ गया। एस.पी. साहब ने लपक कर उसे उठ लिया तथा चाकू से काट कर कुछ फांके स्वयं लीं, कुछ मेरी ओर तथा कुछ डॉक्टर साहब को ओर बढ़ा दीं।

काफी समय हो गया था। हम लोगों ने एस.पी. साहब को नमस्कार किया और घर की ओर चल पड़े।

८३

सम्प्रदाय गुरुदेव के बीच सम्प्रदाय पत्रपात्र अपने किनांव

पाठकों के पत्र

आप सभी के जीवन में उत्तर-चहूव भरे पारे पर आपकी सहयोगी बनती है यह पत्रिका आपने पृथ्वी पर साधनात्मक, दीक्षात्मक तथा विविध प्रकार के ज्ञान-विज्ञान को साथ लिए हुए। आप सभी का असीम स्वेच्छा प्रेम, जो आपके पाठ्यों के साधन से हमें प्रियता है, वह प्रेरणाप्रद बनता है उन्होंने अंक को और भी उपयोगी बनाने में।

अक्टूबर माह का यह अंक 'महालक्ष्मी-महानगरापति विशेषांक' आपके लिए प्रस्तुत है।

कृष्ण लोगों का यह कहना है, कि विशेषांक का तात्पर्य होता है — पूरी पत्रिका उपरी विश्व पर आधारित है; जबकि हम विशेषांक का निर्धारण करते हैं उस लेख को आधार बना कर, जो पत्रिका में अत्यधिक विशिष्ट हो तथा जो पृथ्वी गुरुदेव द्वारा वा किसी विशेष संव्यासी अथवा किसी विशिष्ट व्यक्तित्व द्वारा प्राप्त हो।

यह पत्र श्री सुभाष कश्यप का उज्जेन से प्राप्त हुआ है, वे लिखते हैं — मेरी भूत-प्रैत से सम्बन्धित विषयों व साधनाओं में विशेष सुचि है। आपने मितम्बर-93 में एक विशेषांक इस विषय पर प्रकाशित किया था, विशेषांक से यह कर एक रोमाञ्चक लेख व साधनाएँ थीं; परन्तु उसके बाद इस तरह के विषयों का सर्वथा अभाव सा हो गया। कृपया इस प्रकार का विशेषांक पुनः प्रकाशित करें या उस विशेषांक के ही कृष्ण लेखों का पुनर्प्रकाशन करें।

विषय बन्नु सुझाया जा! आपके अनुरोध को सम्मानक मण्डल के सामने रख दिया गया है और भविष्य में शीघ्र ही आपका अनुरोध पूरा करने का प्रयास किया जायेगा।

श्री दुर्गा प्रसाद ने मंदसीर ते लिखा है — मैंने 20 पत्रिकाएं वितरित करने का संकल्प ले कर एवं एक वर्षीय पत्रिका सदस्यता हेतु पत्र जोधपुर में वा जिसके दोनों उपहार मुझे प्राप्त हुए। मैंने बुधवार 19 मार्च को 'भुवनेश्वरी यंत्र' स्थापित कर प्रतिदिन रात्रि को भुवनेश्वरी यंत्र का जप प्रारम्भ कर दिया है। साधना का फल मीठे पुरुष प्राप्त होता शुरू हो गया है एवं मेरे व्यापार में सफल परिवर्तन अनुभव हो रहा है। यह गुरुदेव और पत्रिका परिवार की असीम अनुकूल्या ही है।

श्री गी.के. नारा ने कलकत्ता से लिखा है — आपके द्वारा भेजी गई 'विद्यात्री एवं दुष्विली' के प्रथम सम्प्रदान करने के पश्चात् मेरी पहली गर्भवती हुई है तथा प्रसव काल भी नजदीक आ गया है। पत्रिका परिवार को इसके लिए धन्यवाद।

विषय बन्नु। इन दोनों लघु प्रत्येकों से आपके जीवन में सौभाग्य का आगमन हुआ, यह जान कर हमें भवित्व प्रसवता हुई है। पत्रिका परिवार की तरफ से खुशी के इस द्वावस्था पर आपकी बधाइयाँ।

बहिन वीरिया जवाहर, रेनी मेरि लिखती है — मेरी मं को गर्भाशय का कैंपर था। गुरुदेव न मं बना लव्या जान कर उनको एक पत्र

दिया और वे उसका नियम लेकर करती रही। कुछ दिनों के बाद आपने उन्हें 'महालक्ष्मी दीक्षा' भी प्रदान की। यह भी मं एकदम ठीक हो गई है। पृथ्वी गुरुदेव की कृपा से मां की जीवन उभा हुई, इसके लिए हम ऋणी हैं।

प्रिय बहिन वीरिया जी! आप लोगों का जीवन सुखी हुआ, यह हमारे लिए गौरव की बात है। सभी गुरु राई-बहिनों को सुन्दर स्वास्थ्य एवं दीक्षायु प्राप्त हो और सभी का जीवन सुख-समृद्धि से परिपूर्ण हो, हम ऐसी ही कामना करते हैं और पत्रिका परिवार इसी के लिए सतत प्रमदनशील है।

बहिन वीरिया जी ने उत्तम नगर से लिखा है — जब से मैंने 'निर्धारित शतकम्' का पाठ करना प्राप्ति किया है, तभी से मन में एक अद्भुत शक्ति का अनुभव होने लगा है और युक्त विनान प्राप्त होने से आधारित प्राप्ति में तीव्रता आई है। गुरुदेव के आशीर्वाद तले प्रकाशित यह ग्रंथ वामलाल में आपने आपमें एक श्रेष्ठ कृति है।

जानकारी

आपकी यह प्रिय पत्रिका 'यंत्र-तंत्र-यंत्र विज्ञान' दो पर्मीने अंग्रेज योनशील होती है, अर्थात् वह अंक अक्टूबर का है, तो इसमें दिसम्बर गास की साधनाएँ व प्रयोग दिये जाते हैं।

ऐसा क्यों? इसलिए, कि साधनाओं के लिए यंत्र, उपकरण आदि की व्यावस्यकता होती है, जो गंत्र मिठु लौ, प्राणप्रवैतना युक्त है।

आपकी सुविधा के लिए पोस्टकार्ड पत्रिका में संलग्न होता है, जिसने यह कोई डाक व्यय नहीं देना होता।

पर आप सोचते रहते हैं और विनाश होते रहता है, किन रुद्रबही में आप ऐसे टाइप पर पोस्टकार्ड भेजते हैं, जो समय पर नहीं पहुंच पाता और आप उस साधना में व्यञ्जित रह जाते हैं।

व्यावेकि आपका पोस्टकार्ड जम तक पहुंचने में 15-30 दिन का समय लग जाता है, किन सुविधा यंत्रिका व भेजने में 7-8 दिन का समय लगता है तथा आप तक ची-यी-यी, पहुंचने में 20-25 दिन लग जाते हैं, इस मारी भ्रकुचा में 50-55 दिन, अर्थात् दो महीने लग जाते हैं, परन्तु यंत्रिका विज्ञान से पोस्टकार्ड भेजने से वह साधना मुहूर्त विकल्प जाता है और उस साधना से आप व्यञ्जित रह जाते हैं।

इसलिए यदि आपको युद्ध कोंडे से ये पत्र मिठु सामाजी मंगानी है, तो बिना होला-हवाला किये तुरन्त पोस्टकार्ड भर कर भेज देना चाहिया, जिसमें यह समय पर साधनों ग्राह की सकते हैं।

सुविधा — आप जोधपुर टेलीफोन नं. - 0291-32209 अथवा टेलीफोन नं. 0291-32010 से भी सामग्री का आदेश दे सकते हैं।

'यंत्र-तंत्र-यंत्र विज्ञान' के नवीन अंक में व्यञ्जित विषयों के जल्दीत

ध्यान दें — जाग यामनी एवं नीजा में सम्बन्धित द्वापट पत्र शास्त्र के नाम से सो भेजें।

किनांव

उपरोक्त दि

1. आप और मैं भाजपे भर यदि मैं भ
2. अदियोगी विज्ञान से आप व्यञ्जित रह जाते हैं।
3. आप मैं भ
4. पत्रिका सम्प्रदान के

इस मास दिल्ली में विशेषः प्रत्येक साधना निःशुल्क

केवल भारत में रहने वाले परिका सदस्यों के लिए निःशुल्क योग्यता

ममस साधकों एवं शिष्यों के लिए यह योजना प्रारम्भ हुई है, इसके अन्तर्गत विशेष दिवसों पर दिल्ली 'मिहाश्रम' में पूज्य गुरुदेव के निर्देशन में ये साधनाएं पूर्ण विधि-विधान के साथ सम्पन्न कराई जाती हैं, जो कि उस दिन शाम 6 से 8 बजे के बीच सम्पन्न होती है और यदि शुद्ध व निश्चास हो, तो उसी दिन साधना चिठ्ठि का अनुभव भी होने लगता है।

साधना में भाग लेने वाले साधक को यंत्र, पूजन सामग्री आदि संस्का द्वारा निःशुल्क उपलब्ध होगी (धोती, दुपट्टा और चंत्रपत्र अपने साथ में लावें या न हों, तो यहाँ से प्राप्त कर लें)।

दिनांक 29.9.97

त्रिवर्ण मंत्र साधना

भगवती जगदम्बा दुर्गा की साधना समस्त देवीय साधनाओं में दृष्टकर है। शक्ति का साक्षात् उन्मत् स्वभाव होने के कारण साधक के लिए यह सहज नहीं होता, कि वह दुर्गा साधना कर सके, लेकिन नवार्ण मंत्र साधना के माध्यम से साधक भगवती दुर्गा को सरलता से आत्मसात कर सकता है।

जीवन की सभी विपरीत परिस्थितियों पर विजय पाने के लिए नवार्ण मंत्र साधना सर्वश्रेष्ठ है।

दिनांक 30.9.97

ठच्छकोटि के शौम्य तंत्र विद्वि प्रयोग

तंत्र के अनेक विधाओं में सौम्य तंत्र अत्यधिक तीव्र और सहज है, जिसे कोई भी साधक सिद्ध कर सकता है। जिन किसी ही के गृहस्थ साधकों के लिए तो यह तंत्र वरदान स्वरूप है, इसके माध्यम से वह चाहे तो स्वयं में आकर्षण, सम्मोहन, चशीकरण प्राप्त कर किसी भी कार्य को मनोनुकूल होंग से सम्पन्न करवा सकता है।

त्रिपुर लुटक द्वी महालक्ष्मी प्रयोग

जीवन में समन्वित रूप से ऐश्वर्य, श्री, सम्पदा प्राप्त कर, शूच के ऊपर स्वरूप हावी बने रहने तथा दिन यश, प्रतिष्ठा, सम्पान में प्रख्यरता को प्राप्त करने के लिए सर्वश्रेष्ठ प्रयोग है साथ ही साधक रोगमुक्त होकर अपना कामाकरूप करने में भी सक्षम हो पाता है।

उपरोक्त दिवसों पर साधना में भाग लेने वाले साधकों के लिए निम्न नियम मान्य होंगे —

1. आप अपने किसी एक नित्र या स्वागत ये पत्रिका की वार्षिक सदस्यता हेतु 195/- वार्षिक गुल्क तथा 24/- डाक व्यय और 12 दुर्लभ अंकों के सेट का शुल्क 180/-, इस प्रकार कुल शुल्क (219/- + 180/- = 399/-) जमा कर साधना में भाग ले सकते हैं। आपको निःशुल्क साधना सामग्री के साथ ही उपहार स्वरूप निःशुल्क 'वेताल यंत्र' प्रदान किया जावेगा, जो कि आपके परिवार पर अने वाली समस्या आपदाओं से रक्षा करने में समर्थ है एवं उप सदस्य को पूरे वर्ष भर आपकी तरफ से उपहार स्वरूप 'मंत्र-तंत्र-यंत्र विज्ञान' पत्रिका प्रतिमाह भेजते रहेंगे।
2. यदि आप पत्रिका सदस्य नहीं हैं, तो आप स्वयं के लिए एक वर्ष की सदस्यता और 12 दुर्लभ अंक प्राप्त कर साधना में भाग ले सकते हैं, किन्तु आपको उपहार स्वरूप 'वेताल यंत्र' प्राप्त नहीं हो पायेगा।
3. आप यदि किन्हीं कारणों से पत्रिका सदस्य बनाने में असमर्थ हैं, तो कार्यालय में 375/- रुपये जमा करके भी साधना में भाग ले सकते हैं।
4. प्रत्येक साधना दिवस का शुल्क 375/- रुपये या एक पत्रिका सदस्य व 12 पुराने दुर्लभ अंक है।

सम्पर्क : मिहाश्रम, 305, अंडेला इन्डियन, अंडेला, नई दिल्ली 110034, फ़ोन : 011-7102248, फ़ैक्स : 011-7196700

ज्योतिष और रोग

— इन्द्रजीत सिंह

रोगों की कभी-कभी पहचान नहीं हो पाती और गलत उपचार के द्वारा रोगी के मृत्यु हो जाती है, मगर यदि डॉक्टर, वैद्य या चिकित्सक इस कार्य के लिए ज्योतिष का सहाय लें, तो वह सहजता से उस रोग तक पहुँच सकता है, जिसकी वजह से व्यक्ति सम्बान्ध में रोगान है और इस दृष्टि से ज्योतिष और रोग का आपस में घटिष्ठ सम्बन्ध है।

यह लेख आप सभी के लिए इतना ही आवश्यक है,

जितना कि एक ज्योतिर्षी के लिए है . . .



दिक् ज्योतिष के अनुसार किसी ग्रह द्वारा प्रदत्त रोग उस पर शनि, भगवान् या राहु के प्रभाव के कारण प्रस्तुति होती है। इनमें शनि अग्रमण्य है। जब शनि का सम्बन्ध कृष्णलोक के रोग भाव अर्थात् छठे भाव से हो या इसका सम्बन्ध आठवें या बालवें भाव से हो तो यह अपने सम्बन्धित रोग देता है। इस पर इसके राहु ग्रहों का प्रभाव रोगों के आरोह अवरोह एवं उनकी विविधता देता है, तब इसके द्वारा प्रदत्त रोग जैन: शनि: बहुते या घटते हैं। शनि के द्वारा रोग उसके कारकत्व में आने वाले अंगों में होते हैं। ये अंग हैं त्वचा, हड्डियाँ, शुद्धि, वैर, पित्तशय, दाति, ठांग, अड्डनशन ग्रन्थि, हड्डियों को जोड़ने वाली नांसपेशियों के तनु।

शनि प्रधान रोगों में बात विकार जोड़ों का गतिया, बाव का रुद्ध, जहरीले पदार्थ का सेवन, शरीर में बहरीले पदार्थों के बनने को प्रक्रिया, जैव रसायनों या अजैव रसायनों को कभी या बहेतरी से पेया होने वाले से। प्रधानतया आते हैं। दूसरे प्रहों के प्रभाव के साथ शनि का योगदान निम्न रोगों में भी होता है — बालों के रोग, तिलों या ग्लोता सम्बन्धित रोग, दायें फैर के पञ्जे का रोग, रिकेदम, जिल्हा सम्बन्धी रोग, अंखों से सम्बन्धित रोग और मोतियाविन्द, नाक के रोग, अण्डकोशों वा बहुना, कृष्ण, गब गव्हमा, लकवा होना, फागलपन आदि।

शनि की दुरमनी सूर्य से है। सूर्य का प्रभाव शनि पर पड़ने पर रोगों की शुरूआत होती है। शनि जनित रोग, पीड़ा या शनि जनित दुःखों को शुरूआत अन्तिम 60 वर्षों के अन्तराल में होती है, अर्थात् मृत्यु के दिन से 60 वर्ष तक शनि पर शनि का प्रभाव जातक पर होता है।

लग्न गत शनि जातक को आलसी, गम्भीरा, कामुक तो बनाता ही है, साथ ही उसे नाक सम्बन्धित दोष, रोग भी होता है। ऐसा जातक चर्ये रोगों के लिये संबंदनशील भी हो जाता है। उसका प्रभाव गुरु पर होने पर आकृति विवरण होने लगती है, कफ की प्रधानता हो जाती है, दृष्टि पद्धत होने लगती है, सफेद मोतिया विन्द बढ़ने लगता है, मनोष कम होता है। यदि लग्न गत शनि का दृष्टि चन्द्रमा पर पड़े जाय, तो जातक पराधीन जीवन व्यतीत किया करता है। पराधीन जातकों का शनि गीच का, दुर्बल, गतु थेज़ हुआ करता है। वैसे सापन गत शनि वाले व्यक्तियों का अपने परिवारिक सदस्यों के अधीन वृद्धवस्या व्यतीत करनी पड़ती है। परन्तु यदि लग्न गत शनि भनु या भीन या बुध की राशियों का हो (बाली चतुर्थेश या दशमेश की राशि का हो), तो शजारीन कारक होता है, परन्तु रोग को देने से वर्जित नहीं होता है, ले उपर्युक्त दलाल के साथ भी जातक वो टपलब्ध करता है, सेकिन रोग के समाज

— श्रेष्ठ-त्रिश्च-संस्कृत विज्ञान अकादम १० अ० —

होने या न होने की शुल्की, दाद, बुध पर या राशि का कर्क का कई रिश्तों में का सम्बन्ध होता है। आसान होती राशि या कन्या या वैदि लग्न में है, परन्तु यह नहीं होता है। जेह का शनि, प्रभाव भी होता है तो जातक बने। तुला, देवता है। भी है। प्रायः जूपयुक्त नहीं भावम्' मिथी है। इस प्रथान मार्य अपवाद है विकार ऐव राशिगत श्राद्धान का जातकों का कन्या या राशि का गंगा को भी रहता है कन्या या हो, तो भी प्रभाव हो उसके देव शनि जातक माता का इसकी पुराणी है। इस पर) होने

होने या न होने की शर्त नहीं है। मिथुन का लग्न गत शनि फोड़, कुम्ही, दद्ध, कैन्सर का कारक होता है। ऐसे जातकों की कृष्णली में बुध पर या शनि पर सूर्य, मंगल वा राहु प्रभाव हुआ करता है। लग्न गत कर्क का शनि भी उपरोक्त फलों का जनक होता है। ऐसा शनि कई स्थियों से जीन सम्बन्ध करा देता है। इस योग ये यदि शुक्र-राहु का सम्बन्ध हो और शुक्र शनि की राशि में हो या राहु शनि की राशि का हो तो ऐसे जातकों को अपरा, चक्रिणी, जिनी आदि की सिद्धि आसान होती है, परन्तु इसके कारण उसका पतन भी होता है। सिंह राशि वा कन्या का लग्न गत शनि पुत्र सुख में वाधा कारक होता है। यदि लग्न मकर या कुम्ह को हो, शनि लग्न में हो, तो आरोग्य देता है, परन्तु ऐसे जातक में पुरुषत्व की कमी होती है।

द्वितीय भावस्थ मेष या वृश्चिक का शनि अल्पायु कारक होता है। चेहरे पर चोट का निशान या दाढ़ देता है मिथुन का दूसरे भाव का शनि, परन्तु इस फल के लिये बुध पर सूर्य, मंगल वा गुरु का प्रभाव भी होता चाहिए। दूसरे भाव में कर्क या सिंह राशि का शनि हो, तो जातक अल्पायु होता है, सम्मानतया वह राजदण्ड का धारी भी बने। तुला, वृश्चिक राशि का द्वितीयस्थ शनि जातक को पेट के रोग देता है। मीन का द्वितीय भावस्थ शनि राजदण्ड प्रदायक होता है।

कूर, पापी ग्रहों का फल तीसरे भाव में अच्छा कहा जाता है। प्रायः ज्योतिष के सार प्राय इस फल के लिये एकमत है, परन्तु यह उपर्युक्त नहीं है। तीसरा भाव आठवें से आठवां भाव है। 'भावाति भावम्' मिद्द्वान के अनुसार इस भाव का सम्बन्ध मूल्यु के कारणों से भी है। इस भाव का शनि प्रायः दूसरे पारकों के कारकत्व को लेकर प्रधान नारक बन जाता है। परन्तु तुला, मकर, कुम्ह का शनि इस का अपवाह है, यहाँ राशि अरिष्ट नाशक बन जाता है, फिर भी हाथों में चिकार पैदा करता है और वात दोष भी देता है। इस भाव में मिथुन राशिगत शनि शुल दायक होता है। कर्क, सिंह राशि का शनि अल्पायु प्रदान करने के साथ-साथ जातक को अवश्य भी रखता है, ऐसे जातकों की मूल्य अस्त्रार्थिक कारणों से और तल्काल होती है। कन्या वा तुला का द्वितीयस्थ शनि मृत सन्तान दैदा करता है। यह फल मंगल की द्वादश भावस्थ होने पर अवश्यक्ती होता है। पंचम भाव में भी राहु या केतु का प्रभाव होना आवश्यक है इस फल के लिये। कन्या वा तुला का द्वितीयस्थ शनि हो, सूर्य पर राहु या केतु का प्रभाव हो, तो भी जातक की मृत सन्तान होती है। यदि सातवें भाव पर पाप प्रभाव हो और शनि तीसरे भाव में हो, तो जातक की पत्नी का सम्बन्ध उसके देवर या पर मुरुष से होता है। वृश्चिक वा घनु का द्वितीयस्थ शनि जातक की पत्नी के लिये जातक होता है।

चौथे भाव के शनि वा सम्बन्ध अस्त्रपेश के साथ होने पर माता का सुख कम होता है, जातक वात रोग से भी भीड़ित रहता है। इसकी उष्टि जातक के बालों की अष्टिकसा और लम्बे नाखून करते हैं। इस भाव में सूर्य या मंगल वा राहु का साथ या प्रभाव (शनि पर) होने पर शनि हृदय रोग का भी प्रदायक है। मेष का चतुर्थ

भावस्थ शनि भी हृदय रोग कारक होता है। चतुर्थ भावस्थ शनि कृष्ण कारक और लग्नी आयु देता है, इस भाव में वृषभ, कर्क और सिंह राशि के शनि का यही फल है। मिथुन का शनि यदि चौथे भाव में हो और दूसरे आयु कारक योग भी न हों, तो पूत्र के हाथों मूल्यु करता है या पुत्रहीनता का कारक होता है। कन्या का चौथे भाव में शनि जीवन पर्वन्त रोग यथ देता है। तुला वा वृश्चिक राशि का चतुर्थ भावस्थ शनि वात रोग देता है। मीन राशि चौथे भाव में हो, शनि भी चौथे भाव में हो, तो पूरे परिवार को नष्ट करता है।

शनि और सूर्य की युति प्रायः शुभ नहीं होती है, परन्तु यांचर्व भाव में शनि, सूर्य की युति बहुत से बुरे फलों को नष्ट करने वाली होती है। सामाजिक पहचान एवं शिक्षा के क्षेत्र में यांचर्व भावस्थ शनि, सूर्य पर मुल का साथ या इसकी दृष्टि बहुत शुभ होती है, परन्तु ऐसे के क्षेत्र में असफलता देती है। यांचर्व भाव में कर्क या सिंह का शनि अल्पायु और वृश्चिक या मकर वा शनि सन्तान होना देता है।

छठे भाव का शनि महिला की कृष्णली में सौत वा योग बनाता है। इस भाव का शनि गुह्य रोग, प्रमेह, मुधमेह, लकवा, वात रोग, योलियो का कारक होता है। द्वादश शनि द्वादश में छैठ कर भी यही रोग देता है। अष्टमेरा होकर यदि शनि छठे भाव में पड़े, तो विषर्णीत राजव्यग कारक माना जाता है। परन्तु यदि ऐसा शनि वृश्चिक या घनु राशि का हो, तो वात रोग या शुल कारक, नशा कारक होता है। इस भाव में शनि और मेष राशि होने पर जिगर और आंख, वृश्चिक का होने पर आंख व गुदा रोग, पित्ताशय, हृदय का रोग, मिथुन का होने पर दमा, मस्तिष्क सम्बन्धी, गुदा रोगों का, कर्क राशि का होने पर मस्तिष्क सम्बन्धी, डिष्टीरिया, हृदय सम्बन्धी रोगों का; सिंह राशि का होने पर आमाशय आंख, हृदय रोगों का; कन्या का होने पर शनि होने पर मृत सम्बन्धी, तुला का होने पर विष्ठीरिया, वृश्चिक का होने पर मस्तिष्क रोगों का कारक बनता है। कन्या राशि का छठे भाव में हो, तो गिरने से चोट और रास्ते या चिदेश में मृत्यु होता है। छठे भाव में तुला का शनि गिरने से चोट दे सकता है तथा जीवन, विशेषकर बाल्यावस्था कष्टकर होती है। वृश्चिक का शनि छठे भाव में पड़ कर सर्प, विष यथ देता है। इस भाव में घनु या मकर राशि का शनि राजव्यग्रह रोग देता है। मकर राशि का शनि खीं संसर्ग से मृत्यु होता है, इस एवं यीन रोगों की प्रबल सम्भावना रहती है। छठे भावस्थ कुम्ह या मीन का शनि पुत्र सुख की न्यूनता देता है।

सातवें भाव में शनि दाम्पत्य भाव को चिष्पमय ही नहीं बनाता, बल्कि बरबाद कर देता है। जातक की धूरता, कूरता, निर्दृश्यता और मालिनता पत्नी को दूसरे पुरुष के आगोश में जाने को मजबूर कर देती है। पत्नी का यौन सम्बन्ध देवर या निकट के सम्बन्धी से बन जाता है ऐसे परिप्रेक्ष्य में। सातवें भाव वा शनि निचले कटि प्रदेश और जाऊं के ऊपर के भाग में रोगों का प्रकोप देता करता है। ऐसा शनि वा तो सन्तान होने नहीं देता और यदि हो गई, तो वह रोगिणी होती है। सातवें शनि वाले जातक बिन व्याहे रह

जावें, तो कोई आश्चर्य नहीं। उसका स्वरगही शनि भी दाम्पत्य चौबन को सुखमय नहीं बना पाता है। सातवें भाव में मकर, कुम्भ या तुला राशि हो और शनि सातवें भाव में हो, तो ऐसे जातक का आकर्षण केन्द्र खींका का गुप्तांग होता है, यह उसका आलोड़न, स्पर्श, मर्दन, करना चाहता है या करता है। अक्षर, डाकटरों, मात्रिकों की जन्मपत्रियों ने सातवें भाव में शनि पाया जाता है और ये लोग अपने मरीजों के गुप्तांगों के साथ खेलते पाये गये हैं। सप्तम शनि वैष्णव गमन या पर स्त्री सम्बन्ध बनाता है। इस भाव में शुक्र या मंगल का सम्बन्ध इसको बल प्रदान करता है। शनि-चन्द्र युति इसी कारणबश गृहस्थों के लिये शुभ नहीं होती। उदासीनता, वैराग्य, आलस्य, यौन विकृतियां मानसिक या स्थूल स्तर पर परिलक्षित होती हैं सातवें शनि-चन्द्र युति होने पर। परन्तु संन्यासियों को सातवें चन्द्र-शनि की युति अच्छी पानी गयी है। सातवें भाव में महिलाओं की कुण्डलियों का शनि विशुद्ध या अधिक आयु का पति देता है। लगन गत चक्रों शनि भी यहीं फल देता है। सिंह राशि का सातवें शनि सांस की बीमारी देता है, कक सम्बन्धी रोग भी होते हैं। दशम भावस्थ कन्या राशि का शनि भी कफ जनित रोग देता है। थनु, मकर का सातवें भाव में शनि फोड़े, फुन्सी, भगवन्दर, बवासीर, स्त्री समागम जनित रोग, कैंसर प्रभृति रोगों का कारक होता है। इनमें से कोई भी रोग मूल्य का कारण बन सकता है। कुम्भ का सप्तम भावस्थ शनि नशीले पदार्थों का सेवन कराया करता है।

अपने पाप प्रभाव का मूल रूप अष्टम भाव में शनि बन जाता है अक्षर। चैवल तुला, मकर या कुम्भ राशि का शनि अष्टमस्थ होकर दीर्घायु कारक होता है, पर जातकों को मध्यम लालस्य भी देता है। अठवें भाव का शनि बाढ़ी, बवासीर, भगवन्दर, गुद्ध रोग, कोढ़, नेत्र विकार, मेचिश, हृदय रोग, दाढ़, खारिश, फोड़े, प्रमेह आदि बीमारियां पेंदा करता है। अष्टम भावस्थ शनि राशि क्रम से मूल्य का कारण बनता है। भूख, उपवास से, बहुत भोजन या भोजन न मिलना, रिशेदरों के डाश से, संग्रहणी से, थनु के हाथों से, पीलिया से, यज्ञवल्क्या से, प्रमेह से, मानसिक बीमारी, चर्म रोग (खुजली), काटा या इन्जेक्शन या सर्व दंश से, फोड़े या कैंसर में, ऊपर से निरने से या चोट लगने से पृथ्वी की सम्भावना होती है। इस सम्भावना को ब्रह्म वाक्य में व्यदलने के लिये अष्टमेश का निर्वल होना और पाप प्रभाव में होना सम्भवित रोगों का कारक होता है। ये पाप का अष्टमस्थ शनि सूर्य या राहु या केतु के प्रभाव के कारण पेट से सम्भवित विकार, नेत्र रोग, संग्रहणी, विषमय शरीर विकार देता है। जिन जातकों की कुण्डली में पिंचुन या कंक का अष्टम भाव में शनि होता है, उनके लिए राजदण्ड, फांसी का भव ऐदा करता है। यदि चोरी करना मानसिक युति ही सकती है, तो यह अष्टम शनि को देन होगी, परन्तु द्वितीय भाव का शनि भी चोरी करने की प्रवृत्ति देता है। मीन राशि का अष्टमस्थ शनि संग्रहणी, सर्व भव, विष भव कारक होता है।

नवें, दसवें, चौथवें भाव का शनि अपना पापत्व देता है। संन्यासियों की कुण्डली में सप्तम शनि अस्त्र माना जाता है। नवें भाव का शनि संन्यासी को मवाधीश बना देता है। यहीं गुप्त द्वितीय भाव का स्वरग्रही शनि भी देता है। नवम भावस्थ शनि-पैरों ने विकार देता है। मेष, मीन का नवमस्थ शनि पुरुषवल्लीनता या जांझपन देता है। एकादश भावस्थ पाप प्रभाव बाला शनि मृत सन्तान पैदा करता है। बृष राशि का एकादश शनि पत्नी को सन्तान के जन्म पर मरणासन बना देता है।

बारहवें भाव में जाकर शनि पापी बन जाता है। ऐसा जातक पूर्णतः संघारी बन जाता है, धर्म-कर्म में उसकी आस्था नहीं होती है। आधि दैविक आधि-व्याधि को भोगता हुआ जाता है, उनका उपचार नहीं करता है। पसलियों के रोग, जंघ का फोड़ा आदि रोग धनु का शनि द्वादश भाव में देता है, ऐसे जातक दुबले-पतले शरीर वाले होते हैं, आखे छोटी-बड़ी होती हैं। बारहवां शनि राहु या सूर्य के प्रभाव के कारण अन्धापन या कानापन देता है, पर्सितक के विकार भी हो सकते हैं। मिठुन का शनि द्वादश भाव में बैठ कर आत्माती प्रशुति जातक को देता है, विषेश जानवरों के काटने, विषेश इन्जेक्शनों, पानी में डूबने के कारण होने वाले कष्ट भी होते हैं। मिंह का द्वादशस्थ शनि पुत्र सूख नहीं देता है। तुला, वृश्चिक का शनि राज भव कारक होता है। शनि-चन्द्र की युति पर यदि मगल का प्रभाव हो, तो जातक की शादी बाढ़ी ली से होती है। आठवें भाव में बुध आयु कारक माना जाता है और शनि-चन्द्र की युति वैष्णव कारक होती है, परन्तु यहीं शनि-चन्द्र को युति तीसरे भाव में हो और बुध आठवें पड़ा हो, तो जातक अल्पायु होता है, जातक का परिवार नष्ट हो जाता है, जातक की मां को दीर्घकालिक रोग होते हैं। शनि-मंगल की युति कृतीय या चतुर्थ भाव में हो या इन भावों से तीसरे, आठवें या दसवें भाव में शनि-मंगल हो, तो जातक की पत्नी की मूल्य शादी के शीघ्र बाद हो जाती है। जातक को अपने भाई के साथ रहना पड़ता है। तीसरे या चैवें या सातवें भाव में शनि-बुध की युति प्राप्तः निरोग शरीर देती है, परन्तु इस योग में जातक तीव्र कूल की खींके साथ रहता है। शनि-मंगल की युति सातवें या दसवें भाव में हो, तो जातक का चंद्र निर्धूल हो जाता है। शनि-बुध की युति चौथे भाव में या आठवें भाव में हो, तो लम्बी आयु पाता है जातक, परन्तु उसकी सन्तान दुर्भागी होती है। ऐसा जातक सौदेव व्रहण ग्रस्त रहता है। यदि शनि, चन्द्र, बुध चौथे, आठवें या बारहवें भाव में पड़े हों, शनि, चन्द्र, बुध सातवें या दसवें भाव में हों, तो दस वर्ष की आयु में जातक की मूल्य होती है। गुरु, शनि, चन्द्र यदि दूसरे या बारहवें भाव में हों, तो आखों को बिनाई नष्ट करते हैं। यदि चन्द्र पर शनि का प्रभाव हो सा इसका उत्पाद हो, तो पति-पत्नी दोनों के उप पत्नी या उप पति होते हैं। शनि-बुध की युति पर मंगल का प्रभाव रुद्ध भाव में हो, तो जातक भाइयों से लड़ कर चर-द्वार छोड़ देता है।

जीवन में पग-पग पर मृत्यु का सामना करना पड़ता है

और अकाल मृत्यु तो जीवन का अभिशाप है,
एक जवान पुत्र की अर्धी उसके पिता के कन्धों पर जाए,

इससे बड़ा दुर्भाग्य जीवन में कुछ नहीं हो सकता।

यदि पति-पत्नी में से किसी एक की मृत्यु हो जाय,
तो दूसरे का जीवन अकारथ हो जाता है।

अकाल मृत्यु, चिन्ताएं, परेशानियां, बाधाएं, अड़चनें,
कठिनाइयां और समस्याओं के निराकरण करने के लिए है "काल भैरव
साधना"। इस प्रयोग को सम्पन्न करना तो आपके लिए ऑक्सीजन के
समान है, आवश्यक है, अनिवार्य है . . .

काल भैरव साधना

पि

छले कुछ अंकों में निरन्तर उग्र साधनाओं को
प्रकाशित किया जा रहा है और इसका मात्र उतना
उद्देश्य है, कि व्यक्ति अपने अन्दर तेजस्विता
और प्रचण्डता को भी आत्मसात कर सके। प्रत्येक व्यक्ति के
जीवन में दो पहलू प्रमुख होते हैं, किसी भी स्थिति के दो ही
पहलू होते हैं अच्छा-बुरा, उल्टा-सीधा, तेज-धीमा,
सौम्य-उग्र।

और उसका व्यक्तित्व तभी पूर्णता युक्त होता है, जब
वह दोनों पहलुओं से परिपूर्ण हो। जहाँ उसके अन्दर ममत्व,

प्यार, दया जैसी सौम्य भावनाएं होनी आवश्यक हैं, वहाँ
पीरुष, प्रचण्डता, तेजस्विता जैसी उग्र स्थितियां भी होनी
अत्यावश्यक हैं।

कृष्ण के बारे में प्रसिद्ध है, कि जहाँ उनकी एक
आंख में करुणा, ममता, प्रेम, अपनत्व झलकता रहता
था, तो वहाँ उनकी दूसरी आंख में प्रचण्डता, शत्रु दमन
एवं क्रोध की स्थिति रहती थी . . . और इन्हीं दोनों के
समग्र रूप ने उन्हें 'पूर्णतम् पुरुषोत्तम्' बनाया।

काल भैरव एक ऐसे ही प्रचण्ड देव है, जिनकी

अतः उ साधक का ज पहले स योजना जान उ उपयोग लिए

प्रकार से प कर उनके खाल रख भयंकर हैं और साधा ऐसी किस विचलित

से सामान्य लेता है, त दुष्टना क कुण्डली उसकी स

हो जाता है और उस शत्रु उस और उस विवाद,

सम्पन्न व का जान के लिए जाता है कार्य में

आश्रमना, साधना से व्यक्ति के अन्दर स्वतः ही अग्नि समूलिंग स्थापित हो जाता है, उसका सारा शरीर शक्तिमय हो जाता है, ओजस्विता एवं दिव्यता से परिपूर्ण हो जाता है और वह अपने जीवन में प्रत्येक प्रकार की चुनौती को मुस्करा कर छोलने और उस पर विजय पाने की क्षमता प्राप्त कर लेता है।

मनुष्य आज इतनी दयनीय स्थिति में क्यों है? आज वह पशु की भाँति अपना जीवन जीने के लिए क्यों बाध्य हो गया है? क्या आपने कभी इन प्रश्नों के उत्तर को जानने-समझने की आवश्यकता समझी? क्या आपने जानना चाहा, कि क्यों आप इतने तनाव में रहते हैं? क्यों चाहते हुए भी सफलता की ओर अग्रसर नहीं हो पाते? आप शिकायत तो करते रहते हैं, कि ऐसा हो गया, वैसा हो गया, पर क्या इन सबके मूल में जो कारण है, उसको कभी जानने की चेष्टा की?

नहीं।

आप पाशों में जड़दे हुए हैं और अगर सही रूप से कहा जाय, तो ये पाश आपके द्वारा ही निर्मित हैं। ये 'अष्ट पाश' हैं जो क्रूपशः काम, क्रोध, लोभ, मोह, जुगुप्ता, भय, धृष्णा एवं लज्जा हैं।

आपमें क्रोध है, इसलिए बने-बनाए काम बिगड़ जाते हैं; आपमें लोभ है, इसलिए आपको मानसिक शांति नहीं मिलती; आपमें भय है, कि ऐसा हो जाएगा, तो क्या होगा और इसलिए शत्रु आप पर हावी हो जाते हैं।

जरा सोच कर देखिए, क्या ये आपके द्वारा ही रचित बन्धन नहीं हैं? क्या आप ही इन सभी स्थितियों के लिए



उत्तरदायी नहीं है? यदि ये पाश किसी तरह से हट जाएं, तो फिर क्या बोई ऐसी शक्ति है, जो आपको आपके शत्रु में सफलता प्राप्त करने से रोक सके?

व्यष्टियों ने जब साधनाओं का निर्माण किया, तो छोटी से छोटी साधना भी उनके अनुभव पर ही आधारित थी... जब उन्होंने काल भैरव के लिए अष्टमी तिथि निर्धारित की और वह भी कृष्ण पक्ष की, तो उसके पीछे एक गृह चिन्तन था। प्रथम तो काल भैरव एक ऐसे देव हैं, जो कि व्यक्ति के झूठे व्यक्तित्व को नष्ट कर उसे सभी अष्ट पाशों से मुक्त करते हैं और चूकि सभी अष्ट पाश अज्ञान रूपी अद्यकार से निर्मित होते हैं, अतः इनकी

साधना के लिए कृष्ण पक्ष की अष्टमी को निर्धारित किया गया।

यह सारा विज्ञान किन्हीं तुक्कों पर आधारित नहीं है, अपितु बड़े ही गृह चिन्तन एवं मनन के बाद ही ये निष्कर्ष प्राप्त हो सके हैं। यह बात अलग है, कि आज लोगों को इसके बारे में क्या और कितना ज्ञान है?

काल भैरव का रूप बड़ा ही मनोहर है, उनका शरीर अत्यधिक तेजस्वी एवं सम्प्रोहक है, उनके एक हाथ में मनुष्य का खापर, जो कि नवीन चेतना का प्रतीक है, स्थित है, दूसरे हाथ में यम पाश है, जो मृत्यु पर विजय का द्वातंक है, तीसरे हाथ में खड़ग अष्ट पाशों को काटने के लिए और चौथा वर मुड़ा में उत्तम हाथ हर प्रकार के मंगल और अनन्द का प्रतीक है।

वैसे साधना के दौरान काल भैरव साधक को कई

काल भैरव 'काल' के देवता हैं, अतः उनकी साधना सम्पन्न करने वाले साधक को स्वतः ही भूत-भविष्य-वर्तमान का ज्ञान होने लगता है, जिससे वह पहले से ही अपने भविष्य के लिए उचित योजनाएं बना लेता है, वह पहले से ही जान जाता है, कि वह व्यक्ति मेरे लिए उपयोगी होगा या नहीं, यह कार्य मेरे लिए उचित होगा या नहीं आदि।

प्रकार से परीक्षा लेते हैं और कई बार तो विकराल रूप धारण कर उनके समक्ष उपस्थित हो जाते हैं, पर साधक को इतना ख्याल रखना चाहिए, कि काल भैरव केवल बाहा रूप में ही भवंकर है, उनका अंतःस्वरूप तो अमृत तत्त्व से आपूरित और साधक का हित चाहने वाला ही है, अतः साधक को ऐसी किसी भी परिस्थिति के उत्पन्न होने पर इस साधना से विचलित होने या ढरने की जरा भी आवश्यकता नहीं है।

प्राचीन ग्रंथों में विवरण मिलता है, कि अगर सामान्य से सामान्य व्यक्ति भी यह साधना सफलता पूर्वक सम्पन्न कर लेता है, तो ऐसे व्यक्ति के जीवन में यदि अकाल मृत्यु या दुर्घटना का योग हो, तो वह स्वतः ही मिट जाता है और उसकी कुण्डली में स्थित कुप्रभावी यह भी शांत हो जाते हैं, जिससे उसकी सफलता का मार्ग प्रशस्त होने लगता है।

ऐसे व्यक्ति का सारा शरीर एक दिव्य आधा से युक्त हो जाता है। मित्र गण हमेशा उसके चारों ओर मंडराते रहते हैं और उसकी हर बात का धातुन करने के लिए तत्पर रहते हैं। शत्रु उसके समक्ष आते ही समर्पण मुद्रा में प्रस्तुत हो जाते हैं और उसकी हर शर्त स्वीकार करते हैं। वह कभी भी युद्ध, विवाद, मुकदमा आदि में प्रवर्जित नहीं होता।

काल भैरव 'काल' के देवता हैं, अतः उनकी साधना सम्पन्न करने वाले साधक को स्वतः ही भूत-भविष्य-वर्तमान का ज्ञान होने लगता है, जिससे वह पहले से ही अपने भविष्य के लिए उचित योजनाएं बना लेता है, वह पहले से ही जान जाता है, कि वह व्यक्ति मेरे लिए उपयोगी होगा कि नहीं, यह कार्य मेरे लिए उचित होगा या नहीं आदि।

साथ ही साथ धन, मान, पद, प्रतिष्ठा, वैभव उसके जीवन में उसके साथ-साथ चलते हैं। इस साधना से व्यक्ति के अष्ट पाश नष्ट होते हैं और वह पहली बार सामान्य मनुष्य जीवन से ऊपर उठ कर देवत्व की ओर अग्रसर होता है।

साधना विधान

- १ यह साधना एक दिवसीय है। इसे 21.12.97 को या किसी भी रविवार को सम्पन्न करें।
- २ साधक रात्रि को स्थन्छ काले वस्त्र धारण कर काला आसन या कम्बल बिछा कर दक्षिणाधिमुख होकर यह साधना सम्पन्न करें। साधक अपने माथे पर सिन्दूर की बिन्दी भी लगा लें।
- ३ अपने पूजन स्थान को साफ कर लकड़ी के बाजौर पर काला वस्त्र बिछाएं, उस पर काले तिळ से अच्छाल कमल बनाएं, कमल के मध्य में 'काल भैरव यंत्र' स्थापित करें। प्रत्येक दल में एक-एक सुपारी रखें।
- ४ यंत्र का पूजन सिन्दूर, अक्षत तथा लाल पुष्प से करें, प्रत्येक सुपारी पर भी सिन्दूर, अक्षत तथा पुष्प चढ़ाएं।
- ५ लेत का दीपक लगाएं, दीपक में चार बत्तियां हों, धूप भी जला लें।
- ६ 'काल भैरव माला' को बायें हाथ में लेकर उस पर सिन्दूर तथा पुष्प चढ़ाएं, फिर निन मंत्र का उच्चारण करते हुए 51 माला मंत्र का जप सम्पन्न करें—

मंत्र

॥ ३६ क्री क्री काल भैरव फट॥

Om Kreem Kreem Kaal Bhairav Phat

साधना समाप्ति के अगले दिन यंत्र, माला तथा सुपारी उसी वस्त्र में लपेट कर नदी में यह कहते हुए प्रवाहित कर दें— 'हे काल भैरव! आप समस्त प्रकार से मेरी रक्षा करें। मेरे शत्रुओं को परास्त करें तथा मुझ पर अपनी कृपा कर मुझे सुख, सम्मान प्रदान करें।'

ऐसा करने पर यह साधना पूर्ण होती है तथा साधक काल भैरव की तेजस्विता को अपने अन्दर समाहित कर अकाल मृत्यु, चिन्ताओं, बाधाओं को दूर करता हुआ निर्भयता पूर्वक जीवन व्यतीत करने में समर्थ होता है।

अपने जीवन से यदि दुःख, द्वादिक्ष्य, कठिनाइयों को समाप्त करना है, तो इसका एक ही उपाय है



कृलौ चण्डी
विनायकों
अर्थात् कलियुग
में चण्डी एवं गणपति को
साधना शीघ्र एवं पूर्ण
फलदायक है, ऐसा विद्वानों
का मानना है, ऐसा उनका
चिन्तन है।

चाहे कुछ भी हो, यह तो अकाल्य सत्य है, कि प्रत्येक
पूजन कार्य में, प्रत्येक धार्मिक अनुष्ठान अथवा क्रिया में
सर्वप्रथम गणपति की ही पूजा की जाती है... सर्वप्रथम उनी
की अर्चना की जाती है।

गणेश को पावर्ती ने अपने शरीर में लगे उट्टन
से निर्धित किया था, जो कि वास्तव में पृथ्वी तत्त्व है।
यही कारण है, कि बुण्डलिनी योग में गणेश को प्रथम
चक्र (मूलाधार, जो पृथ्वी तत्त्व से सम्बन्धित है) का
अधिकार माना गया है।

और चूंकि प्रथम चक्र एवं मूल के स्वामी गणेश ही
हैं, अतः अब यह रहस्य नहीं रहा, कि इनकी पूजा सर्वप्रथम

गणेश का अर्थ होता है — गण+ईश, अर्थात्
जो गणों के स्वामी हैं; परन्तु आम व्यक्ति
गणों से तात्पर्य लगाता है शिव के भूत-प्रेतों
से, जबकि वास्तव में यहां गण ला अर्थ है
इन्द्रियां और इन्द्रियों के स्वामी होने के कारण
ही हमने इन्हें गणेश कहा है।

क्यों होती है। गणेश का अर्थ
होता है — गण+ईश, अर्थात्
जो गणों के स्वामी हैं; परन्तु
आम व्यक्ति गणों से तात्पर्य
लगाता है शिव के भूत-प्रेतों
से, जबकि वास्तव में यहां
गण का अर्थ है इन्द्रियां और
इन्द्रियों के स्वामी होने के

कारण ही हमने इन्हें गणेश कहा है।

यह सही ही है, इन्द्रियों से जो हमें अधिकतर
अनुभूतियां प्राप्त होती हैं, वे स्थूल शरीरगत होती हैं और
स्थूल शरीर का अर्थ ही पृथ्वी तत्त्व है। अतः स्थूल शरीर से
ऊपर उठने के लिए गणेश की साधना आवश्यक है, व्यर्थोंकि
वे विजहर्ता हैं और अगर प्रसन्न हो जाएं, तो व्यक्ति के रासों
के सभी विज्ञ समाप्त कर उसके जीवन को उर्ध्वमुखी बनाने
में सहायक होते हैं।

अतः गणेश साधना में पवित्र मन से तत्पर होना
चाहिए और सभी नियमों का पालन करना चाहिए। गणेश
के तांत्रिक शेत्र में कई स्वरूप प्रचलित हैं और मूल रूप में

ये तांत्रिक
वैतन्य एवं
गणाध्यक्ष अ
नाम हैं 'हेरा'

आ
प्रचलन रहा
स्वीकारा है
किसी भी
साधना को
समेत न छ

परेशानियाँ
असफलता
प्राप्त हो स
व्यर्थोंकि यह
कर सकत
विचार भी
सम्पन्न क
शीघ्र फल
साधना के

किये जा
सकत हो
1.

2.

3.

4.

5.

ये तांत्रिक देवता ही हैं, जिसका अर्थ है — पूर्ण जाग्रत, चैतन्य एवं शीशातिशोध फल देने वाले। गजानन, धूम्रकेतु, गणाध्यक्ष आदि इनके कुछ नाम हैं... और इन्हीं में से एक नाम है 'हेरम्ब गणपति'।

हेरम्ब गणपति

प्राचीन काल में ही हेरम्ब गणपति की साधना का प्रचलन रहा है और सभी ने इस विद्या को एक मत होकर स्वीकारा है, कि चाहे किसी ही परेशानी क्यों न हो, चाहे किसी भी प्रकार का विघ्न क्यों न उपस्थित हो जाय, इस साधना को सम्पन्न करते ही सभी प्रकार की चिन्ताएँ जड़ समेत नष्ट हो जाती हैं।

आजकल के परिवेश में समान्यतः जो लोगों की परेशानियाँ हैं, वे हैं — दारिद्र्य, रोग, पीड़ा, शत्रु भव, मुकदमा, असफलता आदि। अगर किसी प्रकार से इन सब में सफलता प्राप्त हो सकती है, तो वह मत्र हेरम्ब गणपति साधना ही है, क्योंकि यह साधना स्त्री, पुरुष, बालक, वृद्ध कोई भी सम्पन्न कर सकता है, साथ ही इसके लिए कोई सम्प्रदाय आदि का विचार भी नहीं है, इस साधना को सुगमता पूर्वक कोई भी सम्पन्न कर सकता है। यह साधना अत्यधिक सरल है और शीघ्र फल देने वाली है। अतः प्रयास कर के व्यक्ति को इस साधना को सम्पन्न करना ही चाहिए।

अब नीचे इस साधना से सम्बन्धित कुछ तथ्य स्पष्ट किये जा रहे हैं, जो साधना करते ही व्यक्ति को जीवन में स्पष्ट हो जाते हैं —

1. साधक का कारोबार दिनों दिन बढ़ता ही रहता है और उसके घर में धन का आगमन होता ही रहता है, इस प्रकार उसकी दरिद्रता समाप्त होती है।
2. अगर व्यक्ति नौकरीपेशा हो, तो उसकी पदोन्नति होती है और वह अधिकारियों का प्रिय पात्र बनता है।
3. किसी भी प्रकार का रोग, चाहे कितना ही गम्भीर और पुराना क्यों न हो, नष्ट हो जाता है और व्यक्ति स्वस्थ, सुन्दर एवं दीर्घ जीवन व्यतीत करने में सफल होता है।
4. उसके समस्त शत्रु परास्त होते हैं, मुकदमे आदि में उसकी विजय होती है और उसके विषयकी उसके पैरों में गिरते हैं।
5. उसका पारिवारिक जीवन आनन्दप्रद होता है और मनवाहा जीवन साधी मिलता है।

धन, वैभव, मकान, वाहन सहज ही उपलब्ध हो जाते हैं।

समाज में उसे मान, सम्मान, पद, प्रतिष्ठा, धन, वैभव एवं छाति सभी उपलब्ध होते हैं, उसके जीवन में उसकी सफलता के गम्भीर में जितने भी विज्ञ उपस्थित होते हैं, वे स्वतः ही समाप्त होते रहते हैं और वह सदैव ऊँचाइयों की ओर अग्रसर होता रहता है। इस साधना से व्यक्ति का मूलाधार चैतन्य हो जाता है। इस प्रकार व्यक्ति भौतिक सुख-सुविधाओं के साथ-साथ आध्यात्मिक ऊँचाइयों की ओर भी अग्रसर रहता है।

कूपर बताई गई स्थितियाँ साधना सम्पन्न करने के बाद साधक के जीवन में स्वतः ही उत्पन्न हो जाती हैं और जब इनका प्रादुर्भाव उसके जीवन में होता है, तब वह पूर्ण आनन्द के साथ, बिना किसी भी चिन्ता या मानसिक तनाव के ब्रेक्ष्ट्रा के पथ पर अग्रसर होने लगता है।

साधना विधान

यह एक तांत्रिक साधना है, तीक्ष्ण और शीघ्र फलदाती। यह एक दिवसीय साधना है और इसे रात्रि में ही सम्पन्न करना चाहिए। साधक दिनांक 12-12-97 या किसी भी बुधवार की रात्रि को पीली धोती धारण कर पीले आसन पर पश्चिमाभिमुख होकर बैठें और अपने समक्ष पीले वस्त्र से ढके बाजोट पर 'हेरम्ब गणपति यंत्र' स्थापित कर उसका विधिपूर्वक पूजन सम्पन्न करें। फिर 'पीली हक्कीक माला' से निन्द मंत्र का 75 माला मंत्र जार करें —

मंत्र

// ॐ गं गणपतये नं बमः //

Om Gam Ganpataye Namah

साधना वाले दिन किसी से अनावश्यक बात न करें, एक समय भोजन करें जिसमें वेसन से बनी वस्तु अवश्य ही एवं ब्रह्मचर्य का पालन करें। साधना समाप्त होने के पश्चात् किसी जलाशय या नदी में चंत्र तथा माला को विसर्जित कर दें।

ऐसा करने से साधना फलीभूत होती है और साधक की समस्त मनोकामनाएँ पूर्ण होती हैं, उसके समस्त विषय दूर होते हैं और वह जीवन के प्रत्येक क्षेत्र में सफलता प्राप्त करता है।

वा बद्रंग ह
वर्णीय बनाने
वृ
को स्थापित
उच्चारण क
मंत्र

य
'गौरांगना'
स्वयं आका

नियन्त्रित है
पेट सारे सी
बढ़ हुआ पे
प्रयोग के म
यदि आपक
को दृष्टि न
आप नियन्त्रि
में सहा क

है। जमीन
चावल भर
सुगन्धित
आर उच्चारण

मंत्र

'ईशात्व'

अन्न

भुजाएं के

साधना सफलता

क्या आप मोटापे की ओर
अग्रसर हो रहे हैं?



धूलथुली बाहे, मोटी गर्दन, पेट पर मांस चढ़ा हो और पैर स्वयं का चोङ उठाने से मना कर रहे हों, तो आप किस प्रकार स्वयं को आकर्षक या सुन्दर कह सकेंगे? सौन्दर्य का तो प्रथम चरण ही सांचे में ढली हुई देहथप्ति होती है। फिर आपने इस मोटापे की ओर निरन्तर अग्रसर होते हुए देह पर किस प्रकार से ऐसा अंकुश लगाया जाय, जिससे निरन्तर बहुता मोटापा न सिर्फ रुक सके, बल्कि धीरे-धीरे अनावश्यक चर्ची भी छूटने लगे और देह पुनः सुडौल बन सके?

ऐसा सम्भव हो सकता है इस प्रयोग के माध्यम से —

गुरुकार को प्रातः स्नान कर बालों को खोल दें। सफेद वस्त्र बिछा कर उस पर कुंकुम से स्वस्तिक का निर्माण करें, स्वस्तिक के मध्य में चावल की ढेरी बना कर उस पर 'हिरादी' का स्थापन करें। गुटिका के समक्ष घी का दीपक लगाएं, दीपक में एक लौंग भी डाल दें। फिर वजासन में बैठ कर निम्न मंत्र का 31 बार उच्चारण करें —

मंत्र

॥ अं ह्रीं ह्रीं फ्लौं अं॥

Om Hreem Hreem Phloum Om

यह प्रयोग सात दिन का है। सात दिन के उपरान्त दूध से बनी सामग्री में गुटिका डाल कर उसे किसी निर्जन स्थान पर रख दें, मोटापे में कमी आएगी।

गौरांगवर — 125/-

मंत्र-तंत्र-धंत्र विज्ञान अक्टूबर 97 ५८

अपने रुखे बालों को
आकर्षक बनाइए



रुखे बालों में आकर्षण उत्पन्न करने के लिए निम्न प्रयोग सम्भव कराएं —

सोमवार के दिन किसी पात्र में 'स्वयंभू' को स्थापित कर दें। 'स्वयंभू' का पूजन कुंकुम, अक्षत तथा पुष्प से करें, फिर उस पर चावल के दाने चढ़ाते हुए निम्न मंत्र का 51 बार उच्चारण करें —

मंत्र

॥ अं ह्रीं क्रौं फ्लौं फट्॥

Om Kleem Kroum Phat

फिर गुटिका को लेकर उसे अपने बालों से स्पर्श कराएं। इस प्रयोग से आपके बालों में आकर्षण उत्पन्न होने लगेगा, बालों में यदि किसी प्रकार का कोई रोग है, तो वह भी धीरे-धीरे समाप्त होगा और बाल प्राकृतिक रूप से सुन्दर होने लगेंगे। यह पांच दिन तक किया जाने वाला प्रयोग है। प्रयोग समाप्त होने पर गुटिका को किसी नदी में प्रवाहित कर दें।

गौरांगवर — 100/-

अपनी त्वचा को गौरवर्णीय बनाइए

प्रत्येक व्यक्ति की यह इच्छा होती है, कि उसका रंग गोरा हो और इसके लिए वह अनेक प्रकार के प्रवासों में संलग्न रहता है। दुग्ध जैसे केसर, मिश्रित हो, इस प्रकार के गौर रंग को सर्वश्रेष्ठ माना जाता है। यदि आपकी त्वचा काली

या बदरंग हो, तो अपनी त्वचा को सौन्दर्य युक्त और गैर वर्णीय बनाने के लिए यह प्रयोग उत्तम है —

बृहस्पतिवार के दिन प्रातः एक पात्र में 'गौरांगना' को स्थापित कर दें। उस पर 18 पर्सी पुष्प निम्न मंत्र का उच्चारण करते हुए चढ़ाएं —

मंत्र

// अं हुं लक्ष्मीं हुं फट्//

Om Hum Hasphroum Hum Phat

यह प्रयोग ग्यारह दिन तक करें, ग्यारह दिन के पश्चात् 'गौरांगना' को नदी में प्रवाहित कर दें। त्वचा में आपको स्वयं आकर्षक प्रभाव दिखाई देगा।

न्यौशावर — 150/-

अपने थुलथुले पेट को नियंत्रित करिए

कई बार ऐसा देखने में आता है, कि पूरा शरीर तो नियन्त्रित है, पर पेट जल्दी से ज्यादा बड़ा हुआ है और बड़ा हुआ पेट सारे सौन्दर्य को समाप्त कर व्यक्ति को कुरुप बना देता है। बड़ा हुआ पेट एक नहीं अनेक रोगों का कारण भी होता है। इस प्रयोग के माध्यम से भले ही आप कितनी ही रूपवती ब्रेणों न हों, यदि आपका पेट बाहर लटका हुआ है, तो आपका रूप सौन्दर्य को दृष्टि से उपेक्षणीय ही रहेगा। आप अपना बड़ा हुआ पेट आप नियंत्रित कर सकती हैं और स्वयं को सौन्दर्यवती की ब्रेणों में खड़ा कर सकती हैं, इस प्रयोग के माध्यम से —

आप किसी भी दिन से यह प्रयोग आरम्भ कर सकते हैं। जमीन पर हल्दी से 'ॐ' लिख कर उस पर एक पात्र में चावल भर कर उसमें 'ईशत्व' को स्थापित करें, उसके समक्ष सुगन्धित धूप लगाएं। फिर उसके समक्ष निम्न मंत्र का 40 बार उच्चारण करें —

मंत्र

// क्लीं हसौ क्लीं//

Kleem Hasou Kleem

यह प्रयोग नीं दिन तक करें। प्रयोग समाप्त होने पर 'ईशत्व' को चावल सहित किसी निर्जन स्थान पर रख दें।

न्यौशावर — 120/-

अनावश्यक बालों को हटाइए इस प्रयोग से

स्त्री सौन्दर्य की कल्पना चिकनी रोम रहित सुडौल मुजाएं, कोमल पांच, आकर्षक चेहरे की ही होती है। कभी-कभी

कुछ शारीरिक न्यूनताओं के कारण चेहरे पर, हाथ, पैरों पर बाल उग आते हैं, जिससे सौन्दर्य समाप्त होने लगता है और स्त्री में हीनता का भाव आ जाता है। अनावश्यक बालों को हटाने के लिए यह प्रयोग सम्पन्न करें —

'लघु मोती शंख' को गुलाब के पुष्प पर स्थापित करें, उसके समक्ष धी का दीपक प्रज्ज्वलित करें। फिर निम्न मंत्र का 75 बार उच्चारण करते हुए चावल के दाने एक-एक कर उसके अन्दर डालें —

मंत्र

// ॐ क्रीं झ्रौं क्रैं ॐ//

Om Kreem Jhroum Kreem Om

मंत्र जप समाप्त होने पर चावल के दानों को चिढ़ियों को खिला दें। यह प्रयोग ग्यारह दिन तक करें। ग्यारह दिन बाद मोती शंख को लाल रंग के बस्त्र में बांध कर किसी बृक्ष की जड़ में डाल दें।

न्यौशावर — 125/-

क्या आपके पांच फूल की तरह कोमल हैं?

हाथी के सूँड की तरह रोम रहित जंधाएं, कोमल नाजुक पांच, हिरनी की तरह चाल ही तो स्त्री का आकर्षण है। आप भी अपने पैरों में यदि इस प्रकार का आकर्षण पाना चाहतों हैं, जो आपके

व्यक्तित्व की मुन्द्रता को द्विगुणित कर दे, तो निश्चय ही यह प्रयोग आपके लिए है —

रविवार की प्रातः स्नानादि से निवृत्त होकर यह प्रयोग करें। खड़े होकर, उत्तर की ओर मुंह करके, 'आकर्षणी माला' से निम्न मंत्र का एक माला मंत्र जप करें —

मंत्र

// ॐ नृं ॐ//

Om Nrim Om

यह प्रयोग पांच रविवार करें। पांचवें रविवार माला नदी में प्रवाहित कर दें।

न्यौशावर — 100/-

ज्ञानवार्षी की बाली

मेष (चूं, चे, चो, ला, ली, लू, लो, आ)

समय सामान्य चल रहा है, लेकिन यदि आप सुझ-बूझ एवं संयम के साथ निर्णय लेंगे, तो अनुकूलता प्राप्त होगी। कारोबारी उत्साह बना रहेगा, लेकिन आर्थिक दृष्टि से शिविलता ही रहेगी। धार्मिक प्रसंगों में रुधि बढ़ेगी। किसी के बहकावे में आकर कोई भी गलत कार्य न करें। कुछ मित्र, जो आपको छोड़ गये थे, वे पुनः आपसे आ मिलेंगे। राज बाधाएं उपस्थित होंगी, परन्तु मित्रों के सहयोग से उनका समापन भी होगा। अनुकूलता प्राप्ति हेतु 'भैरव साधना' (नवम्बर-94 के अंक में पृष्ठ संख्या 15 पर प्रकाशित) करें तथा नित्य एक रोटी पर काला तिल रख कर कुत्ते को खिलायें। यात्रा में सावधानी बरतें। जीवनसाथी से अनुकूलता प्राप्त होगी।

वृष (ई, उ, ए, ओ, वा, वी, चूं, चे, वो)

जो कार्य आप करना चाहते हैं, करें, उसमें अपने विवेक एवं सूझबूझ से दैर्घ्य पूर्वक वर्धित नियंत्रण ले अन्यथा आर्थिक हानि को सम्भावना बढ़ेगी। मित्रों के साथ सम्बन्धों में कठुना अर्थेगी। जीवनसाथी का अनुकूल सहयोग प्राप्त होगा तथा कारोबारी विस्तार से प्रसन्नता होगी। बाहन प्रयोग करते समय सावधानी बरतें। किसी से मतभेद होने की दशा में संयम बनाये रखें। संतान पक्ष आपके लिए अनुकूल मिल्दे होंगे। विशेष अनुकूलता प्राप्ति के लिए 'अष्ट लक्ष्मी साधना' (अक्टूबर-94 के अंक में पृष्ठ संख्या 27 पर प्रकाशित) सम्पत्र करें। 'कर्म चक्र' (न्यौद्धावर - 80/-) को सदैव धारण किये रहें। नीकरी व इंटरव्यू में सफलता प्राप्त होगी।

मिथुन (का, की, कूं, घ, ड, छ, के, को, हा)

किसी कार्य के यीछे पढ़ कर उसे पूरा कर लेने की आपकी जिद अनेक संकटों को जान्म दे सकती है, अतः अपनी जिद छोड़ कर विवेक के साथ निर्णय लें। जीवनसाथी का सहयोग सामान्य ही रहेगा। सामाजिक नियंत्रणों का उल्लंघन करना हानिप्रद सिद्ध होगा। धार्मिक एवं मांगलिक कार्यों को लेकर यात्रा योग बरेंगे। जीवन के क्रय-विक्रय के योग बरेंगे। मित्रों का सहयोग प्राप्त होगा। कारोबार में विस्तार होगा तथा रुका हुआ धन प्राप्त होगा। पूर्ण अनुकूलता प्राप्ति हेतु 'मातंगी साधना' (मार्च-95 के पृष्ठ संख्या 49 पर प्रकाशित सम्पत्र करें तथा 'सिद्धि माला' (न्यौद्धावर - 150/-) को सदैव धारण किये रहें।

कर्क (ही, हु, हे, हो, डा, डी, दू, डे, डी)

जो कार्य आप करना चाहते हैं, वह करें, सफलता प्राप्त होगी। मित्रों का सहयोग प्राप्त होने से प्रसन्नता होगी। जीवनसाथी का सहयोग प्राप्त होगा तथा संतान पक्ष की ओर से प्रसन्नता प्राप्त होगी। रुका हुआ धन प्राप्त होगा। जीवन-जायदाद के मामलों की उपेक्षा न करें अन्यथा संकट का सामना करना पड़ेगा। अनावश्यक विवादों से बचने का प्रयास करें। धार्मिक एवं मांगलिक प्रसंगों को लेकर यात्रा योग बरेंगे। बाहन प्रयोग करते समय सावधानी बरतें। पूर्ण अनुकूलता प्राप्ति हेतु 'छिप्रमस्ता साधना' (जनवरी-94 के पृष्ठ संख्या 11 पर प्रकाशित) सम्पत्र करें तथा घर से बाहर जाने से पूर्व अपने फिर के कपर से पांच काली मिर्च के दाने छुपा कर फेंक दें।

सिंह (मा, मी, मू, मे, मो, टा, ठी, दू, टे)

भूल कर भी किसी की उपेक्षा न करें तथा दूसरों के मान-सम्मान का भी ध्यान रखें। किसी से भी बाद-विवाद होने की स्थिति में संघर्ष रखें। कारोबार में विस्तार होगा तथा आर्थिक स्थिति अनुकूल होगी। दापत्य सुख में बृद्धि के साथ साथ समाज में यान-सम्मान भी बढ़ेगा। व्यर्थ के व्यय से बचें। भैतिक सुख के साथनों में बृद्धि होगी। अदालती मामलों एवं राज्य पक्ष की ओर से आने वाली बाधाओं के कारण तनाव रहेगा अतः आप 'भैरव साधना' (नवम्बर-94 के पृष्ठ संख्या 15 पर प्रकाशित) सम्पत्र करें। इसके साथ ही आप अपने पास 'भैरव गुटिका' (न्यौद्धावर - 80/-) हर समय रखें एवं पाह के अंत में उसे नदी में विसर्जित कर दें।

कन्या (टो, पा, पी, पू, घ, ण, ठ, पे, पो)

समय अनुकूल है, अतः शीघ्र निर्णय ले कर इसका उपयोग करें। मित्रों से विशेष सहयोग प्राप्त नहीं होगा। अदालती मामलों में अनुकूलता प्राप्त होगी। पारिवारिक मामलों की उपेक्षा न करें अन्यथा जीवनसाथी से तनाव बढ़ सकता है। साधनात्मक दृष्टि से यह समय आपके लिए अनुकूल एवं सफलतादायक रहेगा। 'चन्द्रमीलीख्यर साधना' (मई-95 के अंक में पृष्ठ संख्या 37 पर प्रकाशित) सम्पत्र करें, इसके साथ ही 'मधुरुपेण रुद्राक्ष' (न्यौद्धावर - 100/-) धारण करें। धार्मिक एवं मांगलिक प्रसंगों को लेकर यात्रा योग बरेंगे, यात्रा अनुकूल रहेगी। बाहन प्रयोग के समय जलदबाजी न करें। भूमि विस्तार के साथ-साथ कारोबारी विस्तार की सम्भावनाएं भी बरेंगी।

सूर्य
मंगल
बुध
गुरु
शुक्र
शनि
राहु
केतु

तुला (रा,

होगी, लेकिन कर अपने न सावधानी बचावेंगी। अक्षय-विष्णु-मांगलिक विवाह (न्यौद्धावर मिलेंगी। इन अंक में पृष्ठ वृश्चिक (

विचार कर जीवनसाथी करें। यात्रा सम्बन्धियों व कार्य भार (मई-95 के 'गौरी-शंकु धनु (ये, च

पारिवारिक ध्यान दें। धन व्यय बाधनसिक त्र प्राप्त करेंगे सम्बन्धी विप्राप्ति हेतु संख्या 23 - 66/-)

आकाश दर्शन

सूर्य	कन्या राशि में, 17 अक्टूबर से तुला राशि में।
मंगल	वृश्चिक राशि में।
बुध	कन्या राशि में, 15 अक्टूबर से तुला राशि में।
गुरु	मंकर राशि में।
शुक्र	वृश्चिक राशि में, 30 अक्टूबर से धनु राशि में।
ज्येष्ठा	मीन राशि में।
यहु	मिह राशि में।
केतु	कुम्भ राशि में।

तुला (रा, री, रू, रे, रो, ता, ती, तु, ते)

कारोबारी नीतियां रहेगी, आर्थिक स्थिति भी कमज़ोर होगी, लेकिन वह स्थिति क्षणिक होगी। अतः व्यर्थ का तनाव स्थान कर अपने कार्य की ओर ध्यान दें। साझेदारी सम्बन्धी मामलों में सावधानी बरतें। कार्य भार में वृद्धि होगी एवं पदोन्नति की सम्भावनाएं बढ़ेंगी। अदालती विवादों में अनुकूलता मिलेगी। वाहन के क्रय-विक्रय के योग बढ़ेंगे। ज्योतिन-जायदाद में विस्तार होगा। मांगलिक कार्यों के कारण व्यस्तता एवं व्यय वृद्धि होगी। 'मुक्तक' (न्यौछावर - 60/-) को अपने पास रखने से विशेष अनुकूलता मिलेगी। इस माह 'अपराजिता विद्धि साधना' (नवम्बर-95 के अंक में पृष्ठ संख्या 75 पर प्रकाशित) सम्पन्न करें।

वृश्चिक (तो, ना, नी, नू, ने, नो, या, यी, यू)

समय अनुकूल एवं लाभप्रद है, नवे कारोबार के बारे में विचार कर सकते हैं। आर्थिक अनुकूलता व सफलता प्राप्त होगी। जीवनसाथी से तालमेल बना कर रखें तथा संतान पक्ष की उपेक्षा न करें। यात्रा में सावधानी बरतना आवश्यक होगा। यिन्होंने कार्य सम्बन्धियों का सहयोग प्राप्त होगा। अधिकारी आपके अनुकूल रहेंगे व कार्य भार में वृद्धि होगी। विशेष अनुकूलता हेतु 'गणपति साधना' (मई-95 के अंक में पृष्ठ संख्या 13 पर प्रकाशित) सम्पन्न करें एवं 'गौरी-शंकर सदाक्ष' (न्यौछावर - 100/-) धारण करें।

धनु (ये, यो, भा, भी, भू, धा, फा, छा, घे)

कारोबारी व्यस्तता बनाये रखना आपकी रुचि है, लेकिन परिवारिक मामलों की उपेक्षा भी न करें। जीवनसाथी की ओर पूर्ण ध्यान दें। संतान सुख सामान्य रहेगा। स्वास्थ्य सम्बन्धी काट और धन व्यय बढ़ेगा, अतः सावधानी बरतें। अदालती विवादों के कारण मानसिक तनाव होगा। श्रमिक एवं बेरोजगार व्यक्ति आर्थिक लाभ प्राप्त करेंगे। मांगलिक प्रसंगों में न्यूनता रहेगी। ज्योतिन-जायदाद सम्बन्धी विवाद सुलह की ओर अप्रसर होंगे। विशेष अनुकूलता प्राप्ति हेतु 'महाकाली साधना' (सितम्बर-93 के अंक में पृष्ठ संख्या 23 पर प्रकाशित) सम्पन्न करें तथा 'अन्नाक' (न्यौछावर - 66/-) को सदैव अपने पास रखें।

मंकर (भौ, जा, जी, खू, खे, खो, गा, गी)

किसी नवे कार्य को आरम्भ करने की उपेक्षा जो काव्य आप कर रहे हैं, उसे ही पूरा करें, विषेष एवं परिश्रम से गठबंधित लाभ होगा। किसी के बहकावे में न आये। साझेदारी के मामलों में सतर्कता बरतें। यिन्होंने एवं जीवनसाथी का सहयोग प्राप्त होगा। स्वास्थ्य में गड़बड़ी बनी रहेगी। आकस्मिक धन प्राप्त होने का योग क्षीण है, अतः व्यर्थ में धन व्यय न करें। राज वाधा का निवारण होगा। यात्रा करते समय सावधानी बरतें। अनुकूलता प्राप्ति हेतु 'ललिताम्बा साधना' (फरवरी-94 के अंक में पृष्ठ संख्या 26 पर प्रकाशित) सम्पन्न करें, 'सर्व कार्य सिद्धि गुटिका' (न्यौछावर - 100/-) धारण करना विशेष फलप्रद रहेगा।

कुम्भ (गू, गे, गो, सा, सी, सु, से, सो, दा)

नवे एवं पुराने अनुबन्धों से लाभ की स्थिति रहेगी। नवे कारोबार के विषय में विचार कर कार्य आरम्भ कर सकते हैं। दाम्पत्य सुख में वृद्धि होगी। संतान पक्ष की ओर विशेष ध्यान दें। मान-सम्बन्ध की क्षति को सम्मानना बढ़ेगी। शत्रु वासा का सम्मान करना पड़ सकता है। आर्थिक स्थिति कमज़ोर रहेगी। पूर्ण अनुकूलता प्राप्ति हेतु आप 'बगलामुखी साधना' (अप्रैल-93 के पृष्ठ संख्या 37 पर प्रकाशित) सम्पन्न करें तथा 'सीमनस्त्र गुटिका' (न्यौछावर - 60/-) को अपने पास रखें। वाहन प्रयोग के समय सावधानी बरतें।

मीन (दी, दू, थ, झ, ज, दे, दो, चा, ची)

व्यर्थ के तनाव से बचें और अपने कार्यों में तल्लीन रह कर सुरुचिपूर्ण होंगे से उसे पूर्ण करें। परिवारिक दायित्वों का पूरी तरह नियोंह करें। किसी के बहकावे में आकर कोई कार्य न करें। अदालती विवादों में अनुकूलता प्राप्त होगी तथा जन्मन जायदाद में विस्तार होगा। भौतिक सुख-सुविधाओं में वृद्धि होगी। धार्मिक एवं मांगलिक प्रसंगों को लेकर यात्रा योग बनें। स्वास्थ्य की दृष्टि से समय कस्टकारक रहेगा। आर्थिक व्यय भार में वृद्धि होगी। अनुकूलता प्राप्ति हेतु 'तारा साधना' (फरवरी-95 के अंक में पृष्ठ संख्या 13 पर प्रकाशित) सम्पन्न करें तथा पूरे माह 'प्राप्ति' (न्यौछावर - 60/-) को अपने पास रखें।

इस मास के व्रत, पर्व एवं त्योहार

1-10.97	आश्विन कृष्ण पक्ष 30	अग्रामस्त्रा, आदू समाप्ति
2-10.97	आश्विन शुक्ल पक्ष 01	नवरात्रि प्रारम्भ, चट स्त्रावन
6-10.97	आश्विन शुक्ल पक्ष 05	सरस्वती पंचमी
9-10.97	आश्विन शुक्ल पक्ष 08	दुर्गा अनुष्ठान
10-10.97	आश्विन शुक्ल पक्ष 09	पद्मवली दान नवमी
11-10.97	आश्विन शुक्ल पक्ष 10	विजया दशमी
12-10.97	आश्विन शुक्ल पक्ष 11	पापाकृष्ण एकादशी
16-10.97	आश्विन शुक्ल पक्ष 15	शहद पूर्णिमा
19-10.97	कार्तिक कृष्ण पक्ष 04	गर्वणि चतुर्थी, करवा चौथ
23-10.97	कार्तिक कृष्ण पक्ष 08	अलोह अष्टमी, गुरु गुरु योग
28-10.97	कार्तिक कृष्ण पक्ष 12	धन व्रतोदयी
30-10.97	कार्तिक कृष्ण पक्ष 14	दीपावली

चितवन भरी मुस्कराती हुई पुस्तकें

जो आपके घर में आने के लिए वेताव हैं
 अनशुद्ध, कुंवारी सी, महकती हुई, मदमरत निशाहों से
 भरपूर पुरत्तके जिनकी एक - एक पंक्ति से महक उठती है.
 जिनके एक-एक अकार से गुलाब की सुगंध निकल
 कर ये शरीर को साधनात्मक सुगंध और
 सौन्दर्य से अभिभूत कर देती है।

- ✿ इर्षा शिदि
- ✿ तंत्र साधना
- ✿ गुवत्तेश्वरी साधना
- ✿ मैं मुगल्य का झोका हूँ
- ✿ हंसा उड़हुं गगत की ओर
- ✿ मैं बाहे फैलावे मङ्गा हूँ
- ✿ आपसा साधना
- ✿ बगलामुखी साधना

डॉ श्रीमाली नी द्वारा लिखित ये
 आकाश से भी विस्तृत और सागर से भी बहरे प्यार से भरी हुई
 'अनटच्च' किताबें, जो आपके घर की शोभा हैं, सुगंध हैं, महक हैं,
 प्यार की खिलखिलाहट हैं और साधना की अमृत वर्षा हैं।
 क्या इतने कम मूल्य में कोई इतनी सजीली, नवली, सुंदर के पट उड़ाती हुई प्राप्त करना पर्याप्त है,
 यदि नहीं, तो इन्हें प्राप्त करने के लिए एक बार सम्पर्क करके तो देखिये न !!

प्राप्ति का नोट्टापर- 15।

सम्पर्क

मंत्र-तत्र-यंत्र विज्ञान, डॉ. श्रीमाली मार्ग, इंडिकोर्ट कॉम्प्लेक्स,
 जोधपुर (राज.) फोन : 0291-32209, फैक्स : 0291-32010

गाँ

आलोचकों
लिया है, व
मर्यादा का
ने भले ही
आज वह
बारे में कु

का विषय
परन्तु मैं
प्रस्तुत क

मानस क
प्राप्त करे

स्ल मिले
इनकी नि
समाज व
है। मंत्र
विश्व-
सम्प्रदाय
पाया है
विशाल

मानवी भाषा का अनुसन्धान विज्ञान

— शिखनन्दन सलिल

यो तो 'रामचरितमानस' हिन्दी भाषा का श्रेष्ठतम ग्रंथ है। इसके सम्बन्ध में 'न भूतो न भविष्यति' वाली सूक्ति चरितार्थ होती है। विभिन्न विद्वानों, आलोचकों और समालोचकों ने इस ग्रंथ को भिन्न-भिन्न ढंग से लिखा है, इसकी उपयोगिता बहुआयामी है। वह आदर्श और मर्वादा का काव्य है। भारतीय संस्कृति के उत्तापक तुलसीदास ने भले ही इसे 'स्वान्तः सुखात्' के लिए लिखा हो, किन्तु आज यह 'सर्वान्तः सुखात्' का अनुपम साधन है। इसके बारे में कुछ भी कहना सूर्य को दीपक दिखाना होगा।

पता नहीं, मैंने ही इस ग्रंथ की चौपाइयों को अनुसन्धान का विषय बनाया है या अन्य व्यक्ति भी इस कार्य में संलग्न हैं, परन्तु मैं जिस निष्कर्ष पर पहुंचा हूँ, उसे जनसाधारण के लिए प्रस्तुत करना मैंने अपना पुनीत कर्तव्य समझा।

बाल्य काल से ही मेरे मन में यह बात आई थी, कि मानस की चौपाइयों निश्चय ही मंत्र हैं। अगर इनकी सिद्धि प्राप्त की जाये, तो ये बड़ी ही कारण होंगी और कल्याण का कार्य करेंगी, व्योंगि तुलसी दास ने स्वयं लिखा है —

मंत्र मंत्र जेहि जपत महेसु।

काशी मुकुति हेतु डपदेशु॥

बरसों के अनुसन्धान के पश्चात् मुझे कुछ मंत्र रूपी रूप मिले इस ग्रंथ से, जो आपके सामने रख रहा है। आप भी इनकी सिद्धि प्राप्त कर अपना कल्याण तो कर ही सकते हैं, समाज का कल्याण भी कर सकते हैं, यह मेरा अटल विश्वास है। मंत्र-तंत्र भारत की मूल-संस्कृति रही है और आज विश्व-संस्कृति के रूप में उभर रही है। दुनिया के सारे धर्मों, सम्प्रदायों और संस्कृतियों ने मंत्र-तंत्र से ही ब्राण पाया है और भविष्य में भी पायेंगे, व्योंगि तंत्र-मंत्र एक ऐसा विशाल विज्ञान है, जिसमें मानव को विश्वव्यापी ब्रह्माण्डीय,

असीमित, उच्चतम चेतना में परिवर्तित होने की असम्भव प्रक्रियाएं ब्रह्माई गई हैं। इन्हीं तांत्रिक प्रक्रियाओं का जाने-अनजाने में आंशिक रूप से दुनिया के प्रायः सभी क्षेत्रों में व्यवहार किया जाता है, चाहे वे प्रक्रियाएं शारीरिक व मानसिक सनुलग्न हो या फिर झाङ-फूक, जादू या टोटका-टोना हों, हर हालत में मंत्र-तंत्र ने सूक्ष्म तात्त्विक अर्थों के रहस्यों को ही अनेक रूपों में उदधारित किया है।

मंत्र ही तंत्र का प्राण है, बिना मंत्र के तंत्र की कल्पना करना असम्भव है। मंत्र ईश्वर का नाम नहीं है, यह एक शब्द, एक चेतना का प्रतीक है। कुछ विशिष्ट ध्वनियों के समुच्चय को मंत्र कहते हैं। मंत्र में संकलित विभिन्न ध्वनियों का सम्बन्ध तत्त्वों, ग्रहों, मन-स्थितियों तथा हमारे मरिताङ्क के समूचे तंत्र से होता है। कुण्डलिनी योग में दर्शाएं गए विभिन्न चक्रों के बीच उनके बीज मंत्र होते हैं। श्रद्धा को मंत्र का आधार माना गया है।

मंत्र-शक्ति से कितने ही प्रकार के चमत्कार एवं वरदान उपलब्ध हो सकते हैं, यदि उसे सिद्ध कर लिया जाय और सिद्धि के लिए साधना आवश्यक है। साधना में निम्नलिखित बातों पर ध्यान देना आवश्यक है —

1. मानसिक एकाग्रता, 2. चारित्रिक श्रेष्ठता, 3. अपने इष्ट में अदृष्ट श्रद्धा, 4. शब्द-शक्ति

अब मैं मानस की सिद्धि चौपाइयों का उल्लेख करता हूँ, फिर सिद्ध करने की विधि का वर्णन करूँगा।

1. विचार शुद्ध करने के लिए —

ताके युग पद कमल मनावङ् ।

जासु कृपा निरमल मन पावङ् ॥

2. संशय निवृत्ति के लिए —

राम कथा सुन्दर करतारी ।

संशय विहंग उडाषन हारी ॥

26. पाप

रा

नि

27. भव

पा

यह

मंत्र-ि

हवन स

चीनी, 5.

मोथा, 10

मिला हुआ

रिक्षि

जप करन
कार्य कर

1. स्था

काली स्त्री
सुविधानु

2. वेद

बनाने का
बना कर
हवन

मिलाक
सामग्री
है) मिल
करना है
का उप
हवन

चाहिए
दिन अं
किया
होना च

3. ह्यान प्राप्ति के लिए -

छिति बल पावक गगन समीरा।
पंच रचित यह अथम शरीर॥

4. श्री हनुमान जी की प्रसन्नता हेतु -

सुमिरि पवन सुत पावन ग्राम।
अपने बस करि राखो ग्राम॥

5. गोक्ष प्राप्ति के लिए -

सत्यसंध छांडे सर अच्छा।
काल सर्प जनु बले सपच्छा॥

6. श्री राम जी की कृपा प्राप्ति हेतु -

केसरि कटि पट पीत थर, सुभमा सील निधान।
देवि भानु कल भूषण हि, विसरा सरिकल अपान॥

7. प्रेम बढ़ाने के लिए -

सब नर करहि परम्पर प्रीती।
चलहिं स्वधर्म निरत श्रुति गीती॥

8. वलोश नाश के लिए -

हरन करिन कलि कलुध कलेसू।
माथा मोह निसि दलन दिनेसू॥

9. विपत्ति विनाश के लिए -

जाँ प्रभु दीन दयाल कहावा।
आरति हरन वेद जसु गावा॥
जपहिं नाम जनु आरत भारी।
मिटहिं कुसंकट होहिं सुखारी॥
दीन दयाल विरहु संभारी।
हरहु नाथ मम संकट भारी॥

10. विघ्न नाश के लिए -

सकल विज्ञ व्यापहि नहिं तेही।
राम सुकृपा विलोकहि जेही॥

11. महामारी की रोक-थाम के लिए -

जय रघुवंश बनज बन भान।
गहन दनुज कुल दहन कृशानू॥

12. विविध रोगों की शांति के लिए -

दैहिक दैविक भाँतिक तापा।
राम राज नहिं काहुहिं व्यापा॥

13. विच्छू, सर्प दंश आदि के नाश हेतु -

नाम प्रभाक जान सीय नी की।
काल कूट फल दीन्ह अमी की॥

14. श्रूत-प्रेत अवाने के लिए -

प्रनवकं पवनकुमार, खल बन पावक ग्यान धन।
जासु छद्य आगार, बसहिं राम सर चाप थर॥

15. बनार उतारने के लिए -

स्वाम गौर सुन्दर दोऊ जोड़ी।
निरस्थहिं छवि जननी तृन तोरी॥

16. खोई हुई वस्तु प्राप्त करने हेतु -

गई बहोरि गरीब नेवाजू।
सरल नवल साहिब रघुराजू॥

17. जीकरी प्राप्त करने के लिए -

विस्व भरन-पोषण कर जोई।
ताकर नाम भरत अस होई॥

18. दरिद्रता दूर करने के लिए -

अनिधि पूज्य प्रियतम् पुराति के।
कामद धन दारिद दवारि के॥

19. पुत्र प्राप्ति के लिए -

प्रेम मगन कौशल्या, निसिदिन जात न जान।
सुत सनेह बस माता, बाल चरित कर गान॥

20. धन प्राप्ति के लिए -

जे सकाम नर सुनहिं जे गावहिं।
सुख-सम्पत्ति नाना विधि पावहिं॥

21. मुकदमा नीतने के लिए -

पवन तन्य बल पवन समान।
बुद्धि विवेक विवान निधान॥

22. मनोनुकूल वर प्राप्ति के लिए -

सुनु सिय सम्य असीस छमारी।
पूजहिं मन कामना तुम्हारी॥

23. परीक्षा में सफलता प्राप्ति हेतु -

जेहि पर कृपा करहिं जनु जानी।
कवि उर अजिर नचावहि बानी॥
मोरि सुधारिहि सो सब भानी।
जासु कृपा नहिं कृपा अपाती॥

24. शत्रु नाश के लिए -

जाके सुमिरन ते रिपुनाश॥।
नाम शत्रुहन वेद प्रकाश॥॥

25. वशीकरण के लिए -

जन-सन संजु मुकुर मन हरनी।
किए तिलक गुन-गत वश करनी॥

26. पाप नाश के लिए —

राम-राम कहि जे जमुहाहीं।
तिनहिं न पाप पूज समुहाहीं॥

27. भय से बचने के लिए —

पाहि पाहि रधुबीर गोसाई॥
यह खल खाई काल की नाई॥

मंत्र-सिद्धि करने हेतु जानकारी

हवन सामग्री

1. चन्दन का बुरादा, 2. तिल, 3. शुद्ध धूमी, 4. शुद्ध चीनी, 5. आग, 6. तापर, 7. कपूर, 8. शुद्ध केसर, 9. नागर मोथा, 10. पंच मेवा, 11. जौ, 12. अक्षत और अष्टगम्भ मिला हुआ धूप।

सिद्धि हेतु जानकारी

जिस उद्देश्य के लिए जिस चौपाई, दोहे या सोसठे का जप करना चाहिए गया है, उसको सिद्ध करने के लिए निम्न कार्य करना चाहिए —

1. स्थान निर्धारण

इन मंत्रों को शिवालय के प्रांगण, महावीर स्थल, काली स्थान, दुर्गा स्थान या घर में सिद्ध किया जा सकता है। सुविधानुसार स्थान का चयन किया जा सकता है।

2. वेदी निर्माण

इन मंत्रों की सिद्धि हेतु हवन के लिए हवन कुण्ड बनाने की आवश्यकता नहीं होती है, पवित्र मिठी की वेदी बना कर, उसमें अग्नि रख कर उसी में आहुति देनी चाहिए।

हवन रामग्री की तैयारी

प्रत्येक आहुति लगभग धीन तोला (सब कुछ मिलाकर) होनी चाहिए। पूर्ण जप में लगभग एक किलो सामग्री लगती है। सभी चौर्जे (जिनकी सूची ऊपर दी गई है) मिला कर सामग्री तैयार करनी चाहिए। हवन 108 बार करना है, इसलिए 108 मनकों वाली 'सफेद हकीक माला' का उपयोग किया जा सकता है।

हवन यज्ञ समय

हवन रात्रि 10 बजे के उपरान्त ही किया जाना चाहिए। अगर चौपाई लंका काण्ड की है, तो शनिवार के दिन और किसी अन्य काण्ड की है, तो हवन किसी भी दिन किया जा सकता है। लेकिन तिथि का योग और मुहूर्त उत्तम होना चाहिए।

विद्यान

सर्वप्रथम स्थान को स्वच्छ कर पवित्र बना लें। किर कुम अथवा कम्बल का आसन बिद्धावें। पूर्व की ओर पीढ़ तथा पश्चिम की ओर मुंह रहे। दीप जला कर अगरबत्ती, धूप आदि जला कर पवित्रीकरण करें।

इसके बाद विज्ञ शांति के लिए श्री राम को स्मरण करते हुए चारों दिशाओं में पीली सरसों कंके।

अब पूजा क्रत्व पढ़ें —

"अस्य श्री राम रक्षा स्तोत्र पञ्चस्य ब्रह्म कौशिक
ऋषि श्री सीता-रामचन्द्रो देवता अनुष्टुप् छन्दः सीता
शक्तिः श्रीमान् हनुमान् कीलकं श्री राम चन्द्र प्रीत्यर्थं
राम रक्षा स्तोत्र जपे विनिधोगः।"

ऐसा बोल कर वेदी पर आम के पत्तों के द्वारा जलपात्र से जल गिराएं।

फिर श्री राम का ध्यान करते हुए निम्न मंत्र का उच्चारण करें —

अथेत आजानु वाहुं धृत शर धनुषं बद्ध पद्मसनस्थं।
पीतं वासो वसानं नवं कमलं दलभ्युर्हि नेत्रं प्रसन्नम्॥
वामाङ्गे रुद्रसीतां मुखकमलं मिलल्लोचनम् सीरदाम्॥
नना अलंकार दीपं दधदूरु जटा मंडलं रामचन्द्रम्॥

अब कौलक मंत्र पाठ करें —

चरितं रथु नाथस्य शतकोटिप्रविस्तरम्।
एकंकमक्षरं पुसां महापातकनाशनम्॥
ध्यात्वा चीलोत्पलश्यामं रामं राजीवलोचनम्॥
जानकीलक्ष्मणोपेतं जटामुकुटमणिडनम्॥
सासितूणधनुर्बाणपाणिं नकंचरामनकम्॥
स्वलीलया जगन्नातुमविभूतभजं विभूम्॥
राम रक्षा पतेत्प्राजः पापध्नौ सर्वकामदाम्॥
शिरो मे रघुवः पातु भरतं दशरथाभजः॥

आम के पत्ते द्वारा जलपात्र से एक बार पुनः जल गिरा कर प्रणाम करें एवं जिस मंत्र को सिद्ध करना हो, उसे एक बार जप कर 'स्वाहा' कह कर आहुति दें। वह क्रम 108 बार करें।

ऐसा करने से मंत्र सिद्धि प्राप्त होती है। अब इसका प्रयोग कर सकते हैं। साथ ही महीने में कम से कम एक बार उचित समय सुविधानुसार 108 बार उपरोक्त विधि से ही हवन कर लिया करें। इन मंत्रों को श्रियां भी सिद्ध कर सकती हैं। इस बात का ध्यान रहे, कि रजस्वला के काल में जप, सिद्धि कार्य न करें।

यह हमने नहीं बनाहमिहिन ने कहा है

किसी भी कार्य को प्रारम्भ करने से पूर्व प्रत्येक व्यक्ति के मन में संशय-असंशय की भावना रहती है, कि यह कार्य सफल होगा या नहीं, सफलता प्राप्त होगी या नहीं, बाधाएं तो उपस्थित नहीं हो जायेगी, पता नहीं दिन का प्रारम्भ किस प्रकार से होगा, दिन की समाप्ति पर वह स्वयं को तनावरहित कर पायेगा या नहीं।

प्रत्येक व्यक्ति कुछ ऐसे विषय अपने जीवन में अपनाना चाहता है, जिससे उसका प्रत्येक दिन उसके अनुकूल आनन्द युक्त जन्म जाय। कुछ ऐसे ही उपर्युक्त विषय अपने समझ प्रस्तुत हैं, जो बनाहमिहिन के विविध प्रकाशित-अप्रकाशित प्रथाओं से संकलित हैं, जिन्हें वहाँ प्रत्येक दिवस के अनुसार प्रस्तुत किया गया है तथा जिन्हें सम्प्रकाश करने पर आपका पूरा दिन पूर्ण सफलतादायक बन सकेगा।

15 अक्टूबर — प्रातः काल बाहर जाने से पूर्व निम्न श्लोक का पाठ पांच बार करके बाहर जाय।

ज्ञान बदाचै पुरुषे प्रणाम्य आत्मोस्य वरदं वरनम् प्रदीप्ते।
३५५४ रु७ ज्ञान नमामि प्रणाम्य प्रणाम्य प्रणाम्य प्रणाम्य।

16 अक्टूबर — 'गुरु शिद्धि गुटिका' (न्यौलालवर - 30/-) को पूजन कर ही बाहर जाय अनुकूलता प्राप्त होगी।

17 अक्टूबर — बाहर जाने से पूर्व निम्न मंत्र का सात बार उच्चारण कर बाहर जाय।

मंत्र —

॥ ऊ हौं हौं ऊ॥

18 अक्टूबर — बाहर जाने से पूर्व काजल से एक कागज पर त्रिभुज बना कर उसके मध्य में 'ॐ शनिश्चराय नमः' लिखकर अपने साथ ले जाय, आगले दिन प्रातः विना मुह धोये कागज को फोड़ कर फेंक दें। पूरा दिन सफलतापूर्वक व्यतीत होगा।

19 अक्टूबर — 'मूर्ग' के दाने चबा कर बाहर जाने से बाथाओं में न्यूनता आती है।

20 अक्टूबर — शिवलिंग पर पांच छिल्च पत्र चढ़ाते हुए 'ॐ नमः शिवाय' का वष कर ही बाहर जाय।

21 अक्टूबर — बाहर जाने से पूर्व किसी भी फल को खाकर बाहर जाय।

22 अक्टूबर — इष्ट मंत्र का वष कर बाहर जाय।

23 अक्टूबर — बाहर जाने से पूर्व 'गोमती चक्र' (न्यौलालवर - 21/-) को किसी वृक्ष की जड़ में ढाल कर जाय।

24 अक्टूबर — 'भृतीका' (न्यौलालवर - 21/-) अपने पास रख कर बाहर जाय।

25 अक्टूबर — बाहर जाने से पूर्व सिन्धु का तिलक लगा कर जाय।

26 अक्टूबर — बाहर जाने से पूर्व गुरु मंत्र का उच्चारण भ्यारह बार करके जाय।

27 अक्टूबर — किसी भी कार्य को आरम्भ करने से पूर्व 'हौं' का वष भ्यारह बार करके जाय।

28 अक्टूबर — 'सदाश्व' (न्यौलालवर - 11/-) का स्थापन घर में करें।

29 अक्टूबर — एक पात्र में जल लेकर निम्न मंत्र का 21 बार वष करके जल पर तीन बार फूँकें, उस जल को पूरे घर में छिड़क दें।

30 अक्टूबर — लक्ष्मी पूजन के साथ-साथ निम्न मंत्र का भी जप

21 बार करें।

मंत्र —

॥ ऊ बजलझमी हौं हौं बजलझमी हौं हौं बज लझमी हूं फट॥

31 अक्टूबर — घर के पूर्ण द्वार का पूजन करें तथा मुख्य द्वार के दोनों ओर हल्दी मिला कर जल लिया दें।

1 नवम्बर — 'चैतन्य' (न्यौलालवर - 31/-) पर कृकृप से अपना नाम लिख कर चिल्चित कर दें, तथा अपनी कोई एक कामना बोलें। कामना पूर्ण होगी।

2 नवम्बर — 'नारायण गुटिका' (न्यौलालवर - 40/-) को अपने पास रखे एक दिन सफल होगा।

3 नवम्बर — द्वं भगवान शिव पर चढ़ाने से महात्मार्पण कर्ता सिद्ध होगी।

4 नवम्बर — हनुमान मन्दिर में सरसों के तेल का दौषक लगा देने से बाधाएं न्यून होंगी।

5 नवम्बर — बाहर जाने से पूर्व निखिलेश्वरानन्द ध्यान की पांच श्लोक का पाठ कर बाहर जाय।

6 नवम्बर — शीमुखा दीपक के वृक्ष की जड़ में लगा दें।

7 नवम्बर — बाहर जाने से पूर्व भगवती घोड़शी का मंत्र भ्यारह बार जप कर जाय।

मंत्र —

॥ छार कल हौं॥

8 नवम्बर — 'कल्पनिका' (न्यौलालवर - 50/-) को धारण कर बाहर जाय।

9 नवम्बर — दधा की बड़ी जम्मु को ग्रहण कर बाहर जाय।

10 नवम्बर — बाहर जाने से पूर्व निम्न मंत्र का उच्चारण कर जाय —

मंत्र —

'ॐ अनन्ताय नमः', 'ॐ सूक्ष्माय नमः', 'ॐ शिवोत्पाय नमः', 'ॐ नेत्राय नमः', 'ॐ एक रुद्राय नमः', 'ॐ त्रिपूरीय नमः'

11 नवम्बर — 'बजरंग गुटिका' (न्यौलालवर - 60/-) को धारण कर ही बाहर जाय।

12 नवम्बर — बाहर जाने से पूर्व राम रक्षा लोत का पाठ कर जाय।

13 नवम्बर — बाहर जाने से पूर्व 'ॐ श्री अं के शबाय कीर्त्ती नमः' का उच्चारण भ्यारह बार कर बाहर जाय।

14 नवम्बर — बाहर जाने से नूर्य योग्य रुग्ण कर जाय।

सर्वोच्च ग्रन्थ मुकुलो श्वरी महात्मा मठाराज

संसार के आश्चर्यजनक यंत्रों में यह श्रेष्ठतम् यंत्र है।
जिसका निर्माण दीपावली के सिंह लग्न में ही
• विशेष मंत्रों का उच्चारण करते हुए
किया जाता है, जिसमें साधक को अपनी
स्वयं की भी काफी तपस्या व्यय करनी पड़ती है।
और फिर कुछ बिले ही व्यक्ति इसे प्राप्त कर पाते हैं, और
इसे प्राप्त कर जीवन की उंचाइओं का निर्धारण वे स्वयं
करते हैं, क्या आप भी इनमें से एक होना चाहते हैं,
तो आगे के पृष्ठ आपके लिए ही है।

य

दि हम ध्यान
पूर्वक अपने जीवन
का आकलन करें,
तो हम पाएंगे, कि इसमें दुःख,
परेशानी, आपाधापी के
अलावा कुछ भी नहीं है।
रोजमर्स की जिंदगी में कलह
पूर्ण वातावरण एवं अशांति के
बादलों के सिवा कुछ भी
देखाने को नहीं मिलता।

व्यक्ति मात्र एक
मशीन होकर ही रह गया है।
एक निश्चित समय पर उठना,
एक निश्चित समय पर नाश्ता
कर के ऑफिस जाना, वहाँ की
समस्याओं से जूझना, निश्चित समय पर घर बापस आना,
पारिवारिक समस्याओं से जूझना, भोजन करना और सो
जाना . . . मात्र यही जीवन होकर रह गया है . . . एक
बंधी-बंधाई दिनचर्या।

सामान्य व्यक्ति की जीवन के प्रति उनके इच्छाएं
होती हैं। वह चाहता है, उसका अपना स्वयं का एक घर हो,
वह धनबान हो। वह चाहता है, कि उसके पास बाहन हो, वह
चाहता है ऊंचा पद हो, समाज में मान, प्रतिष्ठा और सम्मान
हो . . . परन्तु वह बेचारा तो खुद ही परिस्थितियों के हाथों
बंधा रहता है . . . वह तो बस अपना जीवन ही रहा होता है,
ऐसे में वह किस प्रकार से अपनी ये सारी आकांक्षाएं पूरी
कर सकता है?

एक अर्थात् व्यक्ति की जीवन

हमारे ग्रहियों ने हमेशा इस ब्रात की पुष्टि की है,
कि मानव जीवन वास्तव में तभी सफल कहा जा सकता है
जब वह सभी दृष्टियों से परिपूर्ण होता है, जहाँ उसके पास
धन, यश, मान, लक्ष्मी, प्रतिष्ठा हो, वहीं वह आध्यात्मिक
सम्पदा से भी आपूर्त हो, व्योंगि कि जब इन दोनों की समान
उपस्थिति जीवन में होती है तभी व्यक्ति उच्चतम सोपान को
प्राप्त कर सकता है। इसके अलावा और कोई उपाय नहीं।
अतः व्यक्ति को निःसंकोच धन, वैभव, प्रतिष्ठा आदि को
प्राप्त करने की चेष्टा करनी ही चाहिए।

और किन विधियों से व्यक्ति अपने जीवन में इन

दीपावल्यां प्रहारात्री यंत्रं संस्थापयेद् ब्रुधः
भुवनेश्वरीतिनामानं प्रहालक्ष्मीति संजितम् ।
धनधान्यं प्रजाभिष्ठच् गृहं तत् परिशत्तेऽ
आरोग्यं सुखं सम्मानं सुखं ऐश्वर्यं चाधिगच्छति ॥

— जो बुद्धिमान् व्यक्ति महारात्रि
दीपावली के प्रावन पर्व पर अपने पूजा गृह में,
दुकान में या कारखाने में महालक्ष्मी भुवनेश्वरी
नामक इस प्रहार्यत्र को स्थापित करता है, उसका
घर धन, धान्य एवं पुत्र यीत्र आदि सन्तान में
परिपूर्ण रहता है तथा आरोग्य, सुख, सम्मान तथा
समस्त ऐश्वर्य को प्राप्त करता ही है।

मैं भी सहायक हूँ। जहाँ व्यक्ति इसकी मदद से रोजमरा की
परेशानियों एवं दुःखों से मुक्त होता है वहीं इसके द्वारा
परम आनन्द एवं स्वास्थ्य को भी प्राप्त करना है।

यह पत्रिका गागर में सागर के सदृश है क्योंकि
इसमें मंत्र, आयुर्वेद, यज्ञ, तंत्र, भक्ति, योग, ज्योतिष, अन्य
धिकित्सा विज्ञान का अद्भुत संग्रह है, जो आपको महज ही
मोह लेते हैं, और जीवन के दिशा निर्देश में आपके लिए
अत्यन्त सहायक होते हैं।

रघु पढ़िए: दूसरे के भी पदार्थ

शास्त्रों के अनुसार ज्ञान दान ही उत्तम दान है। आप
स्वयं इस आपाधापी भरी जिन्दगी को जी रहे हैं अतः आप
स्वयं लोगों की पीड़ा को भली प्रकार से समझ सकते हैं,
अतः यह हमारा फर्ज बनता है, कि पत्रिका पदस्थ होने के
नाते आप उन लोगों को भी इस पत्रिका के अमृत का स्वाद
निखारें, जिसमें कि उनके जीवन को नवीन दिशा मिल
सके। आप स्वयं इस पत्रिका से लाभ उठा चुके हैं, आप
स्वयं इसके ज्ञान से ओत-प्रोत हो चुके हैं, तो क्या आप नहीं
चाहेंगे, कि आपके भाई-बच्चे भी इसके दिव्य सरोवर में
झुबकी लगाएं, क्या आप नहीं चाहेंगे, कि वे भी इसके ज्ञान
से साबोर होकर अपने जीवन के समस्त दुःखों, परेशानियों
को मिटा सकें और अपने जीवन की सभी आकांक्षाओं को
पूरा कर सकें।

क्योंकि यह पत्रिका जब भी किसी के हाथ में गई

है तो उसका
एक बंधा-
परिवर्तित हुआ
ने ली है, रोग
में बदली है
बर्षा दुई है

अत
नहीं, उन्हें व
अधिकार नह
है, बरबर व
लाभ उठाना

मह
बर्षीती नहीं
कल्याणकार
लाभदायक
करनी ही चा
सदस्य बनाह
हैं, तो भी उ
की किरण
मानवीय कृ
जीवन में उ
क्या इससे
बंधु-बांधव
वार्षिक सर
इसका मूल
रूपये होता
195/- रु
प्रपत्र भर

एक अ

निःशुल्क
प्राप्ति
जाएगा जि
195×3 =
लेंगे। इस
आपके तो
ऐसा सुनह

है तो उसका पूरा का पूरा जीवन आलोकित हुआ ही है। एक बंधा-बंधाया जीवन, एक उल्लासमय उत्सव में परिवर्तित हुआ है, जीवन की परेशानियों की जगह प्रसन्नता ने ली है, रोग ग्रस्त शरीर स्वस्थ हुआ है, दरिद्रता, सम्पन्नता में बदली है और उसके जीवन में धश, मान, प्रतिष्ठा की वर्षा हुई है . . .

अतः सूरज की किरणों को कैद करने से कोई लाभ नहीं, उन्हें कैवल अपने लिए ही उपयोग करने का कोई अधिकार नहीं है अमृत वर्षा सभी के लिए बराबर बरस रही है, बराबर कल्पाणकारी है . . . और हर एक को ही उनसे लाभ उठाना ही चाहिए।

यह पत्रिका किसी एक वर्ग, समूदाय, धर्म की वर्षाती नहीं, यह तो सभी मानव जाति के लिए समान कल्पाणकारी है, सभी के लिए पठनीय है, संग्रहणीय एवं लाभदायक है। अतः आपको इस पत्रिका की सदस्यता प्राप्त करनी ही चाहिए और "सर्वजन हिताय" दूसरों को भी इसका सदस्य बनाना चाहिए। अगर आप पहले से ही इसके सदस्य हैं, तो भी आपको दूसरों के जीवन में इस पत्रिका को आशा की किरण के रूप में प्रवेश देना ही चाहिए . . . इससे बड़ा मानवीय कृत्य और क्या होगा? किसी दुखी एवं अशक्त जीवन में आप 'सत्य शिख सुन्न' को स्थापित कर सकें, क्या इससे वडी कोई उपलब्धि है? इसलिए आप अपने बंधु-बंधियों एवं मित्रगणों में से किन्हीं तीन व्यक्तियों को वार्षिक सदस्य अवश्य बनाएं। यह मासिक पत्रिका है और इसका मूल्य 18/- प्रति है, जो कि एक वर्ष का 216/- रुपये होता है। परन्तु रियायत के तौर पर यह न्यौदायर मात्र 195/- रुपये रखा गया है। आप इसके साथ लगा हुआ प्रपत्र भर कर भेज दें।

एक अद्भुत, अद्वितीय लोकपा

और मनीआडर वा डाफ्ट प्राप्त होते ही हम आपको निःशुल्क उपहार भेजेंगे, और वह है 'भूत्तेश्वरी भवालक्ष्मी महायंत्र'। यह उपहार आपको ची० पी० पी० द्वारा भेजा जाएगा जिसे आप तीन सदस्यों का वार्षिक सदस्यता शुल्क $195 \times 3 = 585 + 30$ (डाक खर्च) = 618/- दे कर छुड़ा सोंगे। इससे आपको यह यंत्र निःशुल्क प्राप्त होगा और आपके तीनों मित्रों को वर्षभर पत्रिका प्राप्त होगी।

वास्तव में ही आप अत्यन्त ही सौभाग्यशाली हैं, कि ऐसा सुनहरा अवसर आपका द्वार खटखटा रहा है। 'भूत्तेश्वरी

भूत्तेश्वरी भवालक्ष्मी महायंत्र' अपने आप में ही अत्यन्त तेजस्वी यंत्र है, जिसका वर्णन तो कई ग्रंथों में प्राप्त होता है, परन्तु इसका निर्माण, वैतन्य क्रिया अत्यधिक जटिल और श्रम साध्य होने से कहीं पूर्ण वर्णित नहीं है। पूज्य गुरुदेव की कृपा से कुछ विशेष यंत्र उच्चकोटि के पड़ितों ने दीपावली की अर्घरात्रि को सिंह लग्न में सिद्ध किये हैं, इसके निर्माण में जिन विशेष घंट्र प्रक्रियाओं को अपनाया जाता है, उन्हें साधारण पण्डित या सङ्क पर बैठा कोई व्यक्तित्व नहीं कर सकता।

ब्रात्सव में ही यह यंत्र चारसमय की भाँति है, इसको जो भी प्राप्त कर लेता है उसका भाग्य जग जाता है। किसी परम दरिद्री, परम गोपी के घर में भी अगर यह महायंत्र स्थापित कर दिया जाय और श्रद्धा एवं विश्वास साथ पूजन करें, तो महोने घर के अंदर-अंदर उसका भाग्य परिवर्तित हो सकता है, उसकी देह कञ्चन की भाँति दिष्प-दिष्प कर सकती है एवं वह कुपार्ग से उटकर सद्कार्मी की ओर गतिशील हो सकता है।

यह यंत्र गृहस्थ साधकों के लिए उपलब्ध करवाने पर अनेक उच्चकोटि के पडित एवं साधक पत्रिका परिवार को साधुवाद दे रहे थे, ले इस चात को समझ रहे थे, कि जिस यंत्र की निर्माण प्रक्रिया इतनी श्रमसाध्य है उसे इतनी महजता से वर्षों उपलब्ध कराया जा रहा है, क्योंकि आज के युग में व्यक्ति अपने स्व प्रवासों से इतनी उत्तिन नहीं कर सकता जितनी वह चाहता है, यह मात्र दैवीय कृपा से ही सम्भव है। गृहस्थ साधकों के लिये यह महत्वपूर्ण और ब्रेत्तनम यंत्र है, अद्वितीय यंत्र है, क्योंकि इस यंत्र की वह खासियत है, कि यह स्वयं सिद्ध होता है, इसे सिद्ध करने की आवश्यकता नहीं होती। इसे बस घर में स्थापित कर नित्य अगरबत्ती लगानी होती है . . .

और जिस प्रकार से अगरबत्ती की सुगन्ध चतुर्दिक फैलकर एक मनीहर वातावरण का सूजन करती है, उसी प्रकार इस दिव्य महायंत्र से निकलती रशिमयां सारे घर के वातावरण को तनाव रहित और परेशानियों से मुक्त कर देती है, एक आनन्दप्रद स्थिति का सूजन कर देती है और व्यक्ति को जीवन में उच्च पद, मान, धन, सम्पन्नता, ऐश्वर्य सहज ही उपलब्ध हो जाता है। इसके साथ ही साथ उसका आध्यात्मिक उत्थान भी होता रहता है, उसके एक हाथ में भोग होता है तो दूसरे हाथ में मोक्ष . . . वह सामान्य मानव से महामानव की ओर अग्रसर होने लगता है, इन्हें एवं अन्य देवता गण भी उसके भाग्य से ईर्ष्या करते हैं।

(पत्रिका के प्राप्तिक पृष्ठ पर प्रकाशित निम्नों के अनुग्रह)

प्रपत्र

मैं 'भूतनेश्वरी भग्नालक्ष्मी भग्नायंत्र' चाहता हूं, नीचे निम्न तीन पते दे रहा हूं, जो अभी तक पत्रिका सदस्य नहीं हैं।

1.	पित्र का नाम	
	पूरा पता	
	ग्राम	तहसील
	ज़िला	पिन कोड
2.	पित्र का नाम	
	पूरा पता	
	ग्राम	तहसील
	ज़िला	पिन कोड
3.	पित्र का नाम	
	पूरा पता	
	ग्राम	तहसील
	ज़िला	पिन कोड
और		
	पित्र का नाम	
	पूरा पता	
	ग्राम	तहसील
	ज़िला	पिन कोड

पत्रिका से यह पता फाढ़ ले और भली प्रकार से इस प्रपत्र को हिन्दी या अंग्रेजी में साफ-साफ भर कर, लिफाफे में बंद कर उस पर दो रुपये का टिकट लगा कर भेज दें।

इस प्रपत्र के साथ मनिआर्डर की रसीद लगा दें या ड्राफ्ट भेजा हो, तो उसकी फोटो कापी लगा दें। ड्राफ्ट 'पंत्र-तंत्र-यंत्र विज्ञान' के नाम से बना हो तथा जोधपुर में देय हो।

अपना प्रपत्र जोधपुर के पते पर भेजें।

संबन्धित

पंत्र-तंत्र-यंत्र विज्ञान, डॉ० श्रीमाली घार्म, हाईकोर्ट कॉलोनी,
जोधपुर - 342001, फोन : 0291-32209, फैक्स : 0291-32010

ज
है

है, न विष
इस भारत
चले गए, न
गतिशील
इस देश म
में भी ऐस
है, प्रत्येक
वह साधार
का रहने क

बहा चला।
यह पता न
देश किस
स्थिति में
हमारा शास
से हमारा न
है, जहां ए
परिवर्तन,

इसमें चार
अस्थिर हैं
भरी तुहाँ के
कांटों के र
घुटन, एवं
घुमड़ रही

हाँ मध्यावधि चुनाव होनेजा रहे हैं

है श आज अजीब से संक्रमण काल से गुजर रहा है, एक ऐसा संक्रमण काल जहां न दिन का पूरा उजाला है, न अंधेरी रात है, न प्रसन्नता की मूलक है, न विषाद के आंख़ू हैं। एक ऐसा समय जो पचास वर्षों में इस भारत वर्ष में नहीं आया। इस देश में कई प्रधानमंत्री आए चले गए, कई मंत्रिमण्डल बने विछरे। कई परिवर्तन हुए, देश गतिशील होता रहा। इमरजेंसी जैसी एक घटाटोप अंधेरी रात इस देश में छाया और समाप्त हो गई। परन्तु इन सब के बीच में भी ऐसा संक्रमण काल नहीं आया जो इस समय गतिशील है, प्रत्येक व्यक्ति के साथ एक शृंग है, वह नेता हो, वह साधारण प्रजा हो, वह शहर का रहने वाला हो, वह गांव का रहने वाला ग्रामीण हो।

प्रत्येक व्यक्ति दिग्भ्रमित है, प्रत्येक एक ऐसी री में वहा चलना जा रहा है, कि उसे किसी प्रकार का कोई ज्ञान नहीं है। यह पता नहीं है, कि क्या होगा, कल क्या होगा? यह पता नहीं देश किस तरफ बढ़ रहा है? यह पता नहीं है, कि देश सही स्थिति में बढ़ रहा है या नहीं? और जिस प्रकार से हमारा देश, हमारा शासन चल रहा है, इसे देख कर पूरी दुनियां एक प्रकार से हमारा मखौल उड़ा रही है। भारत के अलावा भी सेकंडों देश है, जहां राज्यतन्त्र है, प्रजातन्त्र है, परन्तु क्या वहां इस प्रकार का परिवर्तन, इस प्रकार का संक्रमण हो रहा है?

वहां पर पिछले साल भर का लेखा-जोखा करें तो इसमें चार-चार प्रधानमंत्री बदले जा चुके हैं और प्रत्येक प्रधानमंत्री अस्थिर है। वह स्वयं यह सोच रहा है, कि मेरी कुर्सी कांटों से भरी हुई है और मेरे सिर पर एक कांटों का ताज है। वह खुद कांटों के ताज को उतार कर नीचे रख देना चाहते हैं, व्यक्तिकि एक शुटन, एक बेचैनी, एक तड़फ, एक बेदना, उनके मानस में घुमड़ रही है, परन्तु चाहते नहीं चाहते हुए भी, वह उस कांटों के

ताज को उतार करके रख नहीं पाते और एक प्रकार से देश की पूरी नौकरशाही पंगु बन कर रह गई है, जहां किसी प्रकार की नीति निर्धारण नहीं हो पा रही है, जहां किसी प्रकार कार्य सही तरीके से सम्पन्न नहीं हो पा रहे हैं, जहां यह पता ही नहीं चल रहा है, कि वह देश किस उद्देश्य को लेकर, किस लक्ष्य को लेकर आगे बढ़ रहा है, इसकी मंजिल क्या है? इसका मकसद क्या है? यह कहां बढ़ेगा? कहां पहुंचेगा?

मैं यह नहीं कह रहा हूं, कि यह उचित है या अनुचित है, यह तो राजनीतिज्ञों की बात है, कि वह किस प्रकार का शासन करना चाहते हैं। किन्तु आप कल्पना करें, कि हर पन्थ ह दिन बाद देश का प्रधानमंत्री बदल जायेगा तो इस देश का क्या होगा? छः महीने तक किसी का शासन हो और एक समझौता हो रहा है, कि छः महीने तक एक व्यक्ति का शासन हो और छः महीने तक किसी और का इस प्रकार के समझौते इस देश में ही सम्भव है। यह इस देश में ही सम्भव है, कि बिलकुल अलग-अलग विचारधाराओं वाले लोग मिल कर एक शासन को चला रहे हैं।

जहां नीति नहीं है, जहां पर किसी प्रकार का उद्देश्य नहीं है, जहां पर किसी प्रकार का लक्ष्य नहीं है। केवल लक्ष्य यह है, कि कुर्सी प्राप्त होनी चाहिए और कुर्सी के लिए कुछ भी करने को अपने जीवन के मूल्यों को समाप्त करने को तैयार हैं और जब जीवन के मूल्य समाप्त हो जाते हैं तब उस जीवन का, उस व्यक्तित्व का अधःपतन प्रारम्भ हो जाता है। जहां जीवन का मूल्य समाप्त हो जाता है, वहां देश अपने आप में दिग्भ्रमित हो कर भटक जाता है।

मैं यह भी जानता हूं, कि सब के पास अपनी-अपनी विचारधाराएँ हैं और एजनीति का पूरा ज्ञान है। मैं यह भी जानता हूं, कि उन सबकी विचारधाराएँ, उन सबका चिंतन

कृतीतिनि पारिपक्व ना है, जिनके राजनीति में उन्हें भी चिह्न है, अब वह कि जहाँ अव्यक्ति कुसंग गया, कि उल्लिखित कुमोदि दे। अब महत्वपूर्ण उनकी कुप्रदामन पर नहीं पाएंगे।

संघर्ष में वह है, कि अपनी जा रही गतिशील नहीं है, कोहे है जहाँ तरफ चला रहे नाजुक से है, जिननी और मैं बिना

और व्यक्ति चल रहा जनता प्रभाव इस स्थान समझने वहे जाता है बन कर नहीं चला भली है, और वह होगी, तो

अलग-अलग है, यह भी जनता हूँ, कि उन सब में एक ही लक्ष्य है, जो समान है, वह किसी भी प्रकार से प्रधानमंत्री की कुर्सी प्राप्त कर लेना है।

पिछले आठ-दस सालों में कुछ ऐसी प्रक्रिया प्रारम्भ हो गई है, कि अनजान से अनजान व्यक्ति भी प्रधानमंत्री के पद को प्राप्त कर लेता है।

जिसका हमने कभी नाम भी नहीं सुना वह भी प्रधानमंत्री के पद को सुशोभित कर लेता है। जबाहरलाल से ले कर आज तक नैतिकता थी, राजनीतिक होते हुए भी उनमें एक मर्यादा थी, राजनीति के प्रति सम्मान था, लोगों में राजनीतिज्ञों के प्रति एक सम्मान था, लोगों को राजनीतिज्ञों के प्रति भरोसा था, उनके प्रति अपने आप को समर्पित करने को बेचेन थे, तैयार थे।

आज ऐसा नहीं है, आज जनता का भरोसा उठ गया है, आज जनता को किसी भंती पर भरोसा नहीं रहा। किसी कर्णधार पर भी भरोसा नहीं रहा। आज नौकरशाहों में भी एक डर व्याप्त है, चाहे वह आई.ए.एस. अफसर हो, सेक्रेटरी हो चाहे कोई भी हो, कि मैं इस कुर्सी पर कितने समय तक बैठ सकता हूँ या अपने कार्य को कार्यान्वित कर सकूँगा; यह स्पष्ट नहीं है और जब स्पष्ट नहीं है तो वह रुचि नहीं ले पाता, क्योंकि यहाँ थोक के भाव आई.ए.एस. आइ.पी.एस. अफसर के स्थानान्तरण हो जाते हैं। जो दूसरा शासक आता है चार या छँ: महीने बाद वह सारे प्रशासन को बापस बदल देता है। ज्योंहि वह उस कार्य करने को तैयार होता है, कार्य प्रारम्भ करता है तो शासक उसके कार्यक्षेत्र को परिवर्तित कर देते हैं और नये परिवेश में, नये चिन्तन में, एक नये कार्यविधि में झोक देते हैं, ऐसी स्थिति में कोई भी आई.ए.एस. अफसर या सेक्रेटरी कैसे काम कर सकता है?

कुल भिलाकर मेरे कहने का तात्पर्य यह है, कि देश चल तो रहा है भगव दिशा शून्य हो कर, नौकरशाही काम तो कर रही है, भगव दिग्भ्रमित हो कर। जनता का एक मात्र भरोसा न्यायपालिका रह गई है। जब व्यक्ति सब तरफ से हार जाता है, तब उसकी एक नजर न्यायपालिका पर टिकती है, जहाँ उन्हें भरोसा है, जहाँ उन्हें विश्वास है, कि यहाँ से मुझे न्याय मिलेगा। अब सुन रहे हैं, कि उस न्यायपालिका पर भी अंकुश लगाया जा रहा है। न्यायपालिका के अधिकारों पर

मैंने आज से दो साल पहले, दो दूरक शब्दों में कहा था, कि आने वाला समय इस देश के लिए दुष्कृतिय पूर्ण होगा, अब्दलारम्य होगा, दिशा शून्य होगा, सुनहरी धूप तो होगी मगर धूप में आखें चकावाँथ होगी, चाढ़नी तो होगी मगर उसमें शीतलता का अभाव रहेगा। यहाँ प्रजातंत्र तो होगा मगर उसके साथ मखौल उड़ाया जायगा। यहाँ मंत्री तो होंगे, मगर, जिनके पास किसी प्रकार का अनुभव, किसी प्रकार का ज्ञान, कोई चिंतन कोई विचारधारा नहीं होगी। केवल वह चिंतन है, कि यह देश मेरी बर्पीती है, मैं इसका मालिक हूँ, मैं जो कुछ भी चाहूँ वह कर सकता हूँ आज ऐसा हो रहा है।

सुनहरी धूप में भी आखें चकावाँथ होंगी, चाढ़नी तो होगी मगर उसमें शीतलता का अभाव रहेगा। यहाँ प्रजातंत्र तो होगा मगर उसके साथ मखौल उड़ाया जायगा। यहाँ मंत्री तो होंगे, मगर, जिनके पास किसी प्रकार का अनुभव, किसी प्रकार का ज्ञान, कोई चिंतन कोई विचारधारा नहीं होगी। केवल वह चिंतन है, कि यह देश मेरी बर्पीती है, मैं इसका मालिक हूँ, मैं जो कुछ भी चाहूँ वह कर सकता हूँ आज ऐसा हो रहा है।

जो दो साल पहले मैंने कहा था वह आज अक्षरशः सही उत्तर रहा है। मैं अपने आप को बहुत बढ़ा ज्योतिषी नहीं मानता, मगर जो भी मुझे ज्योतिष का ज्ञान है, उसके आधार पर अनुभव कर रहा हूँ, कि इस प्रकार की क्रिया इस देश के लिये बातक है, क्योंकि किसी भी समय दूसरा देश हमारी कमज़ोरी को भांप कर हमें नगाढ़ा कर सकता है, मटियामेट कर सकता है, तोड़ सकता है, ममाज कर सकता है।

और समय बीतने के बाद पछाने के अलावा कुछ रह नहीं पाता। अब ऐसा समय बहुत जल्दी आ सकता है, क्योंकि प्रत्येक की भूखी निगाहें इस धन, धान्य पूर्ण भारत पर टिकी हुई हैं। आसपास के देश भूखे भैंडियों की तरह झपटने के लिए तैयार हैं। वे नहीं से नहीं मिसाइलें बन रहे हैं, नये से नये शास्त्र खरीद रहे हैं और आसपास के लोगों को तैयार कर रहे हैं, जिससे कि यह भारतवर्ष औना रह जाय। इसका कद उंचा न उठे।

ऐसी स्थिति में, जब चारों तरफ एक आपाधारी, एक लड़ाई-झगड़ा, एक मतभेद, एक तनाव, एक स्वार्थ है और इस देश को बरबाद करने के लिए तुले हुए व्यक्ति हैं, तुले हुए देश हैं, तो कब तक यह देश अपने आपको सुरक्षित रख पाएगा? देश सुरक्षित रह पाता है मजबूत केंद्रीय सत्ता से, देश मजबूत रह सकता है अनुभवी राजनीतिज्ञों से, देश मजबूत रह सकता है दूरदर्शी राजनीतिज्ञों से। और हमारे पास, दूरदर्शी राजनीतिज्ञ हैं,

कूटनीतिज हैं, अनुभवी हैं, परिपक्व भस्त्रिक वाले व्यक्तिन् हैं, जिनका पूरा जीवन इस राजनीति में बोला है, परन्तु अब उन्हें भी चिंता अपनी कुर्सी की है, अब वह जमाना चला गया, कि जहाँ अपने आदर्श के लिये व्यक्ति कुर्सी छोड़ दे।

अब वह जमाना चला गया, कि अपनी विचारधारा के लिए कुर्सी का परिवाग कर दे। अब इस समय आदर्श महत्वपूर्ण नहीं रह गया, अपितु

उनकी कुर्सी महत्वपूर्ण हो गई है। और ऐसी स्थिति में उनके दामन पर जो धब्बे लग रहे हैं, जो दाग लग रहे हैं, वे खुद भी नहीं पाएंगे, आगे बाली घोड़ी डाया नहीं थों पाएंगे।

यह संघर्ष व्यक्तित्व का और कुर्सी का हो गया है, इस संघर्ष में दोनों में से कोई एक जीतता है और युग ऐसा आ गया है, कि अपनी कुर्सी को बचाने के लिए उन आदर्शों को तिलांजली दी जा रही है। व्यक्ति एक अजीब सी मनस्थिति में देश गतिशील हो रहा है। जिसका कोई रास्ता नहीं है, कोई मार्गदर्शक नहीं है, कोई राजपथ नहीं है, कोई पगड़ी नहीं है। यह देश ऐसा है जहाँ तेरह अलग-अलग विचारों वाले व्यक्तित्व इस देश को चला रहे हैं ऐसा संसार में कहीं नहीं हो रहा है। यहाँ पर रक्षा और नायुक संबंदनशील भाषणों के लिए ज्ञाना व्यक्तिकृत वित्तन नहीं है, जितनी कि इस ज्ञान की चिंता है, कि प्रदेश में व्या हो रहा है और मैं किस प्रकार से उस प्रदेश की बांधोर अपने हाथ में लूँ।

एक चिन्तन ऐसा चल रहा है, कि छः महीने कोई और व्यक्ति शासन करेगा, छः महीने कोई और करेगा। ऐसा चल रहा है, कि छः महीने में थोक के भाव स्थानान्तरण में आम जनता प्रभावित हो रही है, प्रशासन प्रभावित हो रहा है, और इस स्थानान्तरण के चलते ज्यों वे नये स्थान पर जा कर काम समझने की कोशिश करते हैं तब तक उसका वापिस स्थानान्तरण हो जाता है। इस प्रकार से नैकरक्षाही एक पंगु और असाहसी तंत्र अन कर रह गई है।

मैं जानता हूँ कि ऐसी स्थिति बहुत समय तक नहीं चल पाती, एक घर में भी नहीं चल पाती। एक घर में एक पिता है, और बाकी घर में दस लोग हैं, दस लोगों की राय अलग-अलग होती, तो वह कुनबा टूट जाएगा, वह परिवार बिखर जाएगा,

यह संघर्ष, व्यक्तित्व का

और कुर्सी का हो गया

है। इस संघर्ष में दोनों में

से कोई एक जीतता है

कि अपनी कुर्सी को बचाने

के लिए आदर्शों की

तिलांजली दी जा रही है।



उसमें भी उस शीर्षस्थ व्यक्ति के, उस पिता की बात को सब मानने के लिए वाद्य होते हैं, तब वह देश, वह घर सही ढंग से गतिशील होता है घर के लिए भी एक शीर्षस्थ व्यक्ति की आज्ञा की सर्वोपरिता जरूरी है, तो इस देश में भी शीर्षस्थ व्यक्ति की, उसकी आज्ञा की सर्वोपरिता जरूरी है भगव यहाँ का शीर्षस्थ व्यक्ति बिलकुल असहाय पंगु सा अनुभव कर रहा है। वह अपनी उन्नायल छावि पर दाग लगाता

जा रहा है। उसके सारे जीवन की जो पवित्रता है, जो दिव्यता है, जो तेजस्वित है, जो उसका एक चिन्तन है, जो उसकी विचारधारा है, जहाँ उसका कद अपने आप में आसमान से भी ऊंचा उठ रहा है, उसके उपर कीचड़ उत्थाला जा रहा है और वह बिना धोए उस कीचड़ को, आगे बढ़ा जा रहा है क्योंकि यह उसकी विवशता है, यह उसकी मजबूरी है।

पर व्या उसकी मजबूरी यह है, कि वह हमने वर्षों की सप्तस्या की बलि दें दें? व्या वह सही है, कि इस देश को उसने जो इतना कुछ दिया है कूटनीति और राजनीति में क्या उस पर जो कुत्याराधात हो रहा है वह देख ले और सहन कर ले? तो इतिहास कब उसको क्षमा कर पाएगा? इतिहास कब उस बात को कह पाएगा, कि उस समय भी वह सही था। यहाँ के लोगों ने, यहाँ के राजनीतिज्ञों ने त्याग किए हैं, बलिदान किए हैं। एक छोटी सी रेल दुर्घटना पर इस्तीफे दिए हैं। एक छोटी सी दुर्घटना को अपने ऊपर लिया है। परन्तु आज ऐसा कुछ नहीं हो रहा है। आज ऐसा सोचा ही नहीं जा रहा है। आज तो केवल यह सोचा जा रहा है, कि कुर्सी सर्वोपरि है — जीवन से भी, प्राणों से भी, हृदय के स्पन्दन से भी।

मैं तो एक ज्योतिषज्ञ की तरह ज्ञात कर रहा हूँ, क्योंकि मुझे ज्योतिष का थोड़ा बहुत ज्ञान है, और ज्योतिष किसी भी देश की एक दृष्टि होती है, आंखें होती हैं जिसके परिप्रेक्ष में देश आगे बढ़ता है। ज्योतिष सचेत करता है, सावधान करता है, कि आने वाला समय ऐसा है, यह राजनीतिज्ञों का काम है, कि उसको देख करके उसके अनुसार अपने आप को परिवर्तित करे। जब कार की हेडलाइट को बुझा दिया जाता है तो कार खड़े में किसी भी समय गिर सकती है।

जैर हम उस हेडलाइट को बुझाने के लिए कृत संकल्प हैं। हमने उसकी अवहेलना कर दी है। हम अंधेरे में गाढ़ी चलाते जा रहे हैं, किसी समय यह गाढ़ी थेकर खा सकती है, उलट सकती है, आग लग सकती है।

इस समय सभी पार्टीयों की जन्मकृष्णदली मेरे सामने बिखरी हुई पड़ी है और मैं उसका अवलोकन कर रहा हूं, देख रहा हूं, कि इसमें से कोई भी ऐसी पार्टी नहीं है जो अकेले अपने दम-खुम पर शासन सत्ता संभाल सके। यह भी देख रहा हूं, कि किसी एक पार्टी में इतनी ताकत, इतनी धमता नहीं है, कि वह इस देश की बागडोर अपने हाथ में लेकर के आगे बढ़ सके। क्योंकि ऐसी ही ग्रह स्थिति उन पार्टीयों की है, जो मैं अनुभव कर रहा हूं। मैं यह भी देख रहा हूं, कि आज का प्रत्येक व्यक्ति बड़े से बड़ा, छोटे से छोटा, राजनीतिज्ञ, प्रधानमंत्री और ग्राम का एक छोटा सा ग्रामीण इस बात को चाहता है, कि परिवर्तन हो तथा सही ढंग से परिवर्तन हो।

अब किसी एक विचारधारा की हक्का इस देश में बहे। वह विचारधारा सही है या गलत है, वह अलग निर्णय है। अगर उसकी विचारधारा सही नहीं है तो दूसरी विचारधारा बाले शासन को इस देश में लाने के लिए हमारा देश तैयार है, मगर जहाँ तरह की विचारधारायें होंगी वह किस धारणा को लेकर कर गतिशील होगा, आगे बढ़ेगा? यहाँ पर कोई व्यक्ति समझ नहीं पाता। यहाँ पर कोई व्यक्ति देख नहीं पाता। सब असहाय हाथ मलाते हुए खड़े हैं।

और इस प्रकार से यह देश धीरे-धीरे कमज़ोर होता जा रहा है। इसकी जड़ें कुतरी जा रही हैं। यह दूसरे देशों के सामने माझोंल का विषय बनता जा रहा है। आसपास के देश आंखें दिखा करके हीआ बनते जा रहे हैं, उसकी पीठ ही थपथपाई जा रही हैं और हम इतने कमज़ोर और कायर हैं, कि उस आक्रमक की पीठ थपथपाने बाले की भी प्रशंसा किए जा रहे हैं।

यह राजनीति है और राजनीति में व व्यार में सब कुछ जायज है। वे जो कुछ भी कर रहे होंगे, सोच समझ कर रहे होंगे। मगर देश के लिए अनुकूल नहीं है यह बात भी ज्योतिष दो दृक् शब्दों में कह रहा है। क्योंकि राजनीति के दो मुख्य ग्रह हैं शनि और राहु। शनि जनता का प्रतिनिधि है राहु शासन का प्रतिनिधि है और दोनों इस समय कमज़ोर हैं। दोनों अपने निम्न भावों में गतिशील हैं। दोनों एक तरह से असहाय हैं इसलिए देश असहाय है। यह नहीं देखा जाता, कि राहु कहाँ पर है किस राशि पर है, या शनि किस राशि पर हैं। यह देखा जाता

इन्हीं लोकों जैसा हैं जग्यातीहीं चुनाव होनेव
पिर त्रिशंकु सरकार बनेगी, किसी एक
पार्टी का बहुमत नहीं होना और
पिर डसी प्रकार से देश लेनेवे का
लोकां ओढ़ कर आओ बढ़ेजा और उन
जग्यातीहीं चुनाव कम तो ज देश पर पड़ेगा।
और उसके बाद भी ऐसी ही त्रिशंकु
सरकार बनेगी, जो देश को लहूखड़ाते
हुए आओ लेती हुई चलेगी।

है, कि इनकी अन्तर्चेतना कहाँ पर है।

दो व्यक्ति, दो व्यापारी, दो पार्टीनर ऊपर से भाई-चारे से मिलते हुए दिखाई दें सकते हैं, उनकी अन्तर्चेतना अन्तर्विचारधारा अलग-अलग हो सकती है और अन्दर की जो अन्तर्विचारधारा है, अगर वह अलग-अलग है तो वह पार्टीरशिष्य ज्यादा दिन नहीं चल सकती। यहाँ पर दोनों ग्रह सौम्य हैं, सही तरह से गतिशील हैं, मगर इन प्रहों की जो अन्तर्चेतना है, गर्भस्थ चेतना है वह अपने आप में विपरीत है, मगर इस बात को कह रही है, कि आने वाला समय इस देश के लिए बहुत ज्यादा अनुकूल नहीं है।

और एक बार फिर इस देश को, इसकी गरीब जनता की मध्यावधि चुनाव का सामना करना पड़ेगा और उस बोझ को उठाना पड़ेगा, कि जहाँ वह दो रोटी खा रही है, वहाँ यह राज, यह इलेक्शन यह चुनाव उसकी डेढ़ रोटी छीन करके और उसको आधी रोटी खाने को मजबूर कर देगा, क्योंकि आज का चुनाव बहुत महंगा हो गया है। आज यह चुनाव बड़ा कष्ट साध्य हो गया है, आज यह चुनाव पूरे विश्व में वैमनस्य को फैलाने वाला बन गए हैं।

आज का चुनाव अपने आप में भाईचारा न हो कर शान्ति का परिचायक हो गया है। मगर उसके बावजूद भी इन्हीं सब के मध्य में मध्यावधि चुनाव होंगे, फिर त्रिशंकु सरकार बनेगी, किसी एक पार्टी का बहुमत नहीं होगा और फिर इसी प्रकार से देश अंधेरे का लबादा ओढ़ कर आगे बढ़ेगा। मध्यावधि चुनाव होंगे और उस मध्यावधि चुनाव का बोझ देश पर पड़ेगा और उसके बाद भी ऐसी ही त्रिशंकु सरकार बनेगी, जो देश को, लहूखड़ाते हुए, आगे लेती हुई चलेगी।



COLLECTION OF VARIOUS

- > HINDUISM SCRIPTURES
- > HINDU COMICS
- > AYURVEDA
- > MAGZINES

FIND ALL AT [HTTPS://DSC.GG/DHARMA](https://dsc.gg/dharma)

Made with
By

Avinash/Shashi

Icreator of
hinduism
server

